उसे तो
संसार में
जीवित होना
चाहिए था!

आप इसे
संभव बना सकते थे...

अरविंदभाई पारख ● **राजेंद्रभाई जोशी**

विनियोग परिवार, मुंबई

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी भारतमाता
अक्तूबर २००८

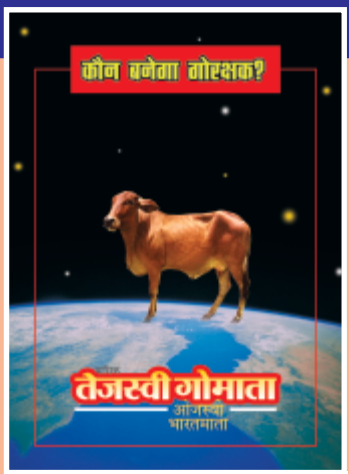

गोहत्या
बंदी को
समर्पित
मासिक पत्रिका

विषय–सूची

भारत नवनिर्माण मिशन	/६
कर चले हम फ़िदा जानो तन साथियों	/७
आशीर्वाद	/८
मैं वचन देता हूं	/१८
गाय हमारे धर्म और संस्कृति की प्रतीक है	/२०
कौन बनेगा गोरक्षक ?	/२२
प्रार्थना	/२५
भारत २०२०	/२६
धरती पर बसे हर मनुष्य की आवश्यकता	/२८
पैसा बड़ा या आस्था ?	/२९
देश के हर नागरिक का कर्तव्य	/३०
Hidden Animal Ingredients in Food, Cosmetics and pharmaceuticals	/35
दारूल–उलूम, देवबंद को पत्र	/४१
मानव को कुरान का संदेश	/४३
कुरान में चार 'हराम'	/४४
मांस निर्यातक कत्लखाने, हमारी बर्बादी के कारण	/४७
भारतीय गोवंश खतरे में	/५१
भारत में गोरक्षा की अनिवार्यता	/५२
'गाय हमारी माता है – गौ हत्या मातृ हत्या है'	/५४
गौ–हत्या : फूट डालो और राज करो	/५७
कहीं हम चर्बी तो नहीं खा रहे ?	/५८
कई मुस्लिम शासक भी गौरक्षक रहे हैं	/६०
क्या इस आदमी को आप जानते हैं ?	/६२
गोरक्षा और लादेन	/६३
भ्रष्टाचार – देश का कैंसर	/६४
विश्व का सबसे बड़ा घोटाला	/६६
मेरा निवेदन (आर. सी. बाफना)	/६७
इनामी प्रतियोगिता	/६८
मार्गदर्शक समिति	/७०
सलाहकार समिति	/७३
संरक्षक सदस्य	/७५
आप किस समाज से संबंध रखते हैं ?	/८०

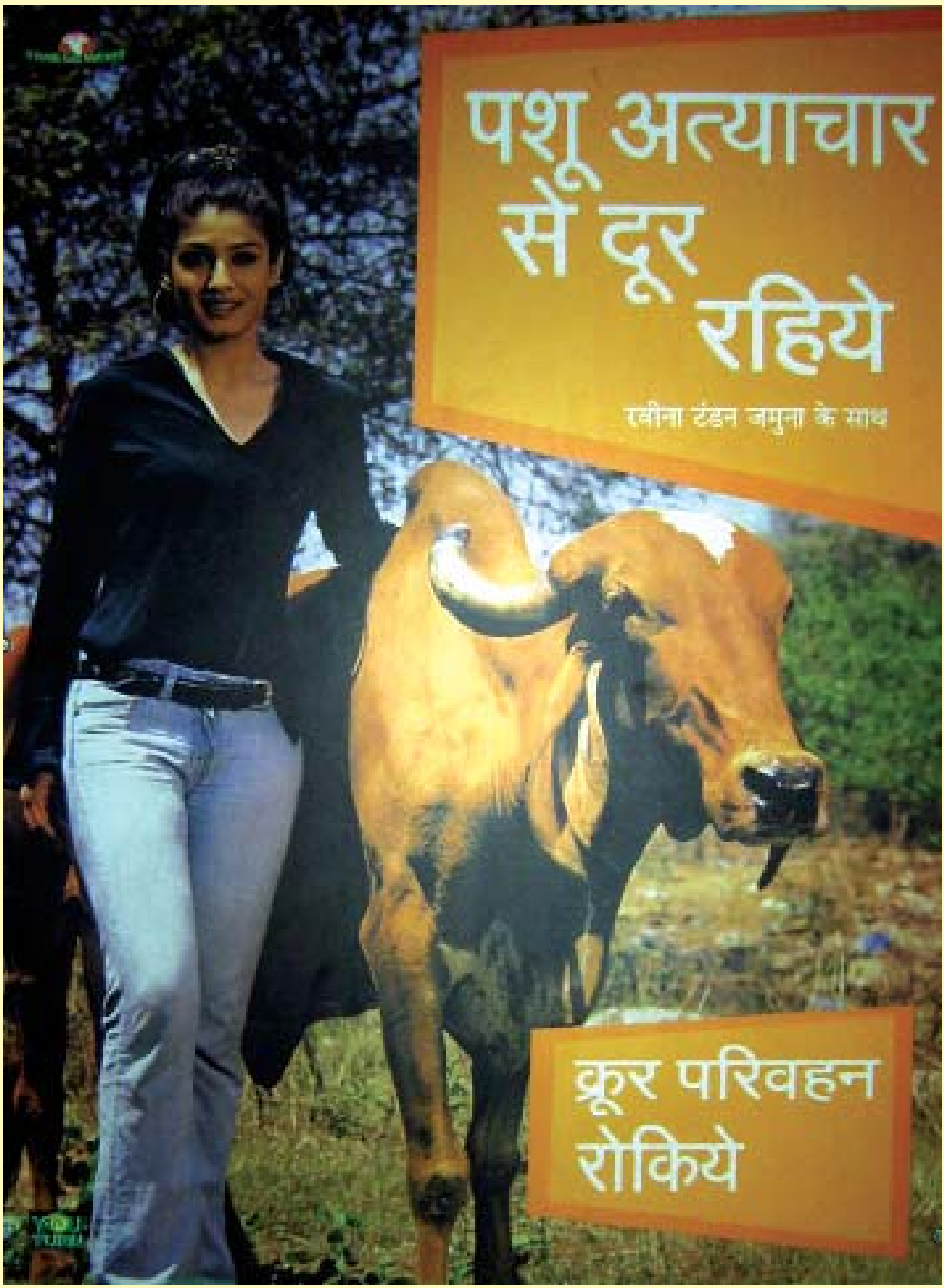

सौजन्य : **धीरज कोठारी एवं महावीर इंटरनेशनल,** मुंबई.

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी
भारतमाता

दशहरा विशेषांक : अक्तूबर २००८
वर्ष –२ अंक – ४

प्रबंधक संरक्षक
जगद्गुरु शंकराचार्य
श्री श्री राघेश्वराभारती स्वामी

सहयोग
एम. के. जनार्दन, मुंबई
आनंद राठी, मुंबई
आर. एस. गोईंका, कोलकाता

संपादक :
मो. यूनुसोद्दीन फारुखी परभणीकर

मुद्रक :
सुनिता रमेश टाक
सुनिता प्रिंटिंग प्रेस, नांदेड़

पंजीकृत कार्यालयः
२४४/३१, लेबर कॉलोनी, नांदेड़ – ४३१ ६०२
फोन : (०२४६२) २५०१२३
मो. ०९४२३१३९१५२
E - mail : younusfarooqui@yahoo.com
tejaswigomata@yahoo.com

सहयोग राशि : ७५ रु.

Typesetting & Designing by :
SRUJAN COMMUNICATIONS, NANDED.
PH. (02462) 239843, (Mo). 09422170623

पत्रिका में प्रकाशित विचारों से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायालय का क्षेत्र नांदेड़ रहेगा।

संपादकीय

किसी समय गाय हमारी समृद्धि का मूल आधार थी. भारत की संस्कृति में कृषि व गौ पालन का अति उत्तम स्थान था. हर घर में गाय हुआ करती थी. लाखों, करोड़ों गांव वाले इस देश में दूध–दही बेचा नहीं जाता था, मुफ्त में बांट दिया जाता था. गोमाता के लिए भोजन से पहले गौ–ग्रास निकालना धर्म का अंग था.

भारत विश्व का एकमात्र सर्वधर्म संप्रदाय देश है, जिसे ऋषि–कृषि प्रधान देश कहलाने का गौरव प्राप्त है. विभिन्न देवी–देवताओं, संतों, ऋषि–मुनियों के इस देश में आज सबसे बुरी दशा गाय, गोवंश तथा मूक प्रणियों की है.

देश में जब चाहे इन मासूम प्राणियों का गला काट दिया जाता है. बेजुबान प्राणियों को केवल मुंह के स्वाद के लिए ही नहीं काटा जा रहा, बल्कि उसके शरीर के एक–एक अंग को बेचकर पैसा कमाया जा रहा है. ऐसा करने वाले लोग रुपए के बल पर जिम्मेदार अधिकारियों और नेताओं को अपनी जेब में रखते हैं. धर्म, भगवान, संत, महंत और देश का संविधान इजाजत नहीं देता कि इन प्राणियों का इस तरह बेरहमी से वध किया जाए.

मैं अपने तेरह वर्षों के अध्ययन में इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि गो–हत्या, गोवंश हत्या, कामधेनु, दूध के सूत्र और मासूम जीवों की हत्या को पूरी तरह से बंद किया जा सकता है. जरूरत है जन–जन तक जागृति लाने की, संगठित होने की.

गो–हत्या रोकने की जिम्मेदारी न सिर्फ हिंदू और मुस्लिमों की, बल्कि संपूर्ण भारतवासियों की भी है. देश का हिंदू, मुस्लिम हो या अन्य धर्म का अनुयायी क्या वह भारत माता की वायु, जल, अन्न–धान्य का उपयोग नहीं करता ?

मैं इस्लाम का अनुयायी हूं. मैं अपने देश में इस तरह गायों व अन्य प्राणियों को असहाय रूप से मरते नहीं देख सकता. तेरह वर्ष पहले मैं अकेले चला था. आज मेरे साथ भारत भर के गोरक्षक, वैज्ञानिक और मित्र हैं. मैं सभी को साथ लेकर गो हत्यारों के खिलाफ इस मासिक पत्रिका के माध्यम से 'जेहाद' करना चाहता हूं.

सभी धर्म प्रेमियों, देश प्रेमियों और अहिंसा प्रेमियों से आह्वान करता हूं कि आप इस पुण्य कार्य में हमारा साथ दें. हमारा संकल्प वर्ष २०२० तक देश से गो–हत्या का कलंक मिटाना है.

म. यू. फारोखी

वीर मोहम्मद यूनुसोद्दीन फारुखी

मासिक

तेजस्वी गोमाता

ओजस्वी भारतमाता

भारत नवनिर्माण मिशन

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तद्भारत नाम भारती यत्र सन्तति :।।

समुद्र के उत्तर और हिमालय पर्वत के दक्षिण में जो देश है उसका नाम भारत है जहां (निवास करने वाली) संतति भारती कहलाती है.

ऐसा शक्तिशाली और समृद्ध भारत जिसकी नींव गाय हो, अहिंसा हो, प्रेम हो.

भारत वर्ष सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था, लेकिन गो महाविज्ञान के अभाव में भारत में गोवंश की स्थिति दयनीय हो रही है. भारत में भारतीय गोवंश के संपूर्ण विकास करने पर भारत सोने की चिड़िया बन जाएगा.

कर चले हम फ़िदा जानो तन साथियों अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों

आज़ादी के इस महानायक 'मंगल पांडे' ने २९ मार्च १८५७ में अंग्रेजों के खिलाफ बिगुल बजाया. इन्होंने कहा था कि हम गोमाता के भक्त चर्बी लगे अपवित्र कारतूसों को छूकर अपना धर्म भ्रष्ट कदापि नहीं करेंगे. दो अफसरों को गोली मारी. ८ अप्रैल १८५७ को फांसी पर लटकाए गए. गोमाता के लिए इनकी पहली आहुति से सारे सिपाहियों में जागृति आई. नतीजा देश की आजादी की लड़ाई के रूप दिखाई पड़ा. झांसी की रानी, बहादुरशाह जफर, राजा-प्रजा सभी ने अपना योगदान दिया.

आशीर्वाद

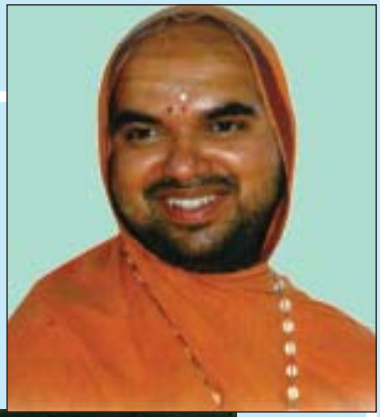

Jagadguru Shankaracharya Mahasamsthanam, Shree Samsthana Gokarna

Shree Ramachandrapura Math

गौ जीवलोक की अत्यंत श्रेष्ठ प्राणी है. गौ के शरीर से बाहर आनेवाले सभी पदार्थों का मानव जाति उपयोग करता है, यह गौ की विशेषता है. मत, धर्म, वर्ण, भेद रहित होकर सभी इस गौ से उपकृत होते रहते हैं.

शुद्ध भारतीय गौ का संरक्षण आजकल आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है. उसके संरक्षण तथा जनजागृति के विषय में पत्रिका जैसा उपयुक्त संवाहक दूसरा नहीं है.

आपका गौ संबंधी मासिक पत्रिका (तेजस्वी गौ माता–ओजस्वी भारतमाता) का प्रकटन करना, प्रशंसनीय विचार है. आपकी पत्रिका यश के पथ में पदार्पण करे. श्री कराचित देवानुग्रह से गौ–संरक्षण की सिद्धि जल्दी प्राप्त हो जाए.

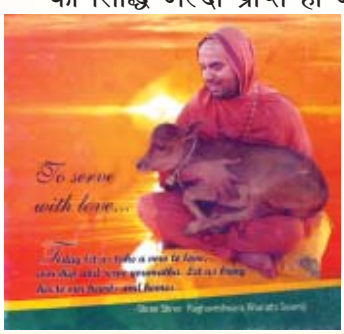

श्री श्री राघेश्वरा भारती स्वामी

Post Haniya, Tq. Hosanagara, Dist. Shimoga, Karnataka - 577 418
Ph. : 08185 - 2560170 Telefax : 256 050 Cell : 9449595221 E-mail : info@ramachandrapuramatha.org, URL : www.ramachandrapuramatha.org

आशीर्वाद

॥ श्री हरिः ॥

धर्म की जय हो
अधर्म का नाश हो

गो माता की जय हो
॥ हर हर महादेव ॥

प्राणियों में सद्भावना हो
विश्व का कल्याण हो

भारत में धर्म, शास्त्रीय मर्यादा तथा परम्परा की संरक्षक संस्था

अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ

अनन्तश्री ब्रह्मलीन धर्मसम्राट्
स्वामी श्री करपात्रीजी महाराज
द्वारा संस्थापित

स्थायी अध्यक्ष :
ज्योतिष्पीठाधीश्वर परमपूज्य जगद्गुरु
शंकराचार्य अनन्तश्री विभूषित
स्वामी माधवाश्रमजी महाराज
बदरिकाश्रम (हिमालय)

केन्द्रीय कार्यालय :
7, शंकराचार्य मार्ग, सिविल लाइंस
दिल्ली-110 054
दूरभाष : 23914579

पत्रांक A/306

दिनांक 14/03/08

स्नेहिश्री
मोहम्मद यूनुसुद्दीन फारस्वी
जय गोमाता

आपके द्वारा 'तेजस्वी गोमाता, ओजस्वी भारत माता' नामक पत्रिका प्रकाशित हो रही है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि उक्त पत्रिका के माध्यम से गोवंश की रक्षा में और देश प्रेम की शिक्षा में बहुत सहयोग मिलेगा।

यही हमारी मंगल कामना है।

आशीर्वादानुसार ज. गु. शंकराचार्य
स्वामी आत्मानन्दाश्रम जी महाराज

शुभेच्छु
विद्या भूषण शर्मा
(कार्यालय सचिव)

आशीर्वाद

☎ : 044-27222115
Fax: 27224305
Email: skmkanci@md3.vsnl.net.in

Sri Chandramouleeswaraya Namaha:
Sri Sankara Bhaghavadpadacharya Paramparagatha Moolamnaya Sarvagnapeeta :

His Holiness Sri Kanchi Kamakoti Peetadhipathi

JAGADGURU SRI SANKARACHARYA SWAMIGAL

Srimatam Samsthanam

No. 1, Salai Street, KANCHIPURAM - 631 502.

Date : 3-1-2007

रक्षणाय च गोमातुः दीक्षिताः हितकाङ्क्षिणः।
चन्द्रचूडकृपापुञ्जात् जीवन्तां शरदः शतम्।।

निखिलदेवानामावासभूमित्वेन ख्याता सर्वैः सादरं माता इति व्यवहियमाणा च गोमाता सकलजनानपि पोषयति। गोः जायमानं सर्वमपि मानवलोकस्य उपकाराय तथा परेवित्रीकरणाय उपयुज्यते। एवं सर्वाङ्गपावनेयं गोमाता न केवलं यागादिषु, अपि तु सामान्यलौकिककर्मस्वपि स्वीयामुपादेयतां कल्पयन्ती सर्वजनरक्षणी वरीवर्ति। गोरसं विना को रसो मनुष्याणामिति प्रथापि तेनैव जाता। तादृश्याः गोमातुः रक्षणं पोषणञ्च सर्वैः करणीयमित्यत्र न कश्चित्सन्देहः। लक्ष्यमेतत् मनसि व्यातन्वानाः तोजस्वी गोमाता ओजस्वी भारतमातेति संस्थायाः कार्यकर्तारः तदर्थं मासिकामेकां तन्वन्तीति ज्ञात्वा मोमुद्यते चेतो नः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यम्बासमेतश्रीचन्द्रमौलीश्वरकृपया इयं पत्रिका स्वाभीष्टं प्राप्य उत्तरोत्तराभिवृद्धिं यात्विति अस्याः कार्यकर्तारश्च भगवत्कटाक्षभाजो भवन्त्विति चाशास्महे।।

।।नारायणस्मृतिः।।

To

Shri.M.Y.F.Parbhanikar,
Editor,
Tejasvi Gomata and Ojasvi Bharatamata,
244/31, Labour Colony,
Nended - 431602

ஸ்ரீ மஹாஸ்வாமிகளின் பீடாரோஹண விழா 2006–2007

आशीर्वाद

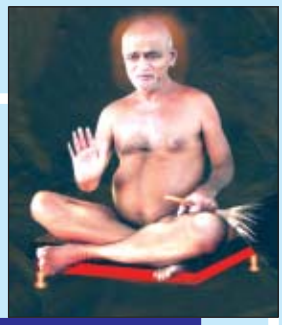

1 'अहिंसा परमो धर्मायनमोनमः'

18.10.06
ललितपुर

भारतीय गौवंश व पर्यावरण संरक्षण परिषद नांदेड के संस्थापक सचिव श्री फाकरवीजी, प्रस्तावित मासिक पत्रिका तेजस्वी गोमाता, ओजस्वी भारतमाता के उत्साही गोरक्षक संपादक श्री वीर. एम. वाई एफ तरभणीकर तथा समस्त अहिंसा प्रेमी भाई बहनोंको अहिंसा सद् धर्म वृद्धि हो ऐसा मंगल शुभाशीर्वाद । तथा इस अहिंसा की रक्षा वृद्धि हेतु आपका तन, मन, धन, वचन और चेतन भी समृद्ध रहे ऐसी प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

फाकरवीजी (परभणीकरजी) भले मैं तन से दूर हूँ पर मन और चेतन से (संप्रेषण की अपेक्षा से) आपके पास हूँ ऐसा समझकर चलिएगा। चिंता न करिएगा। सत्यवादी अहिंसक की परीक्षा होती है पर पास अवश्य होता है। भले देर लग जाय।

पतंग आकाश में उड़ता है पर डोर की छोर हाथ में होने से कहाँ जाएगा वह पतंग? वैसे आप हम कहीं भी रहे पर प्रेम अहिंसा की डोर एक दूसरे के हाथ में होने से चिंता की बात नहीं। फाकरवी जैसे आप भी अनेक अहिंसा प्रेमियों के साथ हमारे अनिश्चितकालीन अनशन आंदोलन के वक्त तैयार होकर मैदान में आते तो और मजा आता रवैर जब जागे तब सबेरा कहावतानुसार आप अभी जी जानें से गोरक्षा हेतु कमर कसकर मैदान में आ रहे हो तेजस्वी गोमाता ओजस्वी भारतमाता मासिक पत्रिका के माध्यम से बडी खुशी की बात है। पर मेरा कहना है पत्रिका बहुत निकलती है। जिम्मेदारी भी बहुत होती है। खर्च भी होता है अतः पैसे एकत्रित करने संपादन कार्य आदि में बहुत

आशीर्वाद

તેજસ્વી ગોમાતા ઓજસ્વી ભારતમાત

જબ હમ કિસી શ્રેષ્ઠ કાર્ય મેં
જુડ જાતે હૈ તો શ્રેષ્ઠતા શીઘ્ર
નહીં મિલતી ઉસકે લીયે
હમે પરિશ્રમ કરના રહેતા હૈ.

સાથ શ્રેષ્ઠતા કી સર્જન કરને
કે લીયે પ્રશિક્ષણ કે પ્રશિક્ષા કા
કાર્ય ચાલુ કર રહે હૈ હમારે
પુરે આશિર્વાદ હૈ.

"સર્વે ભવન્તુ સુખિનઃ"

आशीर्वाद

दूरभाष : ९१-११-२६१०३४६५, २६१७८६६२
फैक्स : ९१-११-२६१६५५२७
तार : हिन्दूधर्म
Phones : 91-11-26103495, 26178992
Fax : 91-11-26195527
E-Mail :vhp@vichaar.net
vhpnews@vichaar.net
jaishriram@vsnl.in
manish@vichaar.net
Gram : 'HINDUDHARMA'

विश्व हिन्दू परिषद ॐ VISHVA HINDU PARISHAD
Registered under Societies Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-११० ०२२ (भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM, RAMAKRISHNA PURAM-VI, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

वि.हि.प./7/2006 07.11.2006

बन्धुवर,

जय श्रीराम।

अपना प्रिय भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि का आधार ही गोवेश है। जिसके संवर्द्धन एवं संरक्षण से भारत माता का विकास निहित है।

आज गौवंश द्वारा इतने प्रकार के उत्पादन होने लगे हैं, जिनसे दूध न देने वाला गौवंश भी रक्षण योग्य है। व्यक्ति एवं समाज के स्वास्थ्य के साथ–साथ भारत माता की भौतिक समृद्धि में भी सहायक हो सकता है।

विश्वास है इन पर समुचित प्रकाश डालने से समाज को प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी।

सफलता की शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

संलग्न–चित्र

अशोक सिंहल
(अशोक सिंहल)
अध्यक्ष

तेजस्वी गोमाता ओजस्वी भारतमाता
244/31 लेबर कालोनी,
नांडेड़ – 431 602 (महा0)

आशीर्वाद

धर्मशिक्षण, हिंदुसंघटन, धर्मद्रोहीविरोधी लढा व ईश्वरी राज्याची स्थापना यांसाठी कटिबद्ध

सनातन संस्था

गुरुकृपायोग

नोंदणी क्र. : १/४/२, फोंडा, गोवा.

मुख्य कार्यालय : 'सनातन आश्रम', सर्व्हे नं. २४/ब, रामनाथी, बांदोडा, फोंडा, गोवा.

क्षात्रधर्म

दू.क्र. : (०८३२) २३१२६६४, फॅक्स : २३१८१०८ email : sanatan@sancharnet.in website : www.sanatan.org

।।श्री ।।

९.११.२००६

चि.एम.बाई.एफ. परभणीकरजी,

स.न.

आपने भारतकी रक्षा, प्रगती एवं सुखशांतीके हेतु गोरक्षाका ध्येय अपनाया है । इस कामनासे आप विश्वभरमें जनजागरण अभियान का आरंभ करानेके लिए 'तेजस्वी गोमाता ओजस्वी भारतमाता' इस नामसे मासिकपत्र प्रकाशित कर रहे है । ये बडी अच्छी बात है । इसी मासिकके लिए आप प.पू. डा. जयंत आठवलेजीसे सुविचार और दिशानिर्देशन पानेकी अभिलाषा रखते है । उनके तरफसे उन्होंने सुझाए दो शब्द लिखता हूं ।

हिंदु धर्ममें गोमाताकी पूजा करते है । गोमातामें ३६ करोड देवताओंका तत्त्व आता है । इसीलिए गोमाताका दूध, मूत्र, गोबर इनमें सात्त्विकता है । इसका लाभ भारतवासीय जानते है । फीर भी उनका उपयोग करके सात्त्विकताका लाभ उठानेका प्रयास अभी लोग नहीं कर रहे है । यह पाश्चात्त्य संस्कृतीके आक्रमणका परिणाम है ।

सनातन संस्था पंचगव्य, गोमूत्र, गोबर इनका प्रयोग दैनंदिन जीवनमें कर रही है और सनातनके साधकोंको उनकी सात्त्विकताका सूक्ष्म परिणाम समझ आता है । सनातन संस्था धर्मजागृती और राष्ट्ररचना इनका कार्य कर रही है और ईश्वरी राज्य लानेकी अभिलाषा रखते है । ईश्वरी राज्यमेंही सत्य रूपमें गोरक्षा हो सकती है । इसका परिणाम अनिष्ट शक्तीयों पर होने के कारण वह साधकोंको तीव्र कष्ट देती है । अनिष्ट शक्तीयोंका असर कम करनेके लिए साधकोंको साधनाके अलावा पंचगव्य, गोमूत्र और गोबर इनका भी उपयोग होता है । साधक शुद्धीके लिए उनका प्रयोग करते है । पानीमें गोमूत्र की बुंदे डालकर उससे स्नान करना, बाहरसे आश्रमके अंदर आनेसे पहले शरीरपर गोमूत्रका छिडकांव कर प्रार्थना करके अनिष्ट शक्तीयोंका परिणाम दूर करना, आश्रमका आंगन गोबरसे लिंपन करना आदी प्रकारसे वे उनका इस्तेमाल करते है ।

मनको दुख देनेवाली बात ये है की, हमारे आश्रमोंके लिए हमें देशी गौवोंकी जरुरत है, क्यों कि वह पवित्र है । बहुत खोज करने पर भी हमें देशी गाय उपलब्ध नही हुई । सब जगह जर्सी गायही उपलब्ध है । भारतभूमीकी सात्त्विकता नष्ट होनेका यह भी एक कारन है ।

इस खतके साथ सनातन संस्थाकी साधिका श्रीमती अंजली गाडगीळके माध्यमसे प्राप्त ईश्वरीय ज्ञानसे मिली गोमाताकी विशेषताओंकी जानकारीभी आपकेलिए भेज रहे है । आप उसे भी हमारा संदर्भ देके छपवा सकते है ।

आपका गोरक्षाका सात्त्विक संकल्प पूर्ण होनेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करते हुए इस खतका पूर्णविराम करता हूं ।

आपका,
श्री. मुकुल माधव गाडगीळ
(प.पू. डॉ. आठवले इनके तरफसे)

आशीर्वाद

करुणा अन्तर्राष्ट्रीय
KARUNA INTERNATIONAL

(A non-profit service Organisation promoting Compassion, Kindness and Values of life in Student Community)

Chairman : **Surendra M.Mehta** Ph: (O) 2815 8152 (R) 2467 3201

Chief Patron : **Bhanwarlal Gothi** Ph: 25296854, 2529 2973

President : **Dulichand jain** Ph: (O) 25231714, (R) 2499 3615

Vice Presidents

Kailashmull Dugar
Ph : 2811 5499 (R), 2467 1764

N. Sugalchand Jain
Ph : 2848 1366 (R) 2854 1537

S. Shantilal Jain
Ph : 4237 1001, Cell : 98410 86635

A.R. Shantilal Nahar
Cell : 98844 17752

M.P.Ajmera I.A.S (Retd.) (East)
Ph : 0651-221 0323 (R) 224 0548

Ratanlal C. Bafna (West)
Ph : 0257-2222629,Cell: 09823076551

Inderchand Dugar (North)
Ph : 0151-2273446/447, 09414141199

Prof. P.M. Gopalakrishna (South)
Ph : 2499 0652

General Secretary

Suresh Kankaria
Ph : 2529 991, 25291799, 94440 24446

Secretaries

Padam Kumar J.Tatia
Ph : 2532 5050, 98408 42148

Dr. Bhadresh Kumar Jain
Cell : 93822 91400, 92831 73329

Treasurer

Mahendra Kumar Jain
Ph: 2522 0032 (R) 2520 2601
Cell : 94440 28522

Joint Treasurer

Manoharlal Dhiran
Ph: 2522 3940, Cell : 94442 24359

National Headquarters :

36,(Old No.70), Sembudoss Street, Chennai - 600 001.
Ph. : 2523 1714, 4206 1663
2522 2044, 2522 7263
Resi : 2499 3615, 2499 0182
Fax : 4216 4242, 4206 1663
Cell : 94440 47263
E-mail : karunainternational@airtelbroadband.in
Website : www.karunaclub.com

04/03/2008

आदरणीय बन्धु श्री विर भो. युगोछीन कोरारजी,

सादर नमस्कार!

यह जानकर खुशी हुई कि आप गौरक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं तथा शीघ्र ही 'तेजस्वी गोमाता, ओजस्वी भारतमाता' पत्रिका प्रकाशित कर रहे हैं। आपकी पत्रिका निश्चित रूप से प्राणी मात्र के प्रति प्रेम और मातृ भूमि के प्रति प्रेम की भावना प्रत्येक भारतवासी के हृदय में जागृत करेगी। कृपया हमारी सदभावना और मंगलकामना स्वीकार करें।

दुलीचन्द जैन,
अध्यक्ष,
करुणा अन्तर्राष्ट्रीय, चेन्नई

आशीर्वाद

।। गौमाता की जय ।।

ट्रस्ट रजि.नं. : ई-२५०, नांदेड.

परम पुज्य संत बाबाजी श्री जगदीशजी महाराज
गौशाला एवं अनुसंधान प्रकल्प, नांदेड.

संरक्षक

"गोवर्धन" ग्राम खडकुत, ता. जि. नांदेड. (महाराष्ट्र). फोन : ३९५९४९, २३७६९६.

संस्थापक

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	सेक्रेटरी
श्री.भास्करराव पाटील खतगांवकर	सौ. अमिताताई अशोकराव चव्हाण	ओमप्रकाश पोकर्णा फोन : २४८९९९	गोविंदप्रसाद शर्मा फोन : २२६२२५

दिनांक : 12/6/2006

श्री फारोखी जी,

सस्नेह नमस्कार,

आपके द्वारा गौ माता और भारत माता के महत्व की जानकारी जन-जन तक पहुंचाने के लिय प्रकाशित की जा रही पत्रका **'तेजस्ती गोमाता-ओजस्वी भारत माता'** के प्रकाशन के साहसी प्रयास के लिए बधाई.

आज कलयुग में जहां लोग मात्र अपने तक ही सीमित रह गए हैं. ऐसे में आप गौ माता एवं भारत माता की सेवा के लिए अपना जीवन लगा दिया. निश्चित ही साहसिक कार्य है जो आपकी देशभक्ति को दर्शाता है. मुझे विश्वास है कि आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका देशवासियों के अंदर गौ माता के प्रति निष्ठा और प्रेम का अलख जगाने में मददगार साबित होगा.

पत्रिका के सफल प्रकाशन और आपके मिशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.

प.पु. संत बाबाजी
श्री जगदीशजी महाराज
गौशाळा-नांदेड

आशीर्वाद

मैं वचन देता हूं...

मुझे देश के जाने-माने धर्म एवं सभी धर्म गुरुओं, शंकराचार्यों, साधु-संतों, जैन मुनियों, सूफी, उलेमाओं के सानिध्य में रहने का सौभाग्य मिला है. मैं वंश से आर्य हूं अथवा द्रविड़ कह नहीं सकता, किंतु मुझे भारतीय अर्थात् हिंदू होने पर अभिमान है.

मेरा विश्वास है कि हम सब एक ही माता-पिता की संतान हैं, हमारी रगों में दौड़ने वाला खून एक है. आपकी और मेरी खूनी रिश्तेदारी है. मैं सबके लिए सेवा, सबको प्यार बांटना चाहता हूं. मेरा विश्वास वेदों, प्राचीन सभ्यता पर है. मेरा देश वही है जिसका वर्णन वेदों में किया गया है अर्थात् 'अखंड भारत' ही मेरा देश है. देश की सेवा एवं सुख-शांति का मार्गदर्शन गाय के माध्यम से करना चाहता हूं. मेरे देश तथा देश वासियों के भविष्य से मैं बहुत चिंतित हूं. मेरा देश न 'जले', मेरे देश वासी न 'जलें' देश वासियों को जीते जी नर्क का अनुभव न हो. मरने पर भी नर्क की प्रताड़ना सहनी न पड़े. चारों ओर स्वर्ग ही स्वर्ग हो. मैं अपने जीवन को सभी के स्वर्ग की प्राप्ति के लिए समर्पित करना चाहता हूं. मेरी इच्छा है हर एक देशवासी प्रेम, सुख, समृद्धि का आनंद ले सके.

ईश्वर पालनहार से मेरी प्रार्थना है कि वह हमें अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए रास्ता दिखाए. गाय ईश्वर पालनहार का नैसर्गिक साधन है. हम बर्दाश्त नहीं कर सकते कि गोवंश के दो-दो माह के मासूम बच्चों का वध हो. यह हमारे देश के संविधान का अनादर है. मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस देश से गोहत्या समाप्त हो सकती है. मैं मानता हूं कि गोहत्या की बीमारी असाध्य नहीं है, इसका इलाज जरूर किया जा सकता है. मुझे आप सभी की उसी तरह जरूरत है, जिस तरह एक सर्जन को ऑपरेशन थिएटर में एक कुशल टीम की, ताकि वह सफल ऑपरेशन कर सके.

मैं आपको गोमांस तथा चर्बी से बचाने के लिए इस मासिक के माध्यम से जागृत करता रहूंगा. मुझे आपके सहयोग की सख्त आवश्यकता है. मासिक पत्रिका के सरंक्षक सदस्य बनने पर आप को वचन देता हूं कि एक-एक सदस्यता पर एक-एक गाय बचती रहेगी और बोनस में आपको इसका पुण्य भी मिलता रहेगा. मुझे विश्वास है कि गोहत्या रोकी जा सकती है.

मेरा संकल्प है कि पहले चरण में कम से कम एक करोड़ गोवंश को जीवनदान मिले और कम से कम एक करोड़ पौधों का रोपण किया जाए.

आप हमारे इस आंदोलन को मजबूत करें. कृपया हाथ बढ़ाएं, सब मिलकर इतिहास रचें.

मैं आपको एक बार फिर विश्वास दिलाता हूं कि इस पवित्र कार्य के लिए जहां देश के शंकराचार्यों, साधु-संतों का न सिर्फ आशीर्वाद प्राप्त है, बल्कि कई प्रत्यक्ष रूप से हमारे साथ हैं. वहीं इस्लाम धर्म के कुछ धर्म गुरुओं, सूफी तथा मौलवियों का भी भरपूर समर्थन प्राप्त है. आप का साथ सही मायने में मेरी शक्ति होगी.

वंदे मातरम्!

वीर मोहम्मद यूनुसोद्दीन फारुखी परभणीकर
संपादक

गाय के प्रति समर्पण का वह भी एक दौर था!

राजा दिलीप जी महर्षि वशिष्ठ की आज्ञा से संतान प्राप्ति की इच्छा से नंदिनी गोमाता की सेवा करते हुए.

शेर से नंदिनी गाय की रक्षा करने से असहाय होने पर अपने आपको अर्पण करते हुए राजा दिलीप.

गाय हमारे धर्म और संस्कृति की प्रतीक है अत: गोरक्षा ही धर्म की रक्षा है

रवींद्र कुमार

कैसी विडम्बना है कि आजादी के ६१ वर्ष बाद भी इस हिंदू बहुल देश के हिंदू भिखारियों की तरह अपनी ही सरकार से गोरक्षा की मांग कर रहे हैं जैसे यह हमारा आस्था मूलक अधिकार न होकर सरकार के अनुग्रह का प्रश्न हो. इसका मुख्य कारण हमारी आस्था की अपेक्षा हमारे आचार की स्वार्थ परक स्थिति है जिसके कारण हम जिसकी पूजा करते हैं उसी का पराभव हो जाता है. हमारी धार्मिक सोच पर हावी पीढ़ी पंडा-पुरोहितवाद की नजर में पूजा का अर्थ थाली में रखकर दिया घुमाना और उन्हें जी खोल कर दान-दक्षिणा देना ही है. गोवंश की दुरावस्था का भी एक मुख्य कारण - गो-सेवा को गो-पूजा का रूप देना ही है. गऊ पूजा के दम्भ से ग्रस्त हम उनके मस्तक पर गेरू से श्री चिह्न अंकित करके या सड़क पर आवारा घूमतीं हुई गाय को आटे का पेड़ा खिलाकर ही उनके प्रति दायित्व से मुक्त हो जाने का स्वांग मात्र करके यह भूल जाते हैं कि उन्हें कसाइयों के हाथ कौन बचाएगा. यदि हम सच्चे अर्थ में गोभक्त हैं तो हमें गऊ पूजा का दम्भ त्याग कर गऊ सेवा गोरक्षा का व्रत लेना होगा. उसकी पूंछ पकड़कर वैतरणी पार करने की बातें न करके उसकी सेवा और संवेदना द्वारा धरती पर ही स्वर्ग लाना होगा. सेवा व संवर्धन के लिए पहले उसकी रक्षा करनी होगी. गो हत्यारों और उनके सहयोगियों को संसार के सामने लाना होगा, कानून के हवाले करना होगा.

इससे बढ़कर हमें याद रखना चाहिए कि गाय हमारे धर्म और संस्कृति की प्रतीक है और प्रतीकों को लाभ या उपयोगिता की दृष्टि से नहीं आंका जा सकता. गाय की सेवा केवल इसलिए करना कि उसका दूध अमृत तुल्य है या गोमूत्र में प्रतिबंधक गुण हैं या उसके गोबर की खाद सर्वोत्तम जैविक खाद है आदि बातें न करके हमें सीधे गोरक्षा, गोपालन और गोसेवा की बात करनी होगी. केवल तभी हम अपने आपको सच्चे अर्थों मे हिंदू कह सकेंगे, क्योंकि गाय गोविंद का ही जीता जागता प्रतिरूप है. गोविंद स्वरूप उसके जीते-जागते शरीर की सेवा हमें इसी तरह करनी होगी, जिस तरह हम अपनी मां की सेवा करते हैं क्योंकि गाय मात्र एक पशु नहीं, विश्वास से कहना होगा कि हम गो पूजक नहीं गोभक्त हैं. जैसे भगवान की मूर्ति हमारे लिए मात्र पत्थर की प्रतिमा न होकर भगवान का साक्षात् स्वरूप है और उसका अनादर हम सहन नहीं कर सकते, वैसे ही गाय भी हमारे लिए मात्र पशु न होकर मातृरूप भगवती है और उसका निरादर अथवा हनन हमारे लिए असह्य है.

गोरक्षा का आर्थिक पक्ष भी अपनी जगह सही हो सकता है किंतु हिंदुओं के लिए यह हमारे धर्म और संस्कृति की धुरी है जो सनातन धर्म के पांच मूलभूत आस्था स्तम्भों- गंगा, गायत्री, गऊ, गोविंद और गीता का एक प्रमुख स्तंभ है. अत: गाय का निरादर या हनन हिंदू धर्म एवं संस्कृति पर सीधा प्रहार है. इसीलिए गो रक्षा तर्क-वितर्क का नहीं हमारी आस्था का प्रश्न है. इसका जवाब भी शायद हमें अपनी उसी विकृत सोच में मिलेगा जो आज भी गाय को एक उपयोगी पशु ही मानती है, धर्म और संस्कृति का प्रतीक नहीं. इसी सोच के कारण गोवध को बढ़ावा मिलता है, क्योंकि कुछ लोगों के लिए उसके दूध और गोबर की अपेक्षा उसका मांस और हाड़-चाम अधिक मूल्यवान है. इसीलिए अब हमें गोरक्षा को एक उपयोगी पशु की रक्षा न मानकर मूर्तिमान धर्म और संस्कृति की रक्षा मानना होगा. केवल तभी हम उसकी रक्षा कर पाएंगे अन्यथा गोरक्षा को राजनीति का मुद्दा बनाकर इसके पक्ष-विपक्ष के तक-वितर्कों में उलझे रहेंगे.

याद रखिए गोरक्षार्थ प्राणोत्सर्ग के लिए तत्पर रहने वाले गोभक्तों की दृष्टि में गाय एक पशु नहीं साक्षात् मातृरुपा भगवती है जिसकी रक्षा के लिए समय-समय पर गो भक्तों ने प्राण न्योछावर किए हैं. गोरक्षार्थ शहीद होने वाले उन गोभक्तों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम भी गोपूजा का दंभ छोड़कर गो सेवा का व्रत लें और मातृरुपा भगवती, गोमाता की रक्षा के लिए हर प्रकार से तत्पर रहें. ■■

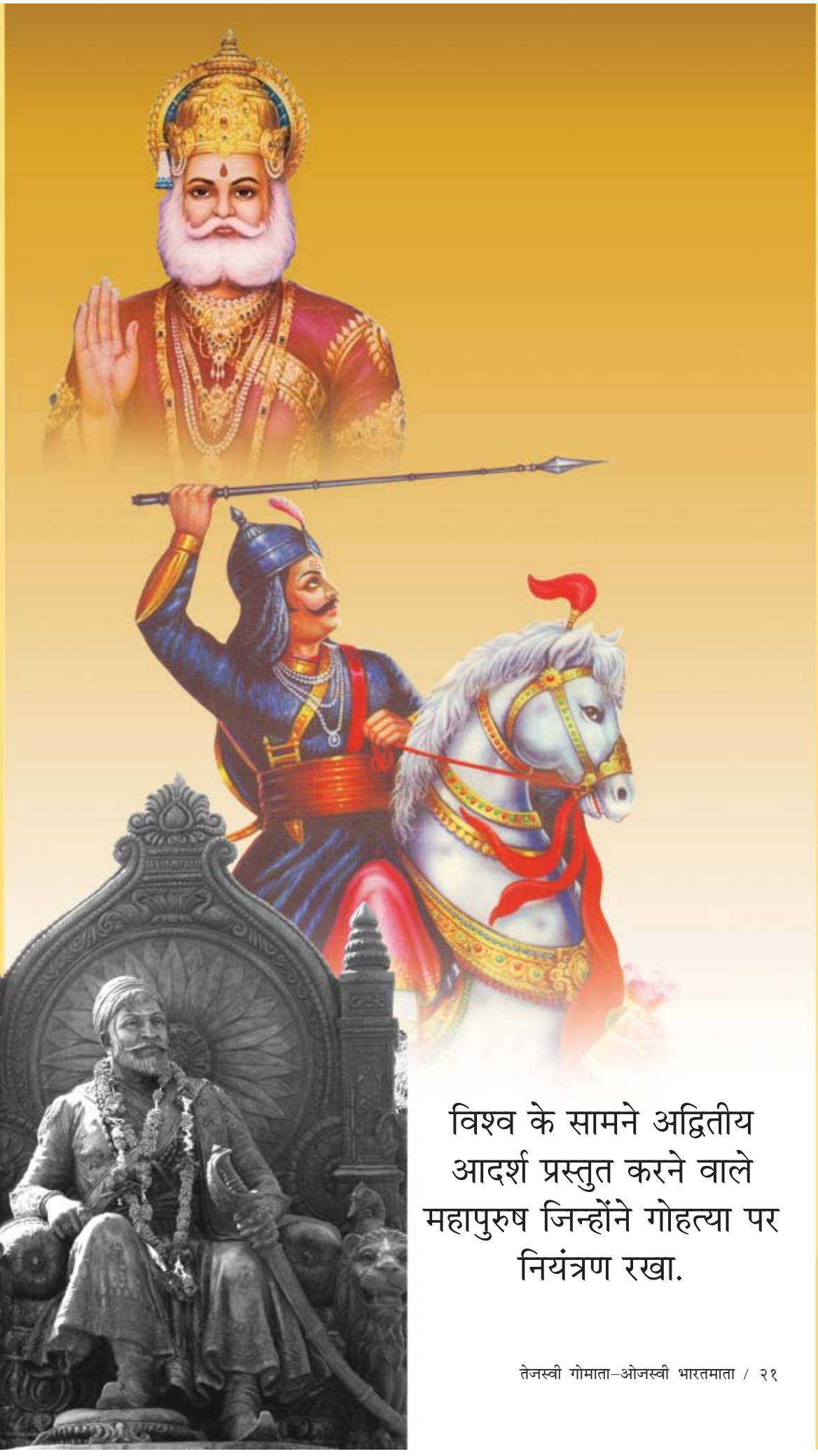

विश्व के सामने अद्वितीय आदर्श प्रस्तुत करने वाले महापुरुष जिन्होंने गोहत्या पर नियंत्रण रखा.

हम सिर्फ उन्हीं सज्जनों को संबोधित कर रहे हैं जो देश, धर्म, संस्कृति की महत्ता को समझते हैं. देश सेवा, धर्म पालन एवं संस्कृति की रक्षा के लिए मन में दर्द और इच्छा शक्ति रखते हैं.

हम उन सज्जनों को भी संबोधित कर रहे हैं जो 'भगवान महावीर' के मन से अनुयायी हैं. अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि की आवश्यकताओं को जानते और समझते हैं. गोहत्या एवं जीव हत्या के विरोधी हैं. 'जीवदया' और 'जिओ और जीने दो' को प्रत्यक्ष होते देखना चाहते हैं.

गो भक्तों में से बहुत कम यह जानते हैं कि गोहत्या की समस्या उतनी कम नहीं है जितनी यह समझते हैं. विश्व हिंदू परिषद के अनुसार १ लाख २५ हजार गोवंश का प्रतिदिन वध होता है. मासूम बछिया, बछड़े भी धड़ल्ले से काटे जा रहे हैं. गायों तक को नहीं छोड़ा जा रहा है. इसके लिये पश्चिम बंगाल सिर्फ बदनाम है. देश के दो चार राज्यों को छोड़कर सारे देश में संविधान, कानून, आस्था, देश की सुख-शांति की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं. आप और हम यूं तमाशाई बने अपने जीवन में व्यस्त हैं.

कौन बनेगा गोरक्षक ?

यूं तो हमारा देश विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा है, जिनमें अधिकांश समस्याओं पर सरकार एवं अन्य सेवाभावी संस्थाएं ध्यान दे रही हैं, परंतु हमारी नजर में सब से ज्यादा भयंकर और मूल समस्या है 'गोहत्या रोकने की, गोरक्षा, गो संवर्धन की'. हमारा विश्वास है कि देश की सुख-शांति और जग के जगद्गुरु नेतृत्व का मार्ग गोमाता की तेजस्विता में निहित है. गोमाता से प्राप्त होने वाले दूध, दही, मक्खन, घी, गोमूत्र और गोबर के सही उपयोग से हम क्रांति ला सकते हैं. पर इन्हें प्राप्त करने के लिए न सिर्फ इसे जीवंत रखना होगा, बल्कि उसकी सेवा कर उसे तेजस्वी बनाना होगा और उसके लिए गोहत्याएं बंद करनी होंगी.

यह सिर्फ समस्या नहीं है यह बहुत पुराना षड्यंत्र है जिसे २०० वर्ष पूर्व अंग्रेजों ने आरंभ किया. भारत माता और उसमें गोमाता की शक्ति को अंग्रेज बहुत पहले जान चुके थे. वह नहीं चाहते थे और आज अमेरिका भी नहीं चाहता है कि भारत विश्व की बड़ी शक्ति बनें. वैदिक काल की गाय 'कामधेनु' को समाप्त करने का अंतराष्ट्रीय षड्यंत्र रचा गया था, जिसके कई प्रमाण भी आज भी मौजूद हैं. हम आगे आपको समय-समय पर इससे अवगत कराते रहेंगे. इसी षड्यंत्रों को भिन्न-भिन्न तरीकों से चलाते हुए यहां के मुसलमानों को 'गोमांस भक्षण' करना सिखाया गया. हमारी कृषि भूमि में 'गोबर'(जिसमें धन की देवी लक्ष्मी रहती है)

की बजाए हानिकारक 'फर्टिलाइजर' के उपयोग के चलन को आम किया गया.

'मीट लॉबी' नामक धनवान गुंडों को पैदा किया गया. जो देश की गो संपदा और पशुधन की बहुत बड़ी संख्या का प्रतिदिन वध कर गोमाता के अस्तित्व को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. वैदिक देशी गायों की कई प्रजातियों का सफाया किया जा चुका है.

दूध के लिए हमारी वैदिक कामधेनु गोमाता की बजाए विदेशी

नौजवानों में मांस भक्षण का बढ़ता प्रमाण

जर्सी नामक पशु को सामने ला खड़ा किया है और हम भारतवासियों को गुमराह कर उसी को गाय बतलाने लगा है.

मीट लॉबी एवं मांस भक्षण की हिमायत करने वाले सरकारी अधिकारी पैदा किए गए.

मुसलमानों के साथ-साथ अब देशवासियों का बड़ा प्रतिशत भी षड्यंत्र का शिकार होता जा रहा है. विशेषत: नौजवानों में मांस भक्षण का प्रमाण बढ़ता जा रहा है. शाकाहारी अहिंसावादी नौजवान भी इसमें लिप्त होते जा रहे हैं.

पक्के शाकाहारी एवं अहिंसावादी भी विश्वास से यह कह नहीं सकते के बड़े कारखानों में निर्मित खाद्य पदार्थों का जो उपयोग कर रहे हैं उसमें मांसाहारी तत्व नहीं हैं. ऐसी बेशुमार वस्तुएं हैं जिन्हें हम उपयोग में लाते हैं. बड़ी कोशिशों के बाद अब खाद्य पदार्थों पर 'हरा बिंदु' शाकाहारी के लिए लगाया जा रहा है पर इस 'हरे बिंदु' के धोखे में अब खतरा और बढ़ गया है. 'कोल्ड ड्रिंक्स' में हमारे देशवासियों को जिस तरह जहर पिलाया जा रहा था और है, उसी तरह मांसाहार भी शाकाहारी के 'हरे बिंदु' की आड़ में आपको, आपकी आस्था को, आपके धर्म एवं संस्कृति को भ्रष्ट किया जा रहा है.

इससे बड़ी दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है? हम चाहते हैं कि ऐसे पदार्थों की निशानदेही होते रहना चाहिए हम अपने वैज्ञानिकों से ऐसे पदार्थों की जांच करवा कर खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता एवं पूरी तरह, शाकाहारी होने की रिपोर्ट देते रहेंगे. ताकि आप मांसाहार और मांसाहारी तत्वों से बचते रहें.

हमारा देश अहिंसा और प्रेम का पुजारी एवं प्रचारक रहा है. इतिहास गवाह है कि हम आज सुख-शांति वाले विश्व को मांस निर्यात कर रहे हैं. बेजुबान, लाचार पशु-पक्षी पर हिंसा करके.

डॉ. मदन मोहन बजाज जैसे वैज्ञानिकों और विचारकों के अनुसार देश की सारी नैसर्गिक आपदाएं सिर्फ और सिर्फ जीवहत्या के कारण हैं. हमारी धरती पर जीव हत्याएं बेशुमार बढ़ गई हैं. क्या अहिंसा और शांति के पुजारी एवं प्रचारक देश पर यह बहुत बड़ा कलंक नहीं है?

यहां हम सबका, पूरे समाज का, पूरे देश का क्या कर्तव्य बनता है? सभी को दायित्व निभाना होगा.

हम पिछले १३ वर्षों से 'गो हत्या बंदी' और जीव हत्या विरोध में जुटे हैं. हमें काफी आशा भरी सफलताएं मिली हैं. इच्छा है कि इस कार्य को देशव्यापी आंदोलन की शक्ल दी जाए. प्रतिमाह देशवासियों के सामने जागृति के लिए हम एक मासिक **''तेजस्वी गोमाता ओजस्वी भारतमाता''** सामने लाएं.

मल्टी नेशनल कंपनियों और अन्य जो आप को धोखे से मांसाहार पर मजबूर कर रहे हैं. कभी चाय में, कभी वनस्पति घी में तो कभी घी में इसी तरह अन्य सभी पदार्थों में उनकी कोशिशें जारी रहती हैं. ऐसे सभी षड्यंत्रों से आपको सतर्क किया जाता रहे. गोहत्या बंद करवा कर उसके अस्तित्व के खतरे को न सिर्फ समाप्त किया जाए, बल्कि वैदिक कामधेनु गाय की सभी प्रजातियों को फिर से पुनर्स्थापित करवा कर हर किसान तक पहुंचाया जाए. एक एकड़ पर एक गाय, एक ग्राम पंचायत में एक गोशाला के लिए जागृति का कार्य करना है. गाय को तेजस्वी बना कर उससे लाभ उठाकर ओजस्वी भारत बना कर सोने की चिड़िया कहलवाना है.

हमारी इस टीम में देश के वैज्ञानिक, बुद्धिमान, देशभक्तों के अलावा एक टीम पढ़े-लिखे मुसलमानों की भी है जो इस्लाम धर्म को आधार बनाकर गोहत्या और हद से बड़ी जीव हत्या के विरोध में अपने समाज को सुधारने के लिए हमारे साथ हैं. देश में १०,००० मदरसों में अधूरी शिक्षाओं का विरोध कर संपूर्ण शिक्षाओं और शाकाहार के चलन के लिए प्रयत्नशील होंगे. आजाद भारत के इतिहास में इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था. हमारा संकल्प है गोहत्या बंद करवाएंगे, मारे जाएंगे या मर जाएंगे.

हमारी इस टीम और कार्य को पू. ज्योतिपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री माधवाश्रम जी जगद्गुरु देश के अन्य साधु-संतों का आशीर्वाद भी प्राप्त है. जैन धर्म के सभी पंथों के संतों,

मुनि महाराजों के आशीर्वाद के अलावा मुस्लिम धर्म गुरुओं, नंदीग्राम नगरी (नांदेड़) के पू. जगदीश महाराज और सिखों के महत्वपूर्ण गुरुद्वारा साहब के बड़े संत बाबा कुलवंत सिंहजी का भी आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्त है. साथ ही नंदीग्राम के जाने-माने वरिष्ठ नागरिक और नांदेड़ भूषण बुजुर्गों का मार्गदर्शन भी हमारे साथ है.

भगवान 'महेश, पुरुषोत्तम राम, श्रीकृष्ण, महावीर, बुद्ध' के इस देश में पू. जगद्गुरु शंकराचार्य, संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर और अन्य महान साधु सूफी संतों और अहिंसा के सिद्धांतों के अनुयायी जैनियों की मौजूदगी के रहते, म. दयानंद सरस्वती, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधीजी, डॉ हेडगेवारजी, गुरु गोलवालकरजी, आचार्य विनोबा भावे और अन्य महापुरुषों की इच्छाओं के होते हुए भी यह बड़ी लज्जा और दुर्भाग्य की बात है कि हम यूं बेशर्म तमाशाई बने बैठे अपना जीवन बिता रहे हैं. हमें एकांत में इस पर शांतिपूर्वक विचार करना चाहिए, लज्जा भी आनी चाहिए.

अहिंसा के प्रचारक भगवान महावीर

देश-विदेशों मे गोमाता की महत्ता, आवश्यकता, उससे लाभार्थी होने के तरीकों गोहत्या बंदी एवं मांसाहार के प्रति जागृति लाने, जाने-अंजाने मांसाहार एवं मांसाहारी तत्वों से बचाने के कठिन, परंतु अवश्यक कार्य को पूरा करने एक मासिक **''तेजस्वी गोमाता ओजस्वी भारतमाता''** मध्य भारत के गोदावरी नदी (दक्षिण भारत की पवित्र गंगा) पर बसी नगरी नंदीग्राम (नांदेड़) से एक क्रांतिकारी किरणों को फैलाने का प्रण किया है. यह वही ऐतिहासिक और पवित्र नगरी है जो सिख पंथ के १०वें गुरु, गुरु गोविंद सिंहजी महाराज की आखरी आरामगाह है.

यह मासिक पत्रिका हर घर की आवश्यकता होगी, इसलिए इसे प्रत्येक घर पहुंचनी चाहिए. इसके लिए विपणन की योजनाएं भी बनाई गई हैं.

हम माताओं और बहनों से आग्रह करते हैं कि वह इस गोहत्या बंदी और जीव हत्या विरोधी आंदोलन में अपना तन, मन, धन का सहयोग दें. आप के बिना यह संकल्प अधूरा रहेगा.

आप सब को यह आंदोलन अपना ही लगे तो अपनी जगह चुप न रहें, अपने मित्रों, सखियों, रिश्तेदारों को भी इसमें शामिल करें.

देश के मध्य भाग से आरंभ होने वाले इस आंदोलन को देश संपूर्ण भारत के सभी जिलों से आरंभिक सहयोग मिलना अनिवार्य और आवश्यक है.

घर से मजबूती मिलेगी तो किरणें देश-विदेश तक फैलेंगी. बुराई एक साथ नहीं आती है. कल और आज जीव वध, भ्रूण हत्या देख कर आप सब चुप थे और हैं. फिर अपने ही समाज के कितने ही लोगों को भिन्न-भिन्न शक्लों में हिंसा एवं मांसाहारी तत्वों के उपयोग पर आप आज भी चुप हैं. ऐसा ही रहा तो आने वाला कल बहुत भयंकर होगा. फिर किस मुंह से भगवान का नाम लेंगे, दर्शन करेंगे.

कौन बनेगा गोरक्षक : हम ऐसा समझे हैं कि २ रु. प्रतिदिन के हिसाब से दो वर्ष के ७३० दिनों के १५०० रु. एक गाय को वध से बचाने के लिए हो सकते हैं. भारत माता एवं गोमाता के ध्येय को प्राप्ति के अलावा आपको गोरक्षा का पुण्य मिलेगा. ईश्वर के पास पाप और पुण्य का हिसाब चुकने वाला नहीं है. इसीलिए हम पूछ रहे हैं कौन बनेगा गोरक्षक ?

संपूर्ण गोवंश हत्या बंदी केंद्रीय कानून बनवाने हेतु तिलमिला जीवन बिता रहे पू. ज्योतिषपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी, श्री माधवाश्रमजी महाराज आपको उपदेश दे रहे हैं.

'गोरक्षा का विषय जीवन और मौत का विषय है. निरीह जनता तड़प रही है. हम भारतवासी गोहत्या सहन कर धार्मिक अधिकार विहीन, स्वधर्म विहीन, स्वाभिमान रहित, पराधीन, घोर अपमान मय और महापापमय मृतवत् जीवन जी रहे हैं. हाय! विधर्मियों के क्रूर शासनकाल की तरह आज भी हम तथाकथित आजाद भारत में धार्मिक गुलामी का जीवन जी रहे हैं. जन-जन के हृदय में क्रोधाग्नि की ज्वालाएं धधक रही हैं. खून खौल रहा है.

अतएव विवश हो कर पूज्य साधु-संतों ने प्राणों की भी बाजी लगा कर 'करो या मरो' का राष्ट्रव्यापी प्रचंड विलक्षण एवं निर्णायक आंदोलन करने का बीड़ा उठाया है. मरता क्या नहीं करता. आगे देखिए क्रांति कैसी होती है. आओ राष्ट्र के वीरों, राष्ट्र वीरांगनाओं. आओ, धर्मयुद्ध के इस महासागर में भारत माता और गोमाता आपका हार्दिक अभिनंदन करती है.

१८५७ के विद्रोह में दो मांगें थीं- एक आजादी, दूसरी गोरक्षा की. तब से आजादी के आंदोलन में गोरक्षा जुड़ गईं. आजादी तो मिली गोरक्षा न हो सकी.

किसान, व्यापारी जगत और राजनेताओं के कारण आज की परिस्थिति यह है कि देश में गोरक्षकों में बहुत मायूसी है. उनका ऐसा मत बन रहा है कि अब इस देश में गोरक्षा असंभव है. ऐसे समय हम न सिर्फ इन गोरक्षकों में केवल नई जान डालना चाहते हैं, बल्कि नए गोरक्षक भी पैदा करना चाहते हैं. इसलिए हम आप सब एवं व्यापारी जगत से सहयोग की अपेक्षा रखते हैं.

गीता में कहा गया है -

कृषि, गोरक्षा वाणिज्यम्। वैश्य कर्म स्वभावजम्।।

अर्थात् कृषि गोरक्षा व्यापार यह वैश्य के स्वाभाविक कार्य हैं. श्री राजेंद्र शर्मा जी की पंक्तियों से बात समाप्त करता हूं.

'अतीत स्वयं जबाब है। उस पर सवाल नहीं होते।।
मिट्टी की कोख में डूबे बिना गुलाब नहीं होते।
चिरागों की तरह खुद को जलाना पड़ता है,
केवल मुट्ठियां बांध लेने से इंकलाब नहीं होते।

।। जय गोमाता की ।।

प्रार्थना

भावना दिन–रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य, संयम, शील का, व्यवहार बारम्बार हो।।
धर्म के विस्तार से, संसार का उद्धार हो।
पाप का परित्याग हो और पुण्य का संचार हो।।
ज्ञान की सद्ज्योति से, अज्ञानता का नाश हो।
धर्म के सद्आचरण से, शान्ति का आभास हो।।
शान्ति, सुख, आनन्द का, प्रत्येक घर में वास हो।
वीर वाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो।।
रोग, भय और शोक, होवें दूर हे! परमात्मा।
ज्योति से परिपूर्ण होवें, सब जगत की आत्मा।।

महावीर इंटरनेशनल (अपेक्स),
हैदराबाद.

भारत -२०२०

हम चाहते हैं भारत प्राचीन काल की तरह फिर से 'सोने की चिड़िया' कहलाए. हम आरंभ से ही अहिंसा के प्रचारक रहे हैं, विश्व को फिर से ''प्रेम, करुणा, सब को प्यार, सबकी सेवा, जियो और जीने दो'' के सिद्धांत का निर्यात करें. आज धरती मां को सुख-शांति की अत्यंत आवश्यकता है, जिसे हम आगे बढ़कर प्रदान कर सकते हैं.

हमारे देश की आय के लिए गोमांस की जगह गो आधारित जैविक खाद्य से निर्मित जैविक अन्न, विषमुक्त अन्न संसार को निर्यात करें. देश में सुख-शांति का मार्ग गाय आधारित अर्थ व्यवस्था को करें. देश में दूध की नदियां फिर से बहने लगे. श्री कृष्ण के काल की तरह प्रत्येक मनुष्य को गो दूध, दही, मक्खन, घी उपलब्ध हो. राम राज्य की तरह देश में सुख रहे. देश का हर प्राणी सुख-शांति से जीवन बिताए. हमारा देश स्वाभिमानी कहलाए हर मनुष्य को रोजगार मिले, पेट भर अन्न और दूध मिले, खेतों को प्राकृतिक एवं जैविक खाद्य मिलता रहे.

केवल अणुशक्ति होने से ही सब कुछ नहीं होता. U.S.S.R.का हाल हमने देख लिया. वहां परमाणु बमों एवं मिसाइलों के भंडार थे, परंतु उनके देशवासियों को पेट भर खाना नसीब नहीं था, रोजगार नहीं था. सुख-शांति नहीं थी. परिणामत: विशाल U.S.S.R. के टुकड़े-टुकड़े हो गए.

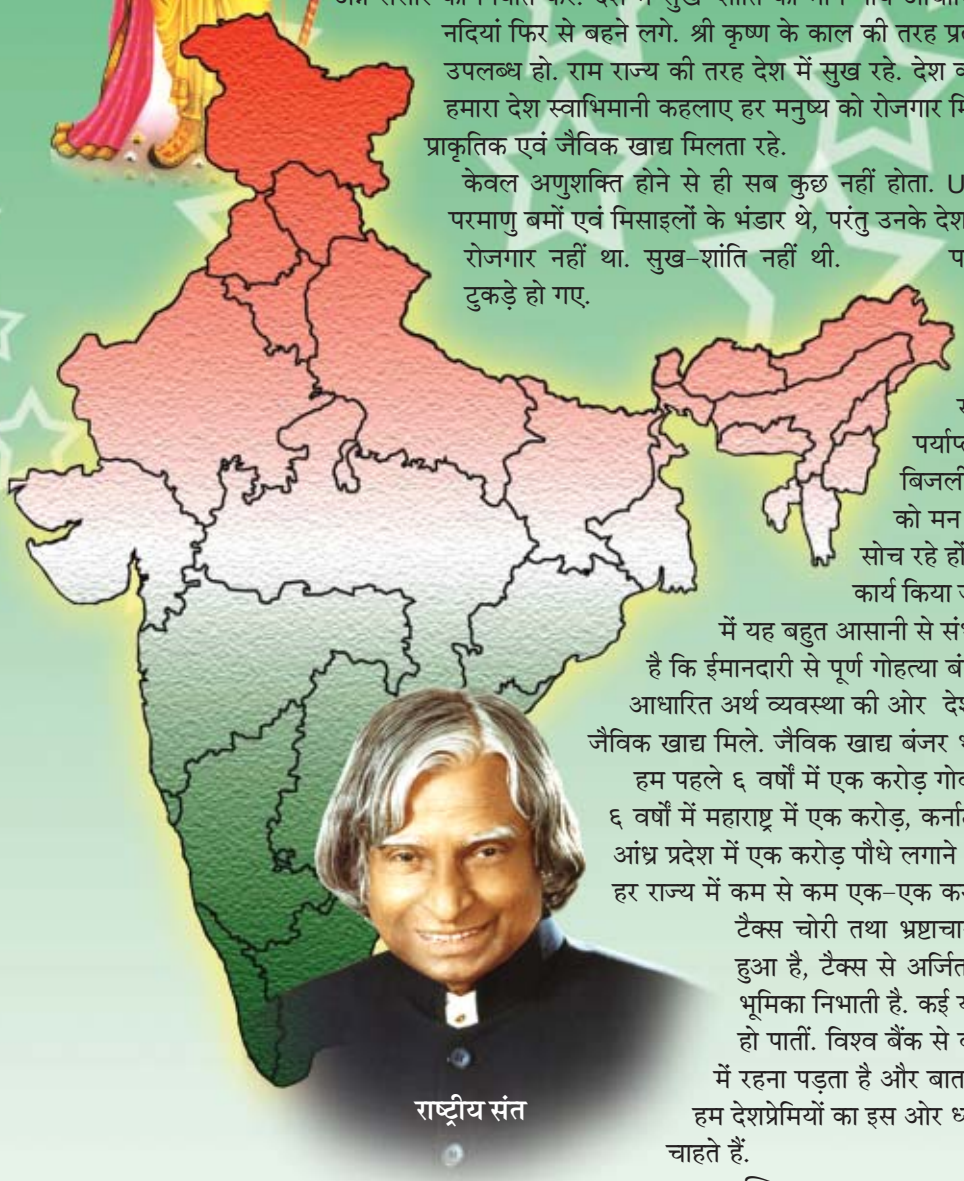

भारत देश का प्रदूषण अच्छा हो, सड़कें अच्छी हों, नदियां अच्छी और साफ हों. खेत की सिंचाई के लिए पानी के पर्याप्त भंडार रहे, हर घर को भरपूर और सस्ती बिजली उपलब्ध हो. किसान तथा उद्योगपतियों को मन माफिक बिजली सस्ती दरों में मिले. आप सोच रहे होंगे क्या यह संभव है. योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाए तो आने वाले १२ वर्ष अर्थात् २०२० में यह बहुत आसानी से संभव है. इसके लिए हमने पहला लक्ष्य रखा है कि ईमानदारी से पूर्ण गोहत्या बंद हो. गोवंश के महत्व को जाना जाए. गो आधारित अर्थ व्यवस्था की ओर देश को मोड़ा जाए. देश की खेती को भरपूर जैविक खाद्य मिले. जैविक खाद्य बंजर भूमि में भी अन्न उगा सकती है.

हम पहले ६ वर्षों में एक करोड़ गोवंश की हत्या होने से बचा सकते हैं. पहले ६ वर्षों में महाराष्ट्र में एक करोड़, कर्नाटक में एक करोड़, गुजरात में एक करोड़, आंध्र प्रदेश में एक करोड़ पौधे लगाने का प्रबंध करेंगे. दूसरे चरण में देश के हर राज्य में कम से कम एक-एक करोड़ पौधे लगाएंगे.

राष्ट्रीय संत

टैक्स चोरी तथा भ्रष्टाचार आज हमारे देश का ज्वलंत प्रश्न बना हुआ है, टैक्स से अर्जित आय हमारे देश की उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. कई योजनाएं रुपए की कमी के कारण पूरी नहीं हो पातीं. विश्व बैंक से ब्याज पर रुपए लेने के कारण हमें गुलामी में रहना पड़ता है और बात-बात पर अमेरिका हमें आंखें दिखाता है. हम देशप्रेमियों का इस ओर ध्यान आकर्षित कर देश को बलवान बनाना चाहते हैं.

आज हर व्यक्ति ५५००/- रुपए का विश्व बैंक का कर्जदार है. यह बोझ समाप्त कर देश को भ्रष्टाचार तथा कर्ज मुक्त करना होगा. देश का हर नागरिक कर्ज मुक्त होगा. सभी को न्याय मिलेगा. देश का हर बच्चा स्कूल जाएगा. बाल मजदूरी जड़ से समाप्त होगी. हर नागरिक सुशिक्षित कहलाएगा. देश सुरक्षित होगा. देश में चारों ओर सुख होगा. इतनी खुशहाली होगी कि मन पुकार उठे कि हां 'यही है राम राज्य, यही है राम राज्य.' ■■

भूतकाल में धरती पर राज करने वाला प्राणी

कभी ये जीवित थे, धरती पर राज करते थे. पर आज इतिहास बनकर रह गए.

विशाल डायनोसोर की तरह गोमाता का भी अस्तित्व खतरे में

महाभारत काल में
छह हजार गाय / एक हजार मानव अनुपात था.

आजादी के बाद
१९५१में चार सौ दस गाय / एक हजार मानव

१९९१ में एक सौ दस गाय / एक हजार मानव

आज की स्थितिनुसार
अस्सी से भी कम गाय / एक हजार मानव

४० वर्ष के बाद शून्य गाय / एक हजार मानव

.... हमारा दायित्व ?

गाय, ५० वर्षों बाद इतिहास कहलाएगी, अगर.....

धरती पर बसे हर मनुष्य की आवश्यकता

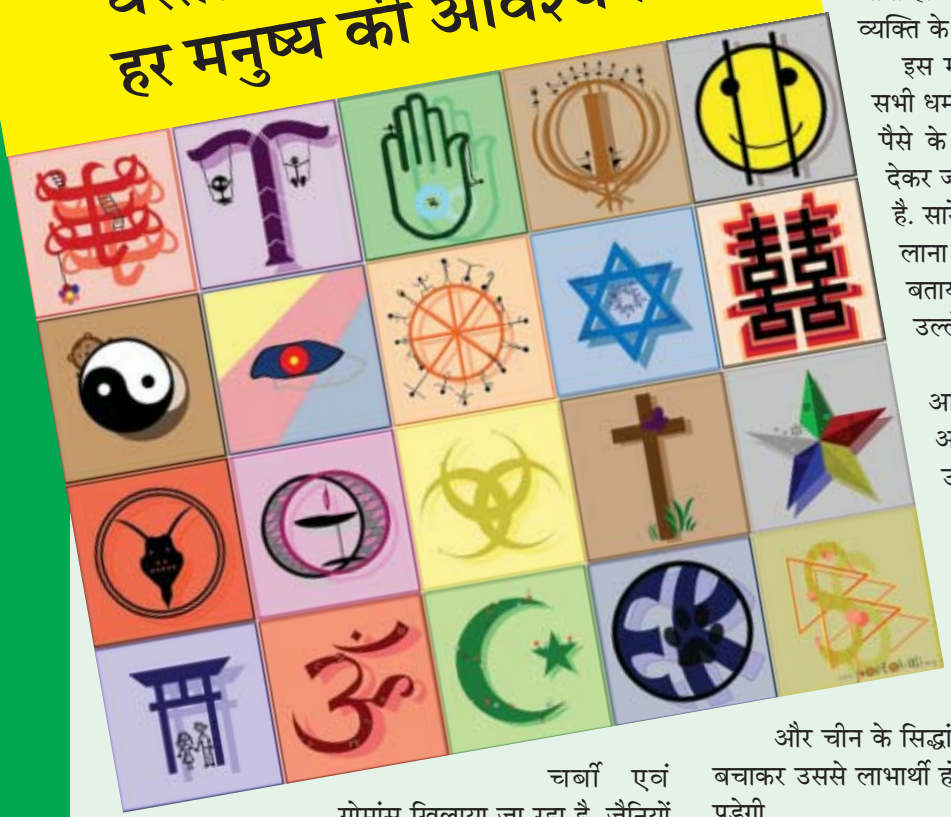

''तेजस्वी गोमाता ओजस्वी भारत माता'' धरती पर बसे हर धार्मिक मनुष्य एवं प्रत्येक भारतीय की आवश्यकता है. वैदिक, सनातन, अर्थात् हर हिंदू की आवश्यकता है. गौ प्रेम आस्था हिंदू धर्म का आधार है और अगर यही पूरा समाज गोमांस एवं चर्बी का अनजाने में उपयोग कर रहा हो तो इस से बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है. इन्हें न सिर्फ गोमांस एवं चर्बी से बचाना है, बल्कि संपूर्ण गोहत्या बंद करवाना है. ऐसे सारे रास्ते बंद करना है जहां से इन्हें चर्बी एवं गोमांस खिलाया जा रहा है, जैनियों का आधार 'अहिंसा एवं जिओ और जीने दो' का है. दु:ख है कि कुछ लोग जाने-अनजाने में गोमांस एवं चर्बी खा रहे हैं और रोजाना खा रहे हैं. यह पत्रिका इन्हें ऐसे सारे खाद्य एवं पेय पदार्थों से बचाने का दायित्व निभाता रहेगा.

बौद्ध धर्म के जनक भगवान गौतम बुद्ध के उपदेशों के अनुसार सारे प्राणियों के मांस से बचना चाहिए. इसाई तथा यहूदी धर्म के अनुसार 'हराम' नहीं खा सकते 'हलाल' ही खाना होता है.

सिख धर्म के अनुसार इन्हें भी 'झटका' का उपयोग करना अनिवार्य होता है. खाद्य, पेय पदार्थों एवं औषधियों में पता नहीं किस प्रकार बिना झटके से प्राप्त चर्बी और मांस के अंश होते हैं.

संपूर्ण पृथ्वी पर बसे मुसलमानों के लिए भी यह पत्रिका बहुत महत्वपूर्ण साबित होगी. कुरान के 'सूरा अनआम, सूरा बकर, सूरा मायदा, सूरा नहल' के अनुसार इन्हें चार ''हराम'' से बचना हर हाल में जरूरी है. हलाल में से कुछ न खाएं तो पाप नहीं. पर इन चार हराम में से कुछ खा लें तो पाप होगा. विश्व के मुसलमानों को भी पता होना चाहिए कि यह चार हराम किन-किन खाद्य, पेय और औषधियों में हैं. कुरान के इस आदेश का पालन इन्हें हर हाल में करना ही करना चाहिए. इसलिए यह पत्रिका इन मुसलमानों के लिए भी उतना ही जरूरी है, जितना किसी अन्य धार्मिक व्यक्ति के लिए.

इस मासिक के माध्यम से हर माह आप सभी धर्मप्रेमियों को सतर्क किया जाता रहेगा. पैसे के मोह में मानवता के दुश्मन धोखा देकर जबर्दस्ती मांस खिला रहे हैं जो गलत है. सारे विश्व के मुसलमानों में यह जागृति लाना है कि ईश्वर ने दुग्ध का इतना महत्व बताया है. हर धर्म में दुग्ध के महत्व का उल्लेख किया गया है.

भारतमाता को आज गोमाता की आवश्यकता है. कामधेनु का वैध तथा अवैध वध करने वालों के विरुद्ध आवाज उठानी होगी.

अपने आपको कम्युनिस्ट एवं काम्रेड मानने वाले सज्जनों को समझाएंगे कि आप भारतमाता को अपना देश मानते हैं तो गाय के महत्व को मानना ही पड़ेगा. भारत में रहकर, भारत का खाकर रूस और चीन के सिद्धांत का गुणगान नहीं चलेगा. गाय को बचाकर उससे लाभार्थी होने की बात तो उनको भी माननी ही पड़ेगी.

धरती पर किसी भी धर्म के लोग बसे हों, पर बहुत बड़ा वर्ग शाकाहारी का भी है. बेचारे यह कैसे शाकाहारी हैं, जो रोजाना किसी न किसी खाद्य पदार्थ में मांस एव चर्बी खा रहे हैं. इन शाकाहारी वर्ग के हर व्यक्तित्व को यह जानकारी चाहिए कि मांस किस-किस नाम से किन-किन पदार्थों में मिलाया जा रहा है.

आइए, आप इस पत्रिका के संरक्षक सदस्य बनकर शहीद मंगल पांडे की तरह चर्बी के खिलाफ शंखनाद करें. हम आह्वान करते हैं कि धर्म के सिद्धांतों के अनुसार इस अधूरी आजादी को पूरा करते हुए देश से गोहत्या बंदी के कलंक को समाप्त करके दूध की नदियां बहाएंगे. ■■

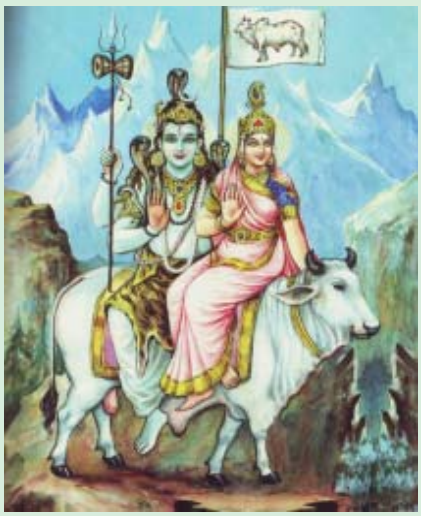

भगवान महेश का नंदी

भगवान कृष्ण की कपिला

पैसा बड़ा या आस्था ?

प्रज्ञा - शील - करुणा

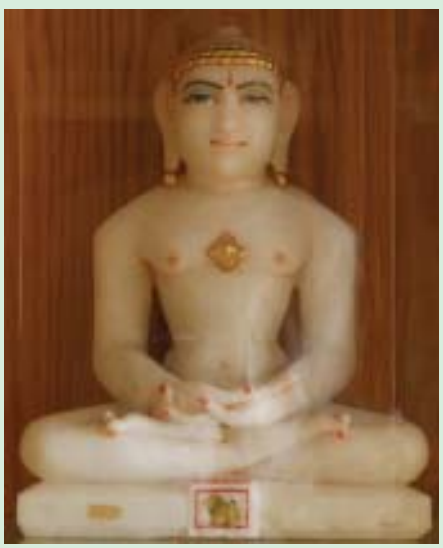

अहिंसा परमो धर्मः

इनके उपदेश बचाना हमारा दायित्व है!!!

सौजन्य : महावीर इंटरनेशनल औरंगाबाद

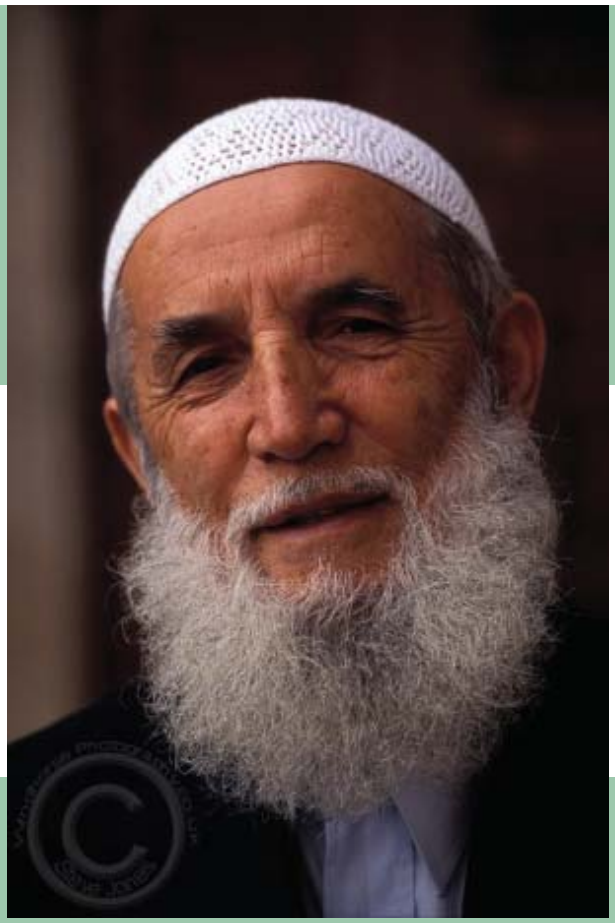

इरान, ईराक मुस्लिम देश होकर भी अपने-अपने देश के लिए एक-दूसरे से युद्ध करते रहे हैं. भारत के किसी मुसलमान को इरान, ईराक, सऊदी अरब, दुबई, पाकिस्तान अथवा कोई और मुस्लिम देश अपने यहां न रहने देगा और न ही दफन होने देगा. भारत जैसे प्यारे देश का आदर होना चाहिए.

देश के हर नागरिक का कर्तव्य

देश को अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्र हुए पूरे ६१ वर्ष हो रहे हैं.

इतिहास में अंग्रेजों के विरुद्ध प्रयास तो बहुत हुए. युद्धों में हजारों जानों की आहूति दी गई, पर १८५७ का प्रयास बहुत विशाल था. लाखों देश प्रेमी शहीद हुए आखिर सन् १९४७ में हम आजाद हुए. आजादी क्या होती है? इसका महत्व हम नहीं जान पा रहे हैं. आज फिलिस्तीन, इराक तथा कई अफ्रीकी देशों को देखिए और जानिए. मैं सभी देशवासियों से आह्वान करता हूं. देश का भरपूर आदर करें.

दो शब्द मुसलमान भाइयों के लिए

मुसलमान भाइयों से चाहूंगा कि इस ओर विशेष ध्यान रखें. जैसे आप अपने घर का रखते हैं. इससे ज्यादा ध्यान देश का रखें. देश की उन्नति में अपना भरपूर योगदान दें. अशांति न देश के लिए अच्छी है न मानवता के लिए. इस्लाम धर्म में किसी भी मासूम की अकारण हत्या करना सारी मानवता की हत्या करने के समान है.

जिस धर्म में पड़ोसी के भूखे रह जाने पर अपने भोजन से पहले उस भूखे को खाना खिलाने का आदेश हो. ईद त्यौहार से पहले गरीब का हिस्सा निकाले बिना आपको कोई खुशी मनाने से रोका गया हो. सभी से प्रेम और भाईचारे के साथ मिलजुलकर रहने का बारम्बार आदेश हो. हमने पाया है कि साधारण मुसलमान अज्ञानता का शिकार है. इन सभी बुराइयों को सुधारने की जिम्मेदारी धर्म गुरुओं पर है.

मैं उन मुसलमान भाइयों से कहना चाहता हूं जो भारत में रहकर दुश्मन देश से हमदर्दी रखते हैं. पाकिस्तान में गरीबों एवं औरतों का जीवन बेहाल है. जमीदारों, अमीरों का अन्याय सुनकर मन कांप उठता है. एक-दूसरे पर गोली चलाते समय यह भी नहीं देखते कि इस स्थान पर मस्जिद है या रमज़ान का महीना.

पाकिस्तान में हमेशा सैनिक शासन रहा है. वहां लोकतंत्र नहीं है, धर्म के नाम पर भारतमाता के टुकड़े किए गए. शराबी, सुअर का मांस खाने वाले शौकीन, बेधर्म को 'कायदे आजम' कहते हैं. मुस्लिम धर्म गुरुओं का कर्तव्य है कि संविधान तथा देश के कानूनों का अध्ययन कर सारे भारतीय मुसलमानों तक वह ज्ञान पहुचाएं. अपने आप सारे मसले हल हो जाएंगे.

इस देश के हर प्राकृतिक साधनों की रक्षा सभी देशवासियों की जिम्मेदारी है. अगर कोई नहीं जानता तो उसे बताना हम सभी की जिम्मेदारी है.

इसी तरह दुधारू तथा उपयोगी पशुओं में गाय, भैंस हमारे प्राकृतिक साधन हैं. सारी मानवता के लिए यही दो पशु दूध के स्रोत हैं. हमें इन नैसर्गिक साधनों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए. यह ईश्वर का वरदान तथा मानवता पर ईश्वर का उपकार है. पर हम जिस तरह इन पशुओं का कत्ल कर रहे हैं, अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है.

बड़े आश्चर्य की बात है कि अत्याचार करने में हिंदू, मुसलमान दोनों बराबर के दोषी हैं. मैं मुसलमान भाइयों से कहूंगा कि आप जिस तरीके से मांस का उपयोग कर रहे हैं, यह इस्लाम धर्म की शिक्षाओं का खुला उल्लंघन है. क्या कभी आपने पूरा कुरान पढ़ा है? समझा है? क्या आपने पैगम्बर मोहम्मद (स.) के खाने-पीने की हदीसों का ज्ञान हासिल किया है? क्या पैगम्बर मोहम्मद (स.) के जीवन को पढ़ा है? उनके ध्येय को समझा है? अगर आप इस्लाम जानते, तो इस तरह धरती के प्राकृतिक साधनों का

दुरुपयोग नहीं करते. इस्लाम के इस हिस्से को आपकी नजरों से दूर रखने में इस्लाम धर्म गुरु भी दोषी हैं.

कुछ बातें आपके लिए–

१) गाय के दूध को अनिवार्य कर लो यह लाभदायक है. इसके घी में औषधीय गुण हैं, इसके मांस मे रोग है. (हदीस शरीफ)

२) अपने दस्तरखान को हरे रंग (सब्जियों) से सजाओ (हदीस शरीफ)

३) अगर मेरी उम्मत को मेथी के गुण मालूम हो जाते तो सोने के भाव खरीदते (हदीस शरीफ)

४) खेतों से उपजे अन्न धान्य खाओ, मगर एतेदालसे (कु.श.)

५) वहां (स्वर्ग में) दूध और शहद की नदियां बहती रहेंगी (कुरान शरीफ)

इस्लाम धर्म के अनुसार मोर हलाल है, पर हमारे देश का राष्ट्रीय पक्षी है इसलिए भारतीय मुसलमान खा नहीं सकता. हिरण, चिंकारा हलाल है, परंतु हमारे देश में जंगली पशु जीव है इसलिए उसका शिकार कर खा नहीं सकते. इसी तरह गोवंश तथा दुधारू भैंस संविधान की धारा ४८ के तहत हम नहीं खा सकते. देश के हर राज्यों में जो कानून बनाए गए हैं उनके अनुसार हम गोवंश का वध कर खा नहीं सकते. मैं मुसलमान भाइयों से पूछता हूं कि आप सरकार के बनाए कानून के खिलाफ 'यह सब' कैसे कर सकते हैं. ऐसा करना कानून की नजर में 'अपराध' है.

मनुष्य समझता रहा है कि गोवंश तथा दुधारू, भैंसे खाने में रुकावट लाकर उस पर अत्याचार किया जा रहा है और वह यह भी समझ रहा है कि इन्हें खाना उसका न केवल धार्मिक अधिकार है, बल्कि पुण्य कार्य है. यह सोचना गलत है. हम ज्ञानी, बुद्धिजीवीयों का कर्तव्य है कि ज्ञान फैलाएं.

मैं विशेषकर इमामों, मौलविओं, उलेमाओं से उम्मीद करता हूं कि वह आगे आएं वह सब ज्ञानी बुद्धिजीवी होते हैं. इस बात के महत्व को समझ सकते हैं. मांस की आवश्यकता को किसी अन्य तरीके से सुलझाया जा सकता है.

भारत में एक मुस्लिम रह कर आदर्श नागरिक, आदर्श इंसान कैसे रहा जा सकता, देश सेवा कैसे की जा सकती है? गोमांस खाने से ही कोई मुसलमान नहीं कहलाता. भारत न 'दारुल कुफर' है, न 'दारुल हरब' यह तो 'दारुल दावा' है और भलाई का पैगाम पहुंचाइए, बल्कि कुरान ने आपको 'खैर-ए-उम्मत' कहा है तो खैर फैलाएं और 'खैर-ए-उम्मत' बनकर दिखाएं, हिदायत देने का कार्य अल्लाह का है.

मैं आपसे यह तो नहीं कह रहा कि सभी शाकाहारी हो जाएं. पर आप पूरे शाकाहारी होकर भी सच्चे मुसलमान हो सकते हैं. हमारा धर्म शाकाहारी होने से हमें नहीं रोकता. पैगम्बर हजरत मोहम्मद (स.) ने भी अपने जीवन में खाने को महत्व नहीं दिया जो मिल जाता खा लेते थे और बहुत थोड़ा खाते.

देश के नागरिक आपके दुश्मन नहीं हैं. यह तो आपके भाई ही हैं. उनसे प्रेम कीजिए उसी तरह जिस तरह हमारे पैगम्बर मोहम्मद

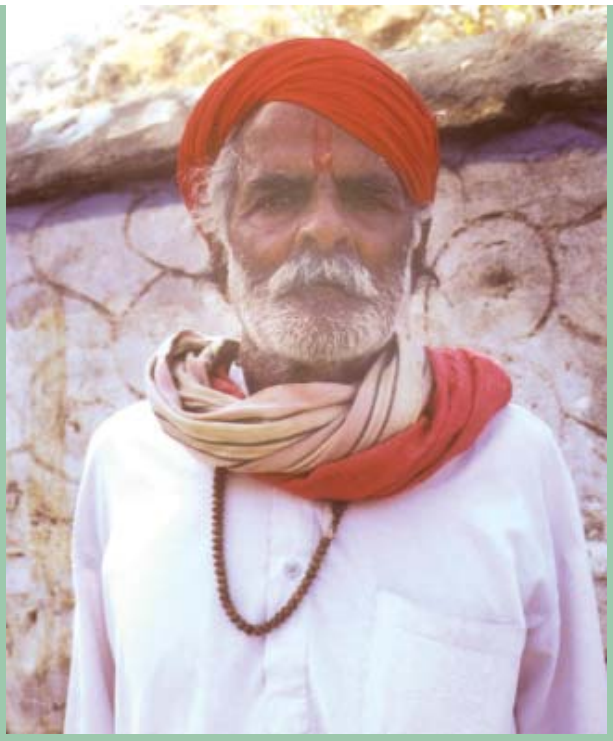

(स.) सबसे प्रेम करते थे. 'दीन खैर ख्वाही है' को अपनाएं.

'जमयतुल कुरैश' जिनका दावा है कि वह देश में ७ करोड़ हैं. मैं विनती करता हूं कि आप विचार-विमर्श करें. ईश्वर पालनहार ने आपको सिर्फ जानवरों को ज़बह करने के लिए पैदा नहीं किया है. फिर आप जिस तरह ज़बह करते हैं वह इस्लाम धर्म का खुला उल्लंघन है. फिर आप का जीवन कैसा है? आपका कारोबार भी कानून के हिसाब से 'अपराध' में शुमार होता है. मैं सभी इमामों, उलेमाओं विशेष मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के अधिकारीगण से अनुरोध करता हूं कि इस विषय में विचार-विमर्श हो. कुछ अच्छे निर्णय हों, सुख ही जीवन है, सुख ही स्वर्ग है. बिना सुख के सब नर्क है. हां मैं एक बात जरूर कह देता हूं कि नासमझी में गलती करना अलग है. समझने समझाने तथा ज्ञान हासिल हो जाने के बाद भी अपराध करना अच्छी बात नहीं है.

अगर आपने किसी तरह के धार्मिक, सामाजिक बुराइयों (विशेषकर उम्मुल ख़बाइस 'शराब' के विरुद्ध) दुधारू एवं गोवंश की हत्या, प्राकृतिक साधनों के दुरुपयोग, टैक्स चोरी, १०० फीसदी तालीमी बेदारी पर विचारात्मक तथा क्रांतिकारी रुख नहीं अपनाया, अपना कर्तव्य पूरा नहीं किया तो मुझे आपकी लापरवाही एवं जहालत के विरुद्ध जेहाद का एलान करना पड़ेगा.

दो शब्द हिंदू भाइयों से

महात्मा गांधी देश की आजादी के समय कहते थे 'देश की आजादी से ज्यादा महत्वपूर्ण गोवंश की हत्या समाप्त करना है.' बाल गंगाधर तिलक कहते थे 'देश आजाद होते ही एक पल में गोहत्याएं समाप्त कर दी जाएंगी' ऐसी ही हजारों साधु-संत, शंकराचार्यों और नेतागणों की इच्छाएं रही हैं. देश सेवा का मुख्य रास्ता दुधारू तथा गोवंश की रक्षा में निहित है. भारत को उन्नत कर विश्व में जगद्गुरु का स्थान प्राप्त करना है और इसकी बड़ी जिम्मेदारी आपकी ही बनती है.

आप 'पेट' से विचार न करें

देखिए, अमेरिका हमारे बहुत से आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है. हमारी सरकारी नीति भी वह तय कर रहा है, ईस्ट इंडिया कंपनी की तरह वह हमें फिर से अप्रत्यक्ष तौर पर गुलाम बना रही है.

गोवंश खतरनाक स्थितियों में पहुंच गया है. हर रोज सवा लाख गोवंश का वध घड़ल्ले से हो रहा है. कम आयु के कामधेनु खुलेआम काटे जा रहे हैं. प्रतिदिन गोवंश का अनुपात कम हो रहा है. दूध के स्रोत समाप्ति की कगार पर है. खेती को प्राकृतिक खाद नहीं मिल रहा है. इसलिए विषयुक्त अन्न खाना हमारी मजबूरी हो गई है. आप गाय को भूल रहे हैं और ऐसा समझ रहे हैं जैसे गोमाता को बचाने की जिम्मेदारी आपकी है ही नहीं. आप कितने भी आधुनिक हो जाएं दूध तो गाय का ही पीना होगा. अमेरिका की कोई कंपनी अपनी फैक्टरी में इसको नहीं बना सकती. कंपनियां पानी को बोतल में पैक कर के दूध जितना महंगा बेच रही हैं. आपको अन्न, फल सब्जियां खेती से उत्पादन करना होगा. बिना प्राकृतिक खाद के आप अच्छा अन्न ज्यादा समय तक नहीं उगा सकते. बिना गाय के आप अपनी खेती बंजर कर लेंगे और लाचार होकर आपको फिर से गुलाम होना होगा. फिर गुलामी निश्चित होगी. क्या आप अपने धर्म को गाय के बिना अधूरा महसूस नहीं करेंगे ?

अगर आप गाय का आदर एवं उसकी रक्षा नहीं करेंगे तो गाय यूं ही कत्ल खाने भेजी जाती रहेगी. आप सारा दोष मुसलमानों पर नहीं लगा सकते. मेरी नीति साफ है. मैं गोहत्यारों तथा मांस भक्षक समाज के लिए इस पत्रिका के माध्यम से वैचारिक आंदोलन छेड़ना चाहता हूं. मैं कम समय में समझाकर सैकड़ों मुसलमानों में जागृति ला चुका हूं. कसाइयों ने भी मेरा विचार समझ कर अपना धंधा बंद कर दिया है. इच्छा है कि जल्द से जल्द मेरे विचार सारे राष्ट्र फिर अन्य राष्ट्रों में भी फैलें.

इस पत्रिका के लिए सिर्फ प्रतिदिन २ रुपए के हिसाब से एक माह के ६० रुपए और दो वर्षों के लिए १५००/– रु शुल्क रखा गया है.

आप यह कह नहीं सकते कि पत्रिका महंगी है. Reader Digest, Debonar, कोई भी Auto Mobile, कोई भी कम्प्यूटर संबंधी मासिक आदि इस पत्रिका की तुलना में इससे महंगी हैं. यही नहीं, देश के एक उद्योगपति ने एक कैलेंडर छापा है, जिसकी कीमत एक लाख रुपए है. यूरोप, अमेरिका में कुत्तों पर कई मासिक पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं. फ्रांस से निकलने वाली मासिक Dog Gazzitte सबसे महंगी मासिक पत्रिका है.

फिर हमारी पात्रिका देश विदेश के कई इस्लाम धर्म गुरुओं, मदरसों, साधु–संतों आदि को नि:शुल्क वितरण करना है. इसके बगैर सत्य, कानून तथा गोवंश की स्थिति सही जानकारी बुद्धिजीवियों को कैसे पता चलेगी.

अगर आप एक सच्चे गो प्रेमी हैं, मन से चाहते हैं कि गोरक्षा हो तो जरूर सामने आएं. हमें सहयोग करें, दानदाता के रूप में विज्ञापनदाता के रूप में. हम वचन देते हैं कि हर १५०० रुपए पर एक गाय वध होने से बचायी जाएगी और आपको एक गाय को मौत के मुंह से बचाने का पुण्य मिलेगा.

यह न भूलें कि करोड़ों मुसलमान जब उनके जुबान के स्वाद और सैकड़ों वर्षों से अपनी परम्परागत खाद्य सामग्री से वंचित रह जाने का भय महसूस करेंगे तथा लाखों कसाई एवं शक्तिशाली 'मीट लॉबी' तथा मांस से जुड़े उद्योगपतियों के धंधों पर प्रतिकूल परिणाम होगा तो वह हमारे परिवार के जानी दुश्मन हो जाएंगे. हम यह आशा रखते हैं कि गो हत्यारों के हाथों शहीद हो गए तो हर शहर में शोक मनाया जाए और उस दिन को गोरक्षा दिवस के रूप मे मनाया जाए.

हां आप 'पेट' से विचार न करें. इसे गंभीरता से लेकर देश तथा गाय की रक्षा में आगे आकर अपना दायित्व पूरा करें. मुसलमान यह न कहें कि गाय तो हिंदुओं की माता नहीं है. क्या कोई माता को इस तरह कत्ल होने के लिए छोड़ देता ?

हमारी क्रिकेट टीम चैंपियन है. एक से एक धुरंधर खिलाड़ी देश में हैं. २०–२० का पहला वर्ल्ड कप बिना किसी कोच के जीत लिया. देश में देशी कोच हैं फिर भी विदेशी कोच को करोड़ों रुपए देकर रखा जाता है. विदेशी कोच की क्या आवश्यकता है ? हमें समझ में नहीं आता किंतु खिलाड़ी इसको अच्छी तरह समझ सकते हैं.

आप अपने व्यवसाय के लिए न जाने कितने भिन्न–भिन्न कार्यालयों के कर्मचारियों, अधिकारियों को कितने ही रुपए लुटा देते हैं. लोग छोटे–छोटे चुनाव में लाखों रुपए खर्च कर देते हैं. मगर अपनी गो माता के लिए आप क्या कर रहे हैं? आप की इसी उपेक्षा के कारण आज हजारों, लाखों की संख्या में गाय का कत्ल हो रहा है.

देश में गो संर्वधन, गो महिमा पर छोटी–छोटी चार मासिक पत्रिकाएं हैं, किंतु यह कहते हुए हमें गर्व हो रहा है कि यह पत्रिका गोहत्या विरोधी आंदोलन की पहली पत्रिका है. जो आपको आपके रोजाना खानपान में गाय की चर्बी के उपयोग से भी सतर्क कराती रहेगी. दरअसल हम अनजाने में अपने खानपान में रोजाना गाय की चर्बी तथा उसके अंगों को खा रहे हैं. यही कारण है कि हम गाय को नहीं बचा पा रहे हैं.

'वह' पत्रिका कहां है ?

ऋषि-कृषि प्रधान देश में लाखों की संख्या में मासिक पत्रिकाएं छपती और बेची जाती हैं. इन पत्रिकाओं की कीमत पचास रुपए से दो सौ रुपए तक होती है, लेकिन गोहत्या विरोधी विषय पर वर्तमान में कोई पत्रिका नहीं है!

गंभीर

गोवंश का कत्ल, देश की अर्थ व्यवस्था का कत्ल!

भारत में गाय अपनी उपयोगिताओं के कारण आर्थिक इकाई के रूप में जानी जाती रही है. इसीलिए किसी भी व्यक्ति की समृद्धि उसके सोने-चांदी, भवन, जमीन आदि के बजाए उसके पास उपलब्ध गोवंश की संख्या से आंकी जाती थी. गौवंश को गोधन कहा जाता है. ऐसा चेतन धन जो लगातार गुणात्मक रूप से बढ़ता जाता है.

थोड़ी सी विदेशी मुद्रा के लोभ में इसे नष्ट करने का फल हुआ कि **''सोने की चिड़िया''** कहलाने वाला समृद्ध भारत आजकल विश्व के सर्वाधिक कर्जदार देशों में प्रमुख स्थान पर है. जैसे-जैसे गोवंश कटता गया भारत की गरीबी, महंगाई और कर्ज बढ़ता गया.

अपने रीति-रिवाजों पर, जिसको कोई अभिमान नहीं
जहां गायें कटतीं लाखों में, वो मेरा हिंदुस्तान नहीं.

साहिब हमें न दीजिए, ये अमरीकी ज्ञान
बदले में ले जाय जो, मेरा हिंदुस्तान
– हरजिंदर सिंह सेठी

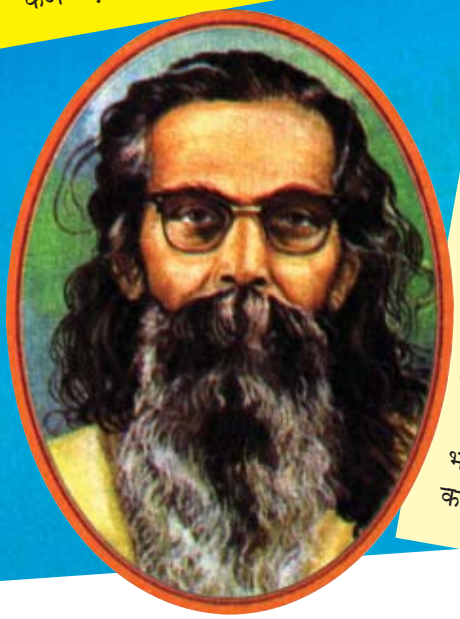

श्री गुरुजी और गोरक्षा

– विजय कुमार

भगवान श्रीकृष्ण तो स्वयं गोपाल थे. आज गोरक्षा का अर्थ केवल कसाइयों से गाय की रक्षा करना मात्र नहीं, अपितु गो संरक्षण एवं संवर्धन भी है. मनुष्य का खाना-पीना जिस पर निर्भर है, वह कृषि जिस पर निर्भर है, वह गोवंश, संपूर्ण दृष्टि से संबंधित होना आवश्यक है. उनके पोषण की चिंता करना और गोवंश की हत्या बंद हो, इसके लिए सभी प्रकार के प्रयत्नों की आवश्यकता है. सरकारी तौर पर कानून बनाकर, उसकी हत्या के लिए कड़े दंड का प्रबंध करते हुए हत्या बंद करना नितांत आवश्यक है.

श्री गुरुजी कहते थे कि गोरक्षा केवल हिंदुओं का विषय नहीं है. गाय मातृत्व भाव से सभी प्राणियों का पालन करती है. अत: गोरक्षा अभियान में मुसलमानों का भी सहयोग लेना चाहिए.

१८५७ की क्रांति के मूल में भी गोहत्या का विरोध ही था. कारतूस में गाय की चर्बी लगाने के विरोध में क्रांतिकारी शहीद मंगल पांडे ने सशस्त्र विद्रोह करके गोहत्यारे अंग्रेजों को मौत के घाट उतार कर स्वतंत्रता संग्राम का बिगुल बजा दिया था.

देश के सामाजिक एवं राजनैतिक उद्धार में लगे सभी महामानवों ने एक स्वर से गोहत्या बंदी और गो संवर्धन पर बल दिया था.

स्वतंत्रता संग्राम में लगे नेताओं की स्पष्ट घोषणा थी...
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संपूर्ण देश में पूरी तरह से गो हत्या बंद कर दी जाएगी!

आदर्श राम राज्य की परिकल्पना को साकार करने के लिए महर्षि वशिष्ठ ने राजा दिलीप को गोसेवा का निर्देष दिया. 'नंदिनी' गाय की सेवा एवं रक्षा के लिए अपने जीवन को दाव पर लगाने का आदर्श स्थापित करके राजा दिलीप ने अपने कुल में ''रामावतार'' का सौभाग्य पाया.

CMYK

Few questions I am often asked are, what are E Numbers? And what are the hidden animal ingredients in food & cosmetics? Is it suitable for vegan or is it halal for Muslims?

It can seem quite easy to make the switch to an animal free lifestyle and mostly that is true but if you're determined to keep animal products out of your diet there are some things you need to bear in mind to ensure you spot the hidden animal ingredients lurking on the supermarket shelves.

With the change in life pattern the people are more dependent on fast food and ready to eat (processed) food or ready to use ingredients.

Hidden Animal Ingredients in Food, Cosmetics and Pharmaceuticals

Mohammed Abdul Hai

During processing different additives are being added to improve or maintain the required quality of final product. These additives may be food colors, preservatives, antioxidants, phosphates, thickeners, gelling agents, humectants, emulsifiers, flavor enhancer etc.

The source of these additives may be plant, animal, micro organism and / or synthetic.

E numbers are codes for food additives and are usually found on food labels throughout the European Union. E numbers are universally adopted by the food industry worldwide, also encountered on food labeling in other jurisdictions.

It is known that many E numbers contain unlisted

CMYK

ingredients in them generally additives derived from animals and insects not suitable for vegetarians, vegans or other group each religious Muslim, Jew and Hindu.

The details are as follows.

E100-E199 (colours)
E200-E299 (preservatives)
E300-E399 (antioxidants, acidity regulators)
E400-E499 (thickeners, stabilizers, emulsifiers)
E500-E599 (acidity regulators, anti-caking agents)
E600-E699 (flavour enhancers)

E900-E999 (miscellaneous)
E1000-E1999 (additional chemicals)

But what many people may be unaware of, however, is the vast number of animal ingredients HIDDEN in everyday products being labeled with barely-decipherable chemical names.

Hidden animal ingredients may not be visible to the naked eye. They may be hard to detect on a product label and even harder to taste. They may not be as viscerally repugnant as a chicken on a rotisserie or a leg of lamb. Nonetheless, they are animal products, and we owe it to the animals who suffer for human palates to do our best to avoid them.

It is mandatory to declare the name and/or no. of food additives on the label. There are thousands of technical and patented names for ingredient variations. Furthermore, many ingredients known by one name can be of animal, vegetable, or synthetic origin. But yet it is not mandatory to declare the source of the additive on label.

And if that's not confusing enough, some companies have slyly removed the word "animal" from their labels in order to avoid turning off -consumers. For example, instead of saying "hydrolyzed animal protein," companies may use a term like "hydrolyzed collagen."

Animal ingredients are used not because they are better than vegetable-derived or synthetic ingredients but rather because they are generally cheaper. Today's slaughterhouses must dispose of the byproducts of the slaughter of billions of animals every year and have found an easy and profitable solution in selling them to food and cosmetics manufacturers.

Animal ingredients come from every industry that

Hidden animal ingredients may not be visible to the naked eye. They may be hard to detect on a product label and even harder to taste. They may not be as viscerally repugnant as a chicken on a rotisserie or a leg of lamb. Nonetheless, they are animal products, and we owe it to the animals who suffer for human palates to do our best to avoid them.

uses animals: meat, fur, wool, dairy, egg, and fishing, as well as industries such as horse racing and rodeo, which send unwanted animals to slaughter.

Most of the hidden animal products you are likely to encounter are ingredients that pop up in every day foodstuffs. The problem is some of them are in much unexpected places.

e.g. Cheese, it is most commonly used dairy product

particularly with pizza and other fast food.

For the manufacture of cheese an enzyme "rennet" is required which can come from animals, vegetables, or micro-organisms.

Traditionally rennet is obtained from the stomach region of a suckling mammal, usually a calf or lamb. As mentioned, this is the traditional way to make cheese; moreover it is cheaper source, nearly all European cheeses use animal rennet.

Some animal ingredients do not wind up in the final product but are used in the manufacturing process. For example, in the production of some refined sugars, bone char is used to whiten the sugar; in some wines and beers, isinglass (from the swim bladders of fish) is used as a "clearing" agent.

If I will ask you, are Cow Brains Lurking in Your Lipstick?

You're probably thinking, "I hope not! "-but how can you be sure?

The Food and Drug Administration told cosmetics makers to stop using the brains and spinal cord tissue from older cows in products like lipstick and hair spray in order to try to prevent the spread of mad cow disease to humans.

Ready for the bad news? These same icky ingredients are "OK" if they come from cows younger than 30 months of age.

Cosmetics companies (Soap, Tooth paste, lipstick etc.) use animal ingredients such as tissue and tallow (fat) because they're cheap, not because they're better than plant-based or synthetic ingredients. Previously animals were being slaughtered for meat but now a days meat has become the by product of these industry and much more amount as compare to meat is generated by selling blood, bones, skins and tallow (fat) etc., e.g.

Blood - to pharmaceutical industry

Bones - to pharmaceutical and chemical / food industry

Skin - to leather industry

Tallow (Fat) - to manufacture emulsifier and to cosmetic industry.

Not eatables - to cosmetic industry

Hence if we will say that the meat is the by product of meat industry will not be wrong.

But unfortunately, all these animal products may come to the life of the people who don't want to touch these products, through hidden ingredients. Even avid label-readers can't always determine what they're putting on and in their bodies.

Thousands of products on store shelves have labels that are hard to decipher. It's nearly impossible to be perfectly vegan, but it's getting easier to avoid products with animal ingredients. Below list will give you a good working knowledge of the most common animal-derived ingredients, allowing you to make decisions that will save animals' lives.

Ingredient	What It Is	Its Use
Albumin	The protein component of egg whites. Albumin is also found in animal blood,milk, plants, and seeds.	To thicken or add texture to processed foods.
Anchovies	Small, silvery fish of herring family.	Worcestershire sauce, Caesar salad dressing, pizza topping, Greek salads.
Animal shortening	Butter, suet, lard	Packaged cookies and crackers, refried'beans, flour tortillas, ready-made pie crusts.
Carmine (carmine,cochineal, or carminic acid)	Red coloring made from a ground-up insect.	Bottled juices, colored pasta, some candies, frozen pops, "natural"cosmetics.
Calcium stearate	Mineral typically derived from cows or hogs	Garlic salt, vanilla, meat tenderizers, salad-dressing mixes.
Capric acid (decanoic acid)	Animal fats	Added to ice cream, candy, bakedgoods, chewing gum, liquor and often not specified on ingredients lists.
Casein (caseinate)	A milk protein. It coagulates with the addition of renin and is the foundation ofCheese	'An additive in dairy products such as cheese, cream of cheese, cottage cheese and sour cream. Also used in adhesives, paints, and plastics.
Clarifying agent	Derived from any number of animal sources.	Used to filter wine, vinegar, beer, fruit juice, soft drinks.
Gelatin	Protein from bones, cartilage, tendons, and skin of animals, Much of the commercial gelatin is a by-product of pig skin.	Marshmallows, yoghurt, frosted cereals, gelatin - containing desserts,molded salads.
Glucose (dextrose)	Fruits or animal tissues and fluids.	Baked goods, soft drinks, candies,frosting.
Glycerides (mono,di, and triglycerides	Glycerol from animal fats or plants.	Processed foods, cosmetics, perfumes,lotions, inks, glues, automobile antifreeze. Used as emulsifier.
Isinglass	Gelatin from air bladder of sturgeon and other freshwater fish.	Clarify alcoholic beverages and insome jellied desserts.
Lactic acid	Acid formed by bacteria acting on the milk sugar lactose. Imparts a tart flavor.	Cheese, yogurt, pickles, olives, sauerkraut, candy, frozen desserts,chewing gum, fruit preserves, dyeing and textile printing.

Lactose (saccha-rumlactin, D-lactose	Milk sugar.	Culture medium for souring milk and in processed foods such as baby formulas, candies and other sweets, medicinal diuretics, and laxatives.
Lactylic stearate	Salt of stearic acid	Dough conditioner.
Lanolin	"Waxy fat from sheep's wool.	Chewing gum, ointments, cosmetics, waterproof coatings.
Lard	Rendered and clarified pork fat. Often fat from abdomens of pigs or the fat around the animal's kidneys.	Baked goods.
Lecithin	Phospholipids from animal tissues, plants, lentils, and egg yolks used to preserve, emulsify, and moisturize food.	Cereal, candy, chocolate, baked goods, margarine, vegetable oil sprays, cosmetics, and ink.
Lutein	Deep yellow coloring from marigolds or egg yolks.	Commercial food coloring.
Myristic acid (tetra-decanoic acid)	Animal fats.	Chocolate, ice cream, candy, jelled desserts, baked goods.
Natural flavorings	Unspecified, could be from meat or other animal products.	processed and packaged foods.
Oleic acid (oleinicacid)	Animal tallow	Synthetic butter, cheese, vegetable fats and oils, spice flavoring for baked goods, candy, ice cream, beverages, condiments, soaps & cosmetics.
Palmatic acid	Animal or vegetable fats.	Baked goods, butter and cheese flavoring.
Pancreatin (pancr-eatic extract)	Cows or hogs	Digestive aids.
Pepsin	Enzyme from pigs' stomachs	With rennet to make cheese.
Propolis	Resinous cement collected by bees	Food supplement and ingredient in"natural" toothpaste.
Rennin (Rennet)	A coagulating enzyme obtained from a young animal's stomach, usually a calf's stomach	Rennin is used to curdle milk in foods such as cheese and junket (a soft pudding like dessert.)
Royal jelly	Substance produced by glands of bees.	"Natural foods" and nutrient supplements.
Sodium stearoyl lactylate	May be derived from cows, hogs, animal milk, or vegetable-mineral sources.	Used in cake, pudding, or pancake mixes, baked goods, margarine.
Stearic acid (octa-decenoic acid)	Tallow, other animal fats and oils	Vanilla flavoring, chewing gum, baked goods, beverages, candy, soaps, ointments, candles, cosmetics, suppositories and pill coatings.

Suet	Hard white fat around kidneys and loins of animals	Margarine, mince meat, pastries, birdfeed, tallow.
Tallow	Solid fat of sheep and cattle separated fromthe membranous tissues	Waxed paper, margarine, soaps, crayons, candles, rubber, cosmetics.
Vitamin A (A1, retinol)	Vitamin obtained from vegetables, egg yolks, or fish liver oil.	Vitamin supplements, fortification of foods, "natural" cosmetics.
Vitamin B12	Vitamin produced by microorganisms and found in all animal products; synthetic form (cyanocob-alamin or cobalamin on labels) is vegan	Supplements or fortified foods.
Vitamin D (D1, D2, D3)	D 1 is produced by humans upon exposure to sunlight; D2 (ergocalciferol) is made from plants or yeast, D3 (cholecalciferol comes from fish liver oils or lanolin	Supplements or fortified foods.
Whey	Watery liquid that separates from the solids(curds) of milks in cheese-making,	Crackers, breads, cakes, proce - ssed foods in cheese - making.

But what to do now after knowing all these;

- Take it easy and let's go the thing as it is going
- Just keeping quite
- Try to avoid these ingredients
- Wake up and convey the message to all who don't know these facts

■ **Through this magazine we are trying to make people aware of it and in coming issues we will try to provide the list of the products available in our market which is to be avoided after consulting the concern industry.**

■ **With your help we will start a campaign to force the government for ethical labeling of these products. Where it will mandatory for all manufacturer to declare the source of ingredient they are using and they should get a certificate from an NGO regarding it's authenticity.**

■■

दारूल उलूम देवबंद को पत्र

आतंकवाद, गोहत्या, देश प्रेम अन्य ज्वलंत प्रश्नों को ध्यान में रखकर हर महीने एक पत्र इस पत्रिका के माध्यम से देश में मुसलमानों के बड़े मदरसों, बड़े धार्मिक व्यक्तित्व (इमाम, मौलवी, उलेमा–ए–इस्लाम) तथा विदेश में किसी एक मुस्लिम देश के शासक को लिखा जाता रहेगा. आप केवल अपना पूरा नाम पता लिखकर उन्हें पोस्ट करें.

पहला पत्र देश की सबसे बड़ी मुस्लिम संस्था ''दारूल उलूम देव बंद'' को लिखा जा रहा है.

इसे भेज कर मासिक को SMS - 09423139152 के माध्यम से मालूम करें ताकि हमें पता चले कि कितने पत्र संस्था को भेजे गए हैं.

आदरणीय मोहतमीम -ए- आला एवं अन्य सभी पदाधिकारी उलेमा-ए-दीन.

दारूल-उलूम, देवबंद, यू.पी.

आदर पूर्वक आदाब,

हम जानते हैं कि देश की आजादी के लिए अनगिनत उलेमाओं ने प्राणों की आहुति धर्म एवं कर्तव्य समझकर दी. आज देश को आपकी जरूरत है. देश आपके कर्तव्य को पुकार रहा है, कई महत्वपूर्ण ज्वलंत प्रश्न हैं, जिन्हें सुलझाने में आपके सहयोग की नितांत आवश्यकता है.

१) देश आतंकवाद के साये में भयभीत है. मासूम जीवों का कत्ल आम हो रहा है. किसी खानदान का मुखिया मारा जा रहा है.

किसी घर की मां मारी जा रही है. इन पर निर्भर मासूम बच्चे अब कैसे जीवन बिताएं? कई मां-बाप के लाड़ले शहीद हो रहे हैं. इस कत्ल से अर्श (आसमान) कांप रहा है. आप सब भी मानवता हित में चुप रहेंगे? नहीं. आंतकवाद के खिलाफ आपको अपना कर्तव्य निभाना ही होगा.

२) कुरान ने मुसलमानों को 'खैर-ए-उम्मत' कहा है, आप को खैर (अच्छाई) फैलाना ही होगा. आपसे ईश्वर यह इच्छा रखता है.

तो फिर सारी बुराइयों को रोकने आप सब क्या कर रहे हैं? हमने आपको बुराइयों के खिलाफ 'तहरीक' खड़ा करते देखा ही नहीं. क्या आप सब ने कुरान की शिक्षाओं पर चलना छोड़ दिया है? तो फिर खैर फैलाइए न, जैसा कि कुरान आपसे इच्छा रखता है.

३) देश प्रेम कैसा होना चाहिए? हम कुछ कहते हैं तो बदनाम हो जाते हैं. यह विश्व का नियम है. जब हम किसी देश की नागरिकता स्वीकार करते हैं, तो उस देश के संविधान का पालन करना हमारा फर्ज हो जाता है. चाहे क्रिकेट मैच ही क्यों न हो. भारत में रहकर पाकिस्तान के पक्ष में रहना ईश्वर को भी पसंद नहीं है. कृपया देशवासियों को देश प्रेम का पाठ सिखाएं.

४) भारत में मुसलमान समुदाय शिक्षा क्षेत्र में पिछड़ा हुआ है. समाज को शिक्षा ग्रहण करने से किसने रोका है? सरकार भी सर्व शिक्षा पर जोर दे रही है. ईश्वर ने पैगम्बर मोहम्मद साहब (स.) को कुरान की शुरुआत ही पढ़ने के आदेश से की है. फिर आप कुरान की बातें क्यों नहीं मानते? सारी उम्मत को पढ़ाइए. देश में केवल अपने अधिकार मांगते हो. अपने कर्तव्यों के बारे में भी विचार करें? देश के लिए अपने कर्तव्यों को पूरा करना, कुरान का पालन करने जैसा ही है.

५) देश के संविधान का पालन करना क्या मुसलमानों का कर्तव्य नहीं है? इस विषय में जागृति लाएं.

६) अ) मोर कुरान के अनुसार हलाल पक्षी है, परंतु राष्ट्रीय पक्षी होने के कारण आप इसे ज़बह नहीं करते.

ब) हिरण, चिंकारा, सांभर, नील गाय तथा अन्य वन्य प्राणी भी हलाल प्राणियों की सूची में हैं, परंतु जागृति आई है आप इन्हें भी ज़बह नहीं कर रहे हैं. ऐसा करना वन्य प्राणी (सुरक्षा) अधिनियम १९७२ के तहत अपराध होगा.

क) इसी तरह गाय, दुधारू तथा उपयोगी भैंसे, बछड़े, बछियां भी संविधान की धारा ४८ के तहत तथा विभिन्न राज्यों के बनाए हुए कानूनों के अनुसार इन्हें ज़बह नहीं किया जा सकता. इन्हें खुले आम तथा छुपकर ज़बह करना अपराध माना गया है. हम मानते हैं कि कुरान के ''सूरा अनआम'' के आयत १४२, १४४ के अनुसार यह आपके लिए हलाल है. कानूनन अपराध माना गया कार्य करने की इजाज़त कुरान भी नहीं देता. यह चिंतन का गंभीर विषय है. आप इस ओर ध्यान देकर अपना कर्तव्य पूरा करें.

ड) कुरान ने आपको इसी 'सूरा अनआम' में खेतों, बागों से उपजे पदार्थ का उपयोग करने का आदेश नहीं दिया? 'सूरे रहमान' में बार-बार आपसे नहीं पूछा गया कि 'फिर किस-किस नेमतों को झूठलाओगे?' क्या आप बता सकते हैं कि इन नेमतों की सूची में सब्जियां और अन्न-धान्य नहीं आते?

इ) रहमतुल आलमीन कहे जाने वाले पैगम्बर मोहम्मद साहब (स.) ने आपको अपना जीवन चरित्र दिखलाया है. क्या इतनी बेरहमी से पशु-पक्षियों की हत्या करने की इजाज़त

दी है ? जहां तक हमें मालूम है पशुओं के ज़बह के लिए बहुत से नियम कुरान एवं हदीस में बतलाए गये हैं. क्या आप सब उसका पालन कर रहे हैं ? हमारा दावा है 'नहीं'. आप सब ही इसकी अनदेखी कर अपने धर्म के नियमों का उल्लंघन करने के दोषी हैं. आप अपने कर्तव्य और जिम्मेदारी का पालन करें.

अनेक विषय में हम ऐसा अनुभव कर रहे हैं कि मुसलमान कुरान की शिक्षाओं पर कारबंद नहीं है. इसका अर्थ यह तो नहीं कि अपराधी जीवन बिताकर मुसलमान अपने देश, अपने धर्म, अपने समाज तथा मानवता को हानि पहुंचा रहे हैं ? देश के साथ-साथ पर्यावरण, मानवता, स्वयं, समाज और धर्म का आदर कर सुखी रहें, देश को सुखी रखने में आप अपना योगदान दें.

उक्त सभी प्रश्नों के उत्तर और अपने विचार इस मासिक के पते पर भिजवाएं, ताकि हम इसे पढ़कर जानकारी हासिल कर सकें कि 'उलेमा-ए-दीन' कुरान का पालन करने के लिए कितने तत्पर हैं. आशा है कि आप सच का साथ देकर धर्म का पालन करेंगे. हम सभी इस धरती पर ईश्वर पालनहार की भक्ति करने के लिए ही पैदा हुए हैं. इन्हीं आशाओं के साथ.

उत्तर पत्र इस पते पर भेजने की कृपा करें.

संपादक
तेजस्वी गोमाता-ओजस्वी भारतमाता
२४४/३१ लेबर कॉलोनी,
नांदेड़ (महाराष्ट्र)
४३१६०२

यह अवैध मांस विक्री दुकानें और गायों तथा गोवंश का अवैध तकलीफ दे परिवहन...

क्या देश का कानून तोड़ने और प्राणियों पर इस तरह अत्याचार करने की इजाज़त इस्लाम देता है ?

मानव को कुरान का संदेश

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह (ईश्वर) के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील और दयावान है.

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ

तुम उत्तम समुदाय हो, जो लोगों में पैदा हुए,

تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ

भलाई का हुकुम देते हो और बुराई से रोकते हो,

عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ط

और अल्लाह (ईश्वर) पर ईमान (आस्था) रखते हो.

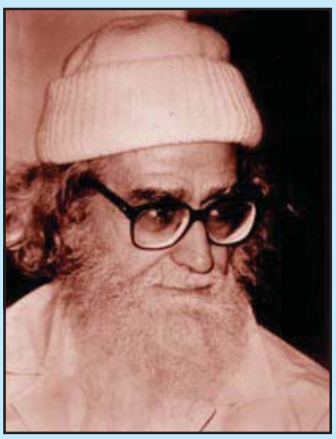

मौलाना वहीदोद्दीन खान, भारत

डॉ. जाकिर नाईक, भारत

कुरान के चार 'हराम'

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह (ईश्वर) के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील और दयावान है.

اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ

उसने तुम पर केवल

الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ

मुरदार को, खून को, सुअर के मांस को और जिस पर अल्लाह (ईश्वर) के अलावा
किसी और का नाम लिया गया हो, हराम ठहराया है.

यह विषय कुरान में चार जगह आया है.
१) सुरे बखर, १७३. २) सूरे मायदा, ३. ३) सूरे अन आम, १४५ और ४) सुरे नहल, ११५

अल्लमा यूसुफ अल खर्जावी, मिस्र
अध्यक्ष, इंटरनेशनल उलेमा काउंसिल

फतवा

जहां नुक्से अमन (अशांति) का अंदेशा (आशंका) हो, वहां गाय की कुर्बानी नहीं करनी चाहिए.

ख्वाज़ा गरीब नवाज़ (रहे)

KGN

ख्वाज़ा मोईनोद्दीन चिश्ती (रहेमतुल्ला अलय) वह महान व्यक्ति थे जिन्होंने भारत में भलाई (खैर) फैलाने तथा एकता का ऐसा माहौल बनाया था कि सैकड़ों वर्षों बाद आज भी हिंदू और मुसलमान उनके आस्ताने पर श्रद्धा से हाजरी देते हैं.

उनके मानने वालों का यह कर्तव्य बनता है कि उनके उद्देश्य को आगे बढाएं और देश में भलाई फैलाने तथा एकता का वैसा ही माहौल बनाएं और इसके लिए हृदय से प्रयत्नशील रहें. प्रेम और एकता के साथ जीवन बिताना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिए. देश के इस अशांति युग में ख्वाज़ा गरीब नवाज़ के विचारों की अत्यंत आवश्यकता है.

क्या आप जानते नहीं हैं कि ख्वाज़ा गरीब नवाज़ शुद्ध शाकाहारी थे.

गो माता की दुर्दशा !

विकसित देशों का एक खुला षड्यंत्र है, अपने प्राकृतिक स्रोतों को सुरक्षित रखते हुए विकासशील देशों के विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों को शोषण, दोहन करना. भारत की ऊर्जा, आरोग्य, कृषि, अर्थ और सांस्कृतिक की पहचान उसके पशुधन से है. विकसित देश इस संपदा को विदेशी मुद्रा के नाम पर नष्ट करना चाहते हैं. हमारी केंद्रीय सरकार का भी देश के भविष्य का विचार किए बिना एकमात्र लक्ष्य है विदेशी मुद्रा प्राप्त करना और इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए मांस निर्यात को बढ़ावा दिया जा रहा है. सरकार के इसी व्यवहार के कारण देश में पशुओं की अपूरणीय क्षति हो रही है और भारत में क्रूरता प्रतिष्ठित हो रही है. गांधीजी के देश में अहिंसा की सरेआम हत्या की जा रही है.

मांस निर्यातक कत्लखाने

हमारी बर्बादी के कारण

मांस निर्यातक कत्लखानों में एक बड़े पशु काटने पर ५०० लीटर पानी लगता है. (हिंदुस्तान टाइम्स १ अप्रैल १९९४)

कोलकाता (मोरी ग्राम) में स्थित मांस निर्यातक कत्लखाने में प्रतिदिन १७ लाख ५० हजार (१७,५०,०००) लीटर पानी लगता है.

एक व्यक्ति को औसतन २५ लीटर पानी की आवश्यकता होती है. अर्थात् एक कत्लखाना ७० हजार लोगों का पानी नष्ट कर देता है.

मुंबई (देवनार) कत्लखाने को प्रतिदिन लगभग १८ लाख ५० हजार (१८,५०,०००) लीटर पानी की आवश्यकता होती है. (प्रति शनिवार को पशुओं की काटने की संख्या दोगुनी होती है.) अर्थात् ७२ हजार लोगों का पानी प्रतिदिन यह कत्लखाना बर्बाद करता है.

अलकबीर एक्सपोर्ट लि. हैदराबाद (रुद्राम) कत्लखाना एक शिफ्ट में ६,६०० पशु काटता है. यह कत्लखाना प्रतिदिन १ लाख ३२ हजार लोगों का पानी नष्ट कर देता है.

आज देश में गाय का दूध १६ से २० रुपए प्रति लीटर एवं भैंस का दूध २० से २५ रु. लीटर मिलता है और पानी की एक बोतल १० से १२ रु. मिल रही है. गाय के दूध से महंगा आज पानी है. प्रति वर्ष पड़ने वाला अकाल, सूखा यह बता रहा है कि मनुष्य के लिए आने वाला समय पानी के रूप में कितनी भयंकर

हुकमचंद सांवला
केंद्रीय मंत्री, विश्व हिंदू परिषद, (गोरक्षा)

समस्या लेकर आ रही है. विदेशी मुद्रा से अधिक आज गरीब से गरीब व्यक्ति के लिए पानी पहली आवश्यकता है. आने वाले समय में पानी को लेकर विश्वयुद्ध हो सकता है. आज मनुष्य को जीने के लिए मांस से अधिक पानी की आवश्यकता है.

१९८१-८२ में देवनार कत्लखाने में २६ लाख ४१ हजार १ सौ १७ पशु काटे गए. इसमें १ लाख २० हजार ६ सौ ५६ बैल हैं. यह समस्त पशु यदि जीवित रहते तो इनका मूल्य १ अरब

१७ करोड़ ७० लाख ४० हजार रु. होता. इस कत्लखाने में १६६० कर्मचारी कार्यरत हैं. इन पशुओं को पाल कर १६ हजार १ सौ २७ अर्थात् इतनी बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार मिलता, यानी इतनी बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हो गए.

अलगबीर कत्लखाने में ३०० कर्मचारी कार्य करते हैं. अगर वहां कटने वाले पशु बचते तो ३ लाख ८ हजार लोगों को रोजगार मिलता. यह कत्लखाने भारत में बेरोजगारी और युवकों को सड़क पर भटकने के लिए मजबूर कर रहे हैं.

भारत सरकार २ हजार करोड़ रुपए का मांस निर्यात करती है और अरबों रुपए की पशु संपदा नष्ट कर रही है. जंगल के कटने पर वृक्षों को पुन: लगाया जा सकता है, किंतु पशु संपदा के नष्ट होने पर फिर से चार पैर वाले पशुओं को पैदा नहीं किया जा सकता. आज पशुओं और गायों की कई मूल्यवान नस्लें समाप्त हो चुकी हैं और कई समाप्ति की कगार पर हैं.

कत्लखानों से निकलने वाला अनउपयोगी रक्त, मांस, रसायन, पानी व पशुओं के छोटे-मोटे अंगों को नदी और तालाबों में बहाया जा रहा है. ईदगाह कत्लखाने दिल्ली का हजारों लीटर पानी (वेस्ट) यमुना नदी में डाला जाता है. प्रदूषण फैलाने का बहुत बड़ा कार्य यह कत्लखाने कर रहे हैं.

भारत में २८ प्रतिशत बड़ी जोत के किसान हैं. ७२ प्रतिशत किसान, मजदूर ग्रामों से पलायन कर शहरों की झुग्गी-झोपड़ियों में नरकीय जीवन जीने को मजबूर हैं. शहरों में बेरोजगारी के कारण अपराध बढ़ रहे हैं और कृषि में लगने वाली सामग्री महंगी होने के कारण कृषि उपज का उत्पादन मूल्य अधिक हो गया है. फसल की पैदावार कम होने के कारण किसान आत्महत्या करने को मजबूर हैं.

१९९२ में विश्व बैंक के दो अधिकारी कार्टर ब्रेडन और क्रिस्टन होम्मन ने एक रिपोर्ट में भारत के संदर्भ में विश्व बैंक को **''निष्क्रियता का मूल्य''** दिया गया शीर्षक है . रासायनिक खाद, डीजल गाड़ियों के कारण प्रदूषण बढ़ा है. इससे प्रति वर्ष ३४ हजार करोड़ की हानि हो रही है. वायु और जल प्रदूषण से २४ हजार ५०० करोड़ की हानि (भूमि की गुणवत्ता में ४ से ६.३ प्रतिशत की गिरावट आई है, जिसकी कीमत ४ हजार ४०० करोड़ रु. होती है) तथा वन कटाई से भूमि खराब होने से कुल ९ हजार ४५० करोड़ रु. की हानि अभी तक हुई है. वायु प्रदूषण से ४० हजार मौतें प्रति वर्ष होती हैं. वन कटाई के कारण वायु में कार्बन-मोनो ऑक्साइड, सल्फर-डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन-डाई ऑक्साइड जैसी विषैली गैसों की मात्रा बढ़ रही हैं. रासायनिक खादों के कारण विश्व की भूमि पर ६ प्रतिशत नाइट्रो-ऑक्साइड बढ़ा है, परिणामस्वरूप तापमान बढ़ रहा है. भारत को सुदृढ़ करने के लिए सभी पहलुओं पर विचार करने पर पशुपालन जैविक कृषि और गोवंश की रक्षा ही उत्तम उपाय है.

-जया गोमाता

गंभीर गंभीर गंभीर गंभीर गंभीर

एक गाय के दूध से ३,७४,८०० मनुष्य तृप्त होते हैं. गोरक्षा और गोसंवर्धन से शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति संभव है.

- महर्षि दयानंद सरस्वती

अंदर भी हो स्वदेशी, बाहर भी हो स्वदेशी
कानून हो स्वदेशी, सरकार हो स्वदेशी
आहार हो स्वदेशी, रोजगार हो स्वदेशी
देना हो जब किसी को, उपहार हो स्वदेशी

-पंडित रामकृष्ण पांडेय

जले रहना मशालों से, नहीं बुझना मेरे साथी
समय की मार सह लेना, नहीं झुकना मेरे साथी
स्वदेशी राग ही गाना, नहीं रुकना मेरे साथी
जहां पर सख्त हो मिट्टी, वहीं उगना मेरे साथी

भारत मां की देह,
घाव की गिनती कौन करे
आपस में लड़ मरे,
देश पर कोई नहीं मरे

-यश मालवीय

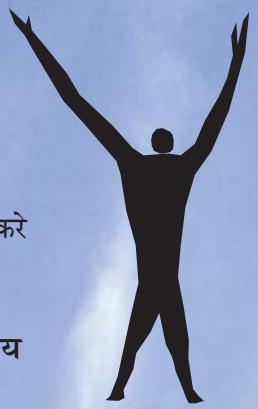

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए.
मेरे सीने में नहीं तो, तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए

- दुष्यंत कुमार

ईस्ट इंडिया चली गई है, ऐसा भरम नहीं पालें
बाटा, लिप्टन, पेप्सी, कोला, सब उसके रखवाले
बच्चा-बच्चा कर्जदार है, जन-जन तक पहुचाएंगे
अभी गुलामी गई नहीं, तो कैसे जश्न मनाएंगे.

- प्रभुनाथ जैस्वाल

हिंद में पैदा हुए हैं, हिंद की संतान हैं
हिंद की खातिर मरें, वरदान ऐसा दीजिए
हे प्रभो आनंद दाता ! ज्ञान हमको दीजिए.

बदन हमारा, साबुन उनका
बासमती और जामुन उनका
देश हमारा, नेता उनका
अफसर और अभिनेता उनका.

- अक्षय जैन

जब तलक पीते रहे ये खून, हम खामोश थे
अब वतन को पी रहे हैं, यह सहन कैसे करें
कितने बिस्मिल और भगत, अश्फाक, भूखे मर रहे
बोलिए अब इस व्यवस्था को, नम कैसे करें

यदि बचाना चाहते हो, अपने हिंदुस्तान को
बात क्या श्रृंगार की, अंगार की बातें करो.

-डॉ. राजवीर सिंह क्रांतिकारी

सौजन्य : किरण गोलेच्छा, चेन्नई

हमारा मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि वह प्राकृतिक पर्यावरण, जिसमें वन, झीलें, नदियां एवं वन्य जीव–जंतु सम्मिलित हैं, को संरक्षण एवं विकास प्रदान करें और समस्त प्राणियों के प्रति करुणा एवं सहानुभूति का बर्ताव करें.

–भारत का संविधान, अनुच्छेद ५१ ए (जी)

भारत की सुख समृद्धि गो के साथ जुड़ी है.

गोवंश की रक्षा में देश की रक्षा समाई हुई है.

–पंडित मदनमोहन मालवीय

चाहे मुझे मार डालो, पर गाय पर हाथ न उठाओ.

–लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

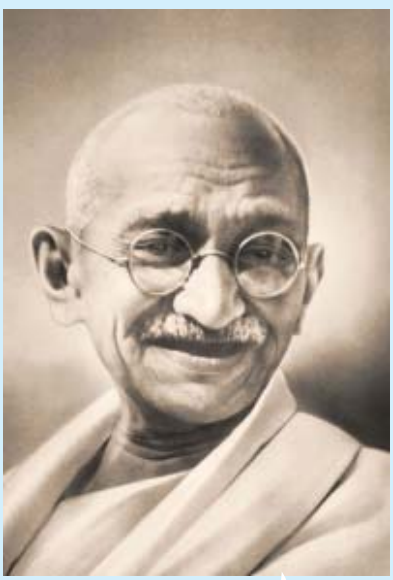

गाय उन्नति और प्रसन्नता की जननी है. वह अपनी जननी से भी श्रेष्ठ है.

– महात्मा गांधी

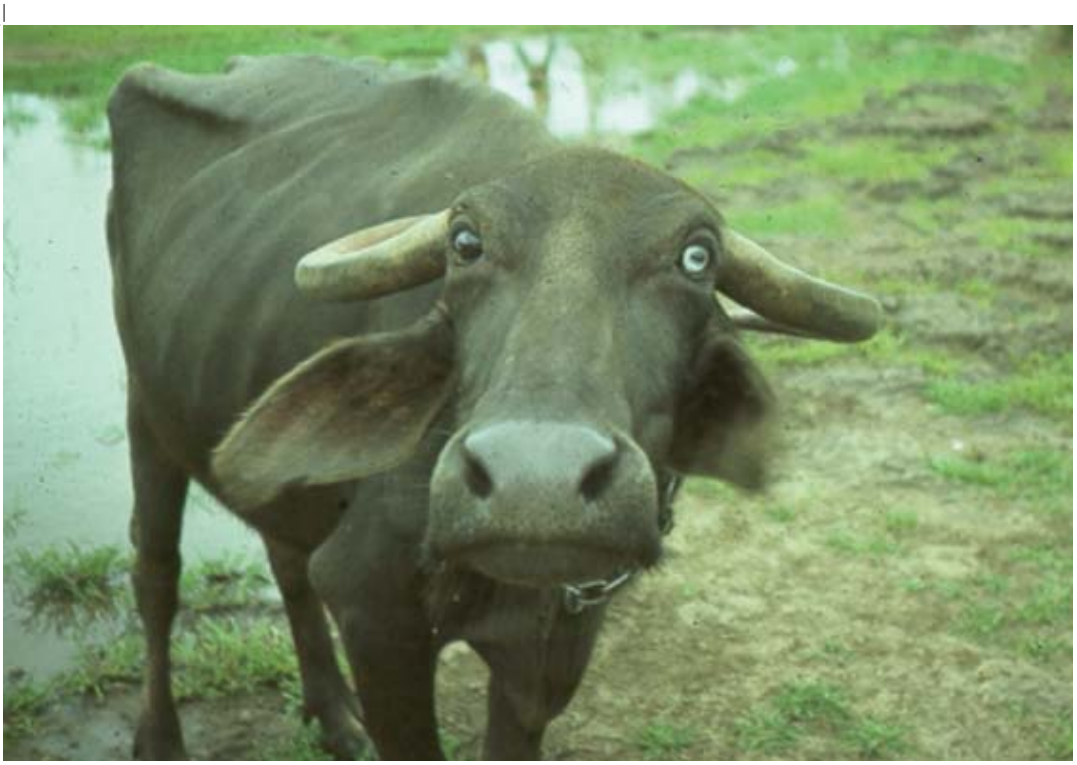

भारतीय गोवंश खतरे में

भारतीय गोवंश खतरे में है. भारतीय गोवंश की सर्वश्रेष्ठ नस्ल अमृत महाल पूरी तरह से समाप्त हो गई है. अमृत महाल नस्ल के बैल विश्व के सर्वश्रेष्ठ बैल माने गए हैं. अपनी सवाई चाल के कारण यह बैल १०० मील की दूरी ढाई दिन में तय कर लेते थे. हैदरअली तथा टीपू सुल्तान की फौज का सामान ६०,००० बैल परिवहन करते थे. विश्व की सर्वश्रेष्ठ नस्ल की संख्या मात्र १३७ ही रह गई है. दिन भर में मात्र १ किलो चारा खाकर २ प्रतिशत वसा युक्त, अधिकतम प्रोटीन युक्त दूध वाली वैचूर गाय पूरी तरह से लुप्त हो गई है. वर्तमान में ३३ देशों में अपने सर्वश्रेष्ठ गुणों के कारण पलनेवाली सिंधी नस्ल भारत में पूरी तरह से लुप्त हो गई है. सिंधी नस्ल की गाय लाल रंग की होती है. इसलिए रेड सिंधी के नाम से भी जानी जाती है. १९ देशों में पलने वाली साहीवाल नस्ल भारत में लुप्तप्राय है. गीर अमेरिका में ब्राह्मण नस्ल के नाम से विकसित की गई है. इजराइल में गीर नस्ल ने १९९२-९३ में १२० किलो दूध एक दिन में देकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है इसलिए इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में भी दर्ज किया गया है. गीर ब्राजील में ४० किलो दूध एक दिन में बहुत ही आराम से दे रही है. गीर का भारत में सही ढंग से रख-रखाव नहीं होने के कारण शुद्ध नस्ल खतरे में है. क्रॉस ब्रीडिंग नीति के कारण भारतीय गोवंश खतरे में है. भारत को वर्तमान में ८ से १० करोड़ बैलों की आवश्यकता है. नागोर नस्ल के बैल विश्व के सबसे तेज चलने वाले सुप्रसिद्ध बैल हैं. घोड़े के स्थान पर रथ में नागोर नस्ल के बैल जोते जाते थे. ५२२९ वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण काल में युधिष्ठिर के पास ऐसे बैल मौजूद थे जिसका मूत्र मात्र सूंघ लेने पर बांझ स्त्री गर्भ धारण कर लेती थीं. युधिष्ठिर के समय मानव की संख्या मात्र १६ करोड़ थी तथा भारतीय गोवंश की संख्या ९६ करोड़ थी. थार मरुस्थल में पाई जाने वाली थारपारकर नस्ल भी

गोसेवक सहदेव भाटिया

क्रॉस ब्रीडिंग के कारण ८० प्रतिशत बर्बाद हो गई है. बरगुर, गांवलाव, सीरी, तंजोर, लोहानी, राठी, कंगायम, कांकरेज, डांगी, खिल्लारी, आलमबादी, अंगोल, भगनाड़ी, हांसी, दज्जल, बचौर, बंगाली, गंगातीरी, रोजन, देवनी, घन्नी, हल्लीकर, कंधारी, केनवारिया, खेरीगढ़ कोसी, कृष्णावल्ली, मालवी, मेवाती, निमारी, पोनवार, समाप्त होने के कगार पर हैं.

भारतीय गोवंश को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए भारत में भैंस को बढ़ावा दिया गया है. वर्तमान में भारत में भैंस की संख्या ६ करोड़ ५० लाख है. ९ प्रजातियां भैंस की भारत में मौजूद हैं. पूरे विश्व में भैंस पालना तथा भैंस का दूध पीना कोई पसंद नहीं करता है. भैंस के दूध में वसा की मात्रा ७ से १३ प्रतिशत है, इसलिए भैंस भारत में तेजी से विकसित हो रही है. भारत विश्व का प्रथम दूध उत्पादक बन गया है, जिसमें भैंस की भागीदारी ५५ प्रतिशत है. उल्लेखनीय है कि भारतीय गाय माता के दूध में ५३०० रसायन मौजूद हैं.

भारतीय गोवंश को बचाने के लिए प्रश्न यह है कि कौन बनेगा गो सेवक? कौन बनेगा गो रक्षक?

किसी न किसी को तो शुरुआत करनी ही होगी. रोज-रोज मरने से एक दिन मरना ज्यादा अच्छा है.

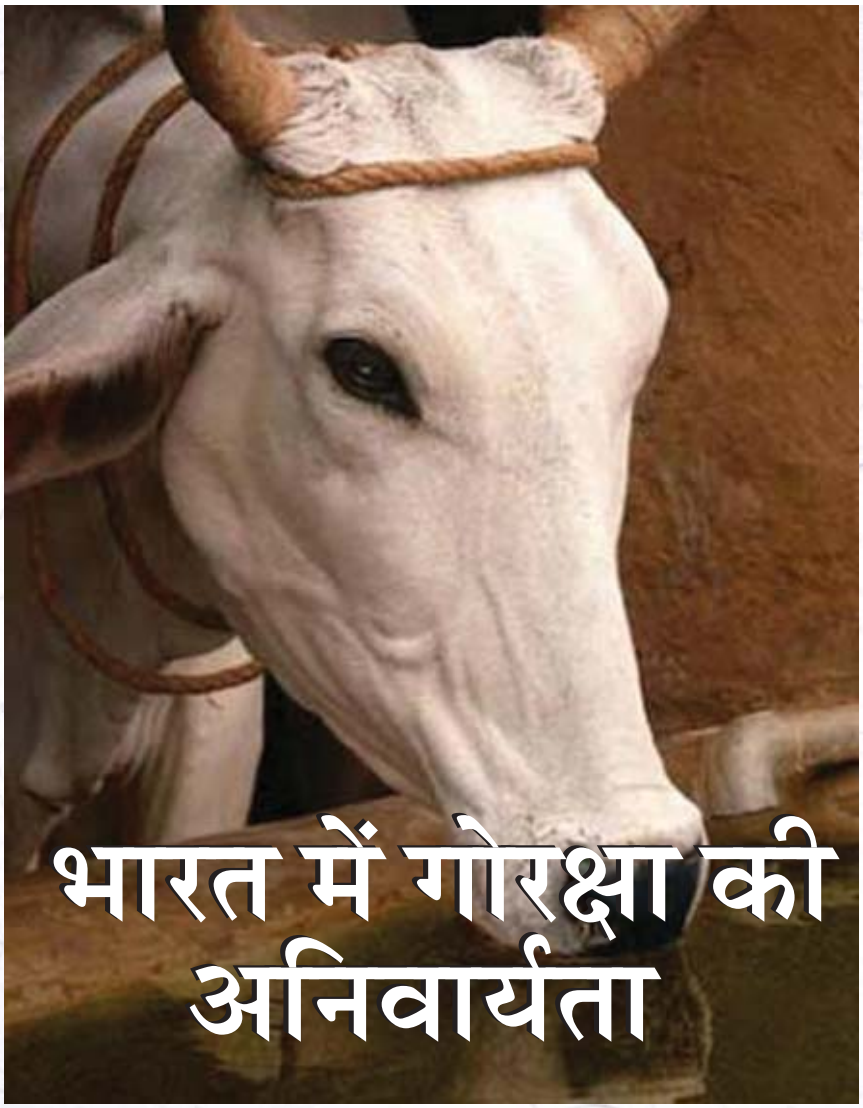

भारत में गोरक्षा की अनिवार्यता

डॉ. मुहम्मद खां दुर्रानी

जब गोवंश-प्रतिबंध की मांग की जाती है, तो उत्तर मिलता है-उदरपूर्ति कैसे होगी ? और फिर बढ़ती हुई गौओं का पालन कैसे होगा ? इत्यादि-इत्यादि. इस प्रकार के सैकड़ों प्रश्नों में उलझे समस्याओं का समाधान है.

कुरान में गोवध का आदेश नहीं है- हमारे कुरान में कहीं भी गोवध का आदेश नहीं है. हमारी नसों में गोमाता के दूध से निर्मित रक्त संचारित है. हम गोवध को सहन कर माता का दूध न लजाएंगे और उसकी रक्षा के लिए सक्रिय कदम उठाएंगे. कुछ लोग कहेंगे कि दूध तो भैंस का भी पीते हैं, उसे क्यों नहीं बचाएं ? ठीक है, यदि संभव हो, तो उसे भी बचाइए, किंतु प्रथम 'गौ' को बचाकर, क्योंकि गोमाता का महत्व हमारे मंत्र ऋषियों द्वारा रचित धर्मग्रंथों में कथित हैं, जिससे यह समाज अपनी विशिष्ट संस्कृति-सहित जीवित है.

किंर्तव्यविमूढ़ता- समाज के विचारार्थ 'गौ-रक्षा' में बाधक मूलभूत तीन प्रश्नों के उत्तर ये हो सकते हैं.

प्रश्न-१ गो-वध-निषेध पर चर्मपूर्ति कैसे होगी ?

उत्तर- अरे भाई! देहांत होने पर गौ सशरीर कहीं उड़ थोड़े ही जाएगी ? मृत्यु पर तो चर्म मिलेगा ही. अत: जीते जी उसे क्यों मारते हो ? यदि कहें कि मरने पर चमड़ा कठोर हो जाता है तो उत्तर है मृत चर्म को रासायनिक विधि से उत्तम बनाया जा सकता है.

प्रश्न-२ गोवध निषेध पर उदरपूर्ति कैसे होगी ?

उत्तर- भारत की इस शस्य श्यामला भूमि पर फल-शाकादि की कमी नहीं. परिश्रम से इससे सभी कुछ मिलता है. गो-नस्ल सुधार से अधिक दुग्ध एवं पुष्ट बछड़े प्राप्त होते हैं, जो कृषि को उन्नत करते हैं और मानव क्षुधाग्रस्त होकर नहीं मरने पाएं. गो और देवताओं के अभिशाप के कारण है और मानव क्षुधाग्रस्त होकर नहीं मरने पाएं. गो और देवताओं के अभिशाप के कारण ही आज भारत में मनुष्य भूखों मर रहा है. गो-सुरक्षा की दिशा में यदि आवश्यक योजना कार्यान्वित हो तो कोई कारण नहीं कि देवगण प्रसन्न होकर भारत-वसुंधरा में समृद्धि की वर्षा न करें. राष्ट्रीय स्तर पर गोरक्षा योजना बनाकर देश की समृद्धि के लिए सहस्त्रों यज्ञों का फल प्राप्त करें.

प्रश्न-३ गोवध निषेध पर बढ़ती हुई गौओं का पालन कैसे होगा ?

उत्तर- इस प्रश्न का विस्तार पूर्वक विचार करने के लिए सशक्त गो-सुरक्षा आयोग का गठन किया जाए, जो निम्न प्रकार के सुझावों के कार्यान्वित कराने की दिशा में कार्य करें.

१. राष्ट्रीय स्तर पर इतनी गोशालाएं खोली जाएं कि कोई भी गो आवारा न फिरने पाए. २. देशी गो-नस्ल सुधार केंद्रों की समुचित व्यवस्था की जाए. ३. गो विकास के विषय पर अनुसंधान कार्य किये जाएं. ४. गो को राष्ट्रीय घरेलू पशु घोषित किए जाते तथा उसका वध निषिद्ध किया जाए. ५. राष्ट्रीय स्तर पर गोचर-भूमि उपलब्ध कराई जाए. ६. लोगों को गोमूत्र-गोबर की बहुआयामी उपयोगिता को समझाया जाए.

यदि देश के कर्णधार गोरक्षा-संबंधी उपर्युक्त प्रकार की योजना प्रारंभ करें तो कोई कारण नहीं कि समस्त देश में एक खुशी की लहर न दौड़ जाए. अत: सभी को ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि शीघ्र ही गोहत्या बंद हो जाए और लोग गो सेवा के महान कार्य में जुट जाएं.

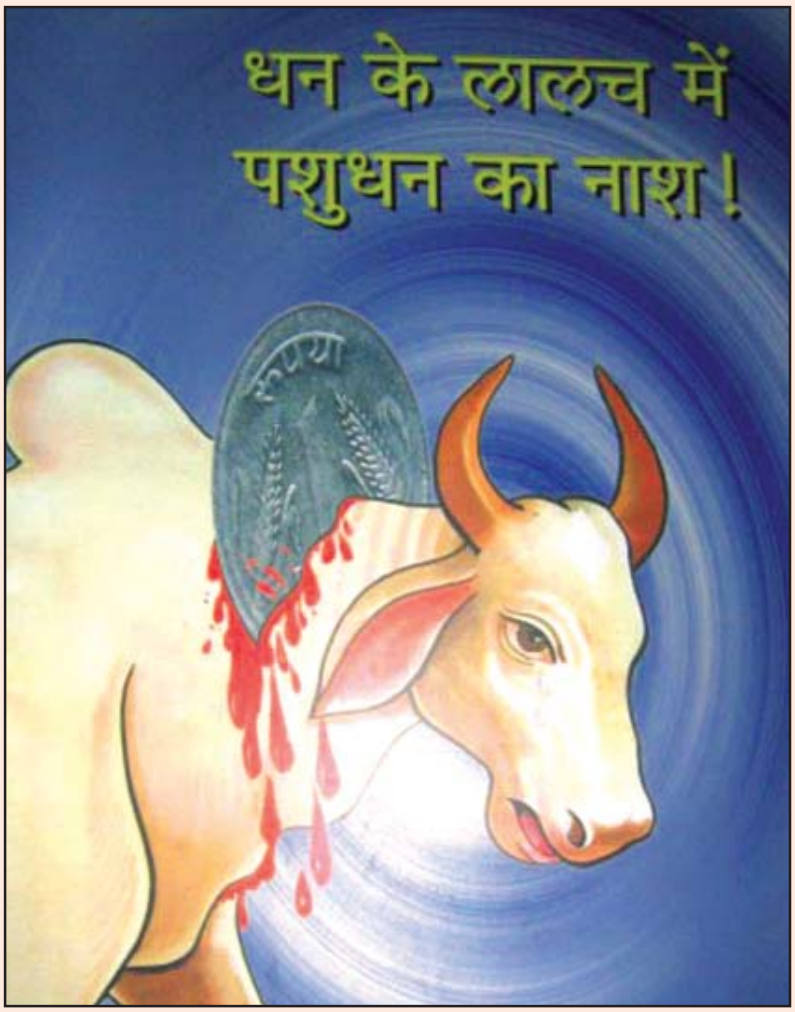

सौजन्य :
ओमप्रकाश मस्करा, कोलकाता

संस्कृत भाषा में गो शब्द के कई अर्थ हैं – पहला अर्थ है गाय, दूसरा पृथ्वी, तीसरा माता और मातृ शब्द का अर्थ है मां फिर गाय फिर पृथ्वी. मातृ शब्द और गो शब्द दोनों माता के लिए, गाय के लिए और पृथ्वी के लिए है. यह संस्कृत भाषा है. आज भारत में लाखों गाय-बैल कटते हैं. उनका मांस, चमड़ा आदि विदेशों में भेजा जा रहा है और आपको डालर मिलते हैं.

भारत में गाय और बैलों की अत्यंत आवश्यकता है. देश को जो थोड़ा-बहुत प्रोटीन मिलता है, वह गाय के दूध से ही मिलता है. खेती के लिए बैल और उनकी खाद भारत के लिए अमृत-तुल्य

'गाय हमारी माता है – गौ हत्या मातृ हत्या है'
संत विनोबा का आह्वान

गोहत्या बंदी :
भारतीय संस्कृति का आदेश है.
वह भारतीय संविधान का
निर्देश है.
उसके लिए भारत सरकार वचनबद्ध है.
और भारतीय संसद का संकल्प है.
इसलिए सारे भारत में तुरंत गोहत्या बंद होनी चाहिए.
– रामहरि विनोबा की शुभकामनाएं
१६.८.८१, बह्मविद्या मंदिर, पवनार

गो हत्या बंद हो यह भारत की जनता का मेनडेट है – यह एक गंभीर विषय है : भारत के लिए जीवन-मरण का सवाल है.

भारतीय सभ्यता की मांग है कि भारत में गोरक्षा होनी चाहिए. अगर भारत में हम गोरक्षा नहीं कर सके, तो आजादी के कोई मायने नहीं होते. अगर गोरक्षा नहीं होती है, तो हमने अपनी आजादी खोई और उसकी सुगंध गंवाई, ऐसा कहना गलत नहीं होगा.

है. जो ट्रैक्टर आदि की बातें करते हैं, उसमें हम सार नहीं देखते. भारत की जमीन की काश्त के लिए ट्रैक्टर नहीं चल सकता. ट्रैक्टर घास नहीं खाता और न ही खाद देता. बैल घास खाते हैं और खाद भी देते हैं. भारत का कृषि देवता बैल है.

कृषि प्रधान भारतीय संस्कृति द्वारा हजारों वर्षों से किए गए प्रयोगों के परिणामस्वरूप भारत ने गोवंश को अपने परिवार में स्थान दिया. पशु और मानव के संबंधों की पारस्परिकता की यह सर्वोत्कृष्ट मिसाल है. यह भारत का समाजवाद है. भारत के समाजवाद में यह माना गया है कि मानव वंश के अंदर गोवंश का समावेश करें और जिस गाय के दूध पर हमारे बच्चे पलते हैं, उसकी कृतज्ञता के तौर पर रक्षा करें. उसकी सहज मौत आने दें.

गाय बिना किसी भेदभाव के सारे मानव समाज की सेवा करती है. अत: बाबा भारत की समस्त जनता को आह्वान दिया

गया शीर्षक आह्वान करना चाहता है कि राष्ट्र रक्षा के इस महान कार्य में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई आदि सभी धर्म वाले और सभी पंथ और फिरके वाले सब प्रकार से सहयोग करें.

कुछ लोगों का सवाल है कि मुसलमान और ईसाई इसका विरोध करेंगे, सेक्युलर स्टेट में ऐसा बोलने वाले इस्लाम का अपमान करते हैं. कुरान में भी गोहत्या आवश्यक (लाजमी) नहीं मानी गई. ईसाई धर्म सार को जिस बाबा ने निकाला है, उसने भी यह स्पष्ट कह दिया गया है कि ''अगर मेरे साथी को मेरे मांसासन से बुरा लगता होगा तो जब तक दुनिया है तब तक मैं मांसासन नहीं करूंगा.'' सेंट पॉल कहते रहे हैं- गोहत्या बंदी के लिए इन सबकी सहानुभूति है. सिखों के आखिरी गुरु गोविंदसिंह थे. गोविंद नाम रखा गया तो गाय के लिए कितना आदर था सिखों में. आपको जो निर्देश दिया गया है, भारतीय संविधान ने, उसे सब मुसलमानों ने समर्थन दिया था.

पारसी गो-मांस नहीं खाते. जैनों ने मांसाहार त्याग की बात की है, यह बहुत बड़ी बात है, आगे यही करना ही होगा. भारत को करना होगा, पूरी दुनिया को करना होगा. यही बड़ी देन है जैन धर्म की. यह आगे की बात हुई. आज कम से कम बात करनी है तो गाय की हत्या नहीं करनी चाहिए, इसमें किसी को शक नहीं होना चाहिए.''

''कृषि प्रधान भारत में किसी भी उम्र के गाय और बैल का कत्ल तुरंत बंद होना चाहिए. इसके लिए देवनार (मुंबई) में सत्याग्रह करो. इसका प्रारंभ शांति सेना करे.''

■■

गंभीर

जब तक भूखा इंसान रहेगा
धरती पर तूफान रहेगा

विश्व बैंक के गेट पर,
खड़ा है एक इंसान
हमने पूछा, कौन हो भइया?
बोला, हिंदुस्तान!

गिद्धों को सौंप दी है, चिड़ियों की रखवाली
मेमनों पर निकली है, शेरों की सवारी
आजाद भारत को यह क्या हो गया
शहीदों का सपना कहां खो गया?

- सुनील आगीवाल

भारत में हम गोरक्षा न कर सकें, तो आजादी का कोई अर्थ नहीं रहेगा. गोरक्षा नहीं की तो हमने आजादी गंवाई, उसका सुगंध गंवाया, ऐसा कहना पड़ेगा. भारत के लिए यह जीवन-मरण का सवाल है.

- विनोबा

मेरी मोटर है जापानी
मेरी शर्ट इंग्लिश्तानी
मुंह में कोक है अमेरिकी,
मैं हूं कैसा हिंदुस्तानी?

- जगदंबा प्रसाद दीक्षित

हरा नीम और पीली हल्दी,
बासमती और हापुस आम.
बंद करो अब देश बेचना,
बहुत बुरा होगा अंजाम.

पेड़ गिराने वालो सोचो
धरती मां की खाल न नोचो
भले कुल्हाड़े चमकेंगे
लाठी गोली खाएंगे
अपने पेड़ बचाएंगे

- चिपको आंदोलन

तुमने गूंगे प्राणिओ को हाँकने के लिए दंडा मारकर उस पर जुल्म किया है, कायदे के तहद तुम्हें सजा होगी।
शाबाश
सरकार
॥प्रशस्ति पत्र॥
आपने पशुपंखि के निकास के लक्ष्यांक को सिध्ध कर लिया है। सरकार इसकी कदर करते हुए यह प्रशस्ति पत्र प्रदान करती है।
सही
भारत सरकार

सौजन्य : **चांदरतन दमानी, मुरारीलाल अग्रवाल और मित्र मंडल, कोलकाता**

गौ-हत्या : फूट डालो और राज करो

– राजीव दीक्षित

१८१३ के साल में अंग्रेजों की पार्लियामेंट हाउस ऑफ कामंस में एक बहस चली, मुद्दा था 'हाउ टू क्रिस्चियनाइज्ड इंडिया' (भारत को ईसाई कैसे बनाया जाए?). २४ जून १८१३ को यह बहस पूरी हुई. उस बहस के दस्तावेजों को देखने से यह पता चलता है कि अंग्रेज और ईस्ट इंडिया कंपनी केवल व्यापार करने और राज्य करने के उद्देश्य से यहां नहीं आए थे. वे भारत को ईसाई बनाने का काम करने के लिए भी आए थे. इसके लिए उन्होंने कुछ नीतियां बनाई थीं. वे यह थीं कि यदि भारत को ईसाई बनाना है, तो सबसे पहले भारत की सुख-सुविधाओं का नाश करना होगा. भारत में गरीबी और भुखमरी लानी होगी, तो इसके लिए भारत की अर्थव्यवस्था और कृषि को भी

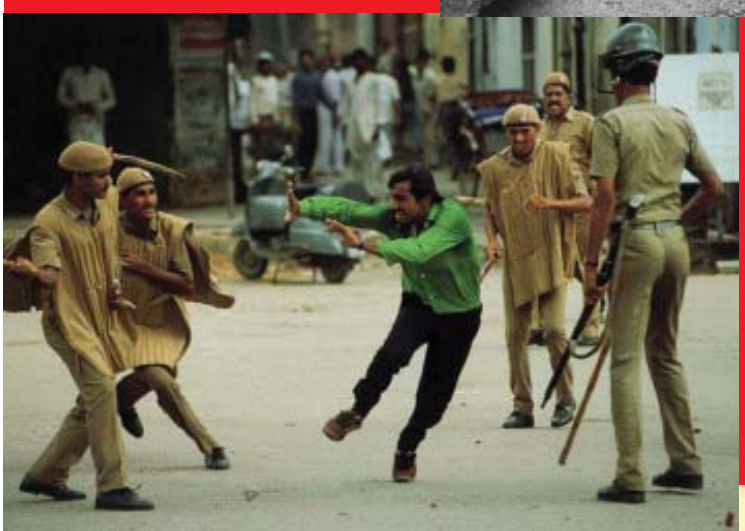

बर्बाद करना होगा.

इसके लिए उन्होंने अपने गुप्तचरों से सर्वेक्षण करवाया. इससे उन्हें यह पता चला कि भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर और कृषि मूल रूप से गाय पर निर्भर है. और भारतीय संस्कृति का भी मूल केंद्र गाय है. तो उन्होंने गाय का कत्ल करवाना शुरू कर दिया और गाय का मांस अंग्रेजों की फौज को खिलाया जाने लगा. कुछ दिन बाद उन्हें पता चला कि बुल (सांड़) को मारना गाय से भी ज्यादा जरूरी है, क्योंकि यदि सांड़ नहीं मरेगा, तो गाय पैदा होती रहेगी. तब उन्होंने कुछ ऐसे कत्लखाने खोले, जिनमें सिर्फ नंदी (सांड़) का ही कत्ल किया जाता था. १८५० के आसपास गाय के कत्ल का प्रश्न भारत के सभी मजहब के धर्म-गुरुओं ने उठाना शुरू किया.

ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने ८ दिसबंर १८९३ को गवर्नर लैंस डाउन को एक चिट्ठी लिखी. इसकी फोटो कापी हमारे पास है. विक्टोरिया ने अपनी चिट्ठी में लिखा कि गाय का कत्ल बंद नहीं होना चाहिए. गाय के कत्ल के बहाने हिंदू और मुसलमानों के बीच दरार डालनी चाहिए.

अंग्रेजों की हमेशा से यह नीति रही है कि फूट डालो और राज करो (डिवाइड एंड रूल). अगर हिदुओं को यह पता चलेगा कि मुसलमान गाय काट रहे हैं, तो हिंदू और मुसलमानों के झगड़े शुरू हो जाएंगे. तब अंग्रेजों को राज करने से कोई रोक नहीं सकता. जब रानी की चिट्ठी लैंस डाउन को मिली, तो उसने सभी कत्लखानों में सिर्फ मुसलमानों को ही नौकरी पर रखा और यह प्रचार करना शुरू कर दिया कि गाय हम नहीं काट रहे हैं, गाय तो मुसलमान काट रहे हैं. इस नीति में अंग्रेज सफल हो गए. हिंदू और मुसलमानों के बीच झगड़े होने शुरू हो गए.

■■

कहीं हम चर्बी तो नहीं खा रहे ?

मुजफ्फर हुसैन

इस बात की आपके पास क्या गारंटी है कि आप जो खा रहे हैं वह एकदम शुद्ध घी है ? देशी घी मिलना तो बहुत दूर अब तो असली वनस्पति घी भी नहीं मिलती. शुद्ध तेल एक बार आपको उपलब्ध हो सकता है, किंतु घी कदापि नहीं. तो प्रश्न यह उठता है कि घी में किस चीज की मिलावट करते होंगे ? इसका उत्तर है पशु की चर्बी. बाजार में जिस प्रकार मांस, चमड़े, हड्डी और सींग का व्यापार होता है, उसी प्रकार बहुत बड़े पैमाने पर चर्बी का भी व्यापार होता है.

यूरोप और अमेरिका में तो मक्खन इतनी बड़ी मात्रा में उपलब्ध है कि वहां मिलावट का प्रश्न ही नहीं होता, किंतु एशिया और अफ्रीका में दूध की तंगी है. इसलिए शुद्ध घी मिलना एक बड़ी समस्या बन कर उभर रही है.

चर्बी दो प्रकार की होती है–पीली और सफेद. बैल की चर्बी पीली होती है और भैंस की सफेद. इसलिए घी की मिलावट में भैंस की चर्बी का उपयोग होता है. जब चर्बी का उपयोग होता है. तब चर्बी को पानी में खूब धोया जाता है. तब उसमें रवेदार कण उभर आते हैं, जो अच्छे घी में होते हैं. फिर उसमें घी जैसी सुगंध वाला एसेंस डाल दिया जाता है. जिससे यह विश्वास हो जाता है कि यह असली घी है.

सफेद चर्बी के भाव अधिक होते हैं, पीली के कम. परंतु अब रसायन की सहायता से बैल की चर्बी को सफेद बनाने में कोई कठिनाई नहीं होती. अनुमान है कि एक भैंस में से औसतन २५ किलो चर्बी निकलती है, जबकि बैल से १६ किलो. सुअर तो चर्बी का घर माना जाता है.

अमेरिका में पोलसन लाबी है जिसके बलबूते पर रीगन जीते हैं. इन दिनों वहां मक्खन का डर है. सरकारी कोल्ड स्टोरेज में

इतनी जगह नहीं है कि अब और अधिकाधिक मक्खन जमा किया जा सके, परंतु हमारे देश में ऐसी कोई लॉबी कम से कम आने वाले ५० वर्षों में तो नहीं बन सकती.

चर्बी का औद्योगिक उपयोग

मुर्दा जानवरों से प्राप्त चर्बी का अधिकांश उपयोग साबुन बनाने में होता है. महंगे और मूल्यवान साबुन नारियल के तेल से बनते हैं, किंतु कपड़े धोने के साबुन में जानवरों की चर्बी का उपयोग होता है. मुर्दा जानवरों की चर्बी का ६० प्रतिशत साबुन के कारखानों में चला जाता है. मरे हुए जानवरों की चर्बी की दुर्गंध समाप्त करने के लिए कड़वे तेल का उपयोग किया जाता है. यह कोई सरसों का कड़वा तेल नहीं, बल्कि कडुए बीज का तेल होता है. मुर्दा जानवर की चर्बी औसतन ८ रुपए किलो मिल जाती है. इसमें बैल की पीली चर्बी भी मिल जाती है. विदेशी साबुनों में सुअर की चर्बी अधिक काम में लाई जाती है. मुंबई में साबुन वाले प्रतिदिन औसतन ८०० किलो चर्बी खरीदते हैं.

औद्योगिक क्षेत्र में चर्बी का सबसे बड़ा उपयोग कपड़ा मिलों मे होता है. टैक्सटाइल मिलें दुनिया की समस्त चर्बी का ७५ प्रतिशत भाग उपयोग करती हैं. कपड़ों को ब्लीच करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. कच्ची चर्बी को पहले रिफाइनरी में भेज कर संशोधित किया जाता है. इसके पश्चात् उसमें कुछ रसायन मिलाए जाते हैं. फिर लकड़ी के ड्रमों में पैक कर दिया जाता है. कुछ दिनों के पश्चात् ड्रम खोलकर चर्बी निकाली जाती है और ब्लीच करने वाले विभाग में ब्लीचिंग के लिए भेज दी जाती है.

चर्बी का उपयोग होड़ी के पर्दे पर भी किया जाता है. नाव या होड़ियां जो पर्दा बांधकर समुद्र में चलाई जाती हैं, उनके पेंदे में दो या तीन वर्ष के अंतर में चर्बी लगाने का काम किया जाता है. यह चर्बी नाव की लकड़ी को सड़ने और गलने से बचाती है. लकड़ियां जोड़ते समय दरारें पड़ जाती हैं जो लोहे के समान जम कर कड़ी हो जाती है. चर्बी की परत का एक लाभ यह भी होता है कि नाव पानी पर तेज गति से फिसलती है, जिसके कारण पतवार चलाने वाले को नाव खेने में अधिक कठिनाई नहीं होती. लोग मोम का उपयोग भी करते हैं – मगर वह चर्बी की अपेक्षा महंगा पड़ता है. अमेरिका में हर घर में कार की तरह नाव रखने का रिवाज है, पिकनिक के समय हर अमेरिकी अपनी कार पर नाव ले जाता है, नदी का किनारा या समुद्र का छोर मिलते ही वह तुरंत नाव पानी में डाल देते हैं. थोड़े समय के अंतर से उसका मालिक उस नाव पर चर्बी लगाना नहीं भूलता. अब सागर में चलने वाली लांच के पर्दे पर मुंबई से केरल तक के तटवर्ती इलाकों में चर्बी लगाने का काम बड़े पैमाने पर होता है.

चर्बी का स्वभाव नहीं बदलता

महाराष्ट्र के जाने माने चर्बी विशेषज्ञ नुरुद्दीन रहमतुल्ला चरनिया ने अफसोस व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा देश पशुओं के मामले में सारी दुनिया में मशहूर रहा है. कन्हैया के इस देश में बेचारे पशुओं के आहार पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता. इसलिए उनके शरीर में चर्बी का प्रमाण विदेशी जानवरों की तुलना में केवल २२ प्रतिशत ही होता है. श्री चरनिया ने चर्बी तैयार करने की विधि बतलाते हुए कहा कि पहले इसे बड़ी-बड़ी कड़ाही में एक से डेढ़ घंटे तक खूब पकाया जाता है. पक जाने पर चर्बी तेल के रूप में आ जाती है जिसे डिब्बे में भर लिया जाता है. ठंडी होते ही वह पुन: जम जाती है. चर्बी को किसी के साथ भी मिलाइए या गर्म कीजिए, वह ठंडी होने पर तुरंत पूर्व स्थिति में आ जाती है. यानी उसके जम जाने का स्वभाव अटल है.

कुछ लोगों को यह आशंका होती है कि बाजार में बिकने वाला नमकीन चर्बी में तला जाता है, किंतु यह भ्रम बेबुनियाद है, आजकल चिवड़ा, सेव, दाल अथवा अन्य नमकीन बिस्कुटों में भी चर्बी का मिलाजुला उपयोग हो रहा है. होटलों में बिकने वाली वस्तुओं में भी तेल के स्थान पर चर्बी का उपयोग होता है. मांसाहारी होटलों में तो कोई भी वस्तु पकाने के लिए चर्बी का उपयोग होता है. मांसाहारी होटलों में कोई भी वस्तु पकाने के लिए चर्बी आवश्यक अंग बन गई है.

मुंबई स्थित नल बाजार की अली भाई, उमर स्ट्रीट में बालभई अली भाई नामक फर्म चर्बी के धंधे में पिछले ७० वर्ष से विश्वसनीय फर्म मानी जाती है , किंतु रिफाइनरी के क्षेत्र में आस्ट्रेलो ट्रेडिंग कंपनी प्रख्यात है. अंग्रेजी में चर्बी को टेलो कहा जाता है और भारत में उसका आयात आस्ट्रेलिया से होता है. अतएव इन दोनों को मिलाकर संभवत: अपनी कंपनी का नाम चर्बी का धंधा करने वाले मालिकों ने 'आस्ट्रेलो ट्रेडिंग' रख लिया.

१६ किलो के चर्बी भरे डिब्बे में लोहे की छड़ डाल कर असलियत का पता लगाया जाता है. सफेद चर्बी के नीचे पीली चर्बी भरना और वजन बढ़ाने के लिए पत्थर से लगाकर कुछ भी डाल देना एक अत्यंत साधारण बात है. लोहे की ये एक छड़ सारी पोल खोल देती है.

चर्बी का तेल निकल जाने के पश्चात जो वस्तु शेष रह जाती है उसे चुन्नी कहा जाता है. इस चुन्नी को लोग गुड़ के साथ बड़े मजे से खाते हैं. चुन्नी १२ रुपए किलो में बिकती है. जानवर अपने शरीर की एक-एक वस्तु से मानव की सेवा करता है, किंतु मानव उसकी हत्या के अतिरिक्त कुछ नहीं करता.

मासिक पत्रिका में हर माह तीन-चार पदार्थों के बारे में विश्लेषण किया जाएगा. ताकि आप जानकारी हासिल कर सकें, मांसाहारी पदार्थों से सतर्क रह सकें.

बादशहा बाबर

बाहादुर शहा ज़फर

कई मुस्लिम शासक भी गौरक्षक रहे हैं

कई मुस्लिम शासकों ने हिंदुओं के भावों का बराबर आदर किया है. इतिहासकार ''हंटर'' लिखते हैं कि प्रारंभ में मुस्लिम शासकों ने गौवध प्रतिबंधित लगा रखा था.

१. लोदी शासनकाल में गौवध नहीं होता था.

२. गयासुद्दीन के राज्य में गोवध एकदम बंद कर दिया गया था.

३. बाबर ने अपने पुत्र हुमायूं के नाम एक पत्र मरते समय लिखा था जिसमें लिखा था कि ''ऐ मेरे पुत्र! भारत वर्ष में भिन्न संप्रदाय के लोग हैं. परमात्मा ने तुम्हारे हाथ में देश का शासन सूत्र सौंपा है. तुम सभी धर्म के साथ निष्पक्ष न्याय करना. विशेष कर गोहत्या से परहेज करना, क्योंकि ऐसा करने पर ही तुम भारतवासियों के हृदय पर राज कर सकोगे.''

हुमायूं के बाद उसका पुत्र अकबर दिल्ली की गद्दी पर बैठा. वह गौ का बहुत आदर और सम्मान करता था. अबुल फज़ल जो अकबर का प्रिय पात्र था. उसने अकबर के गोभक्त के बारे में विचार लिखे थे.

''सुंदर वसुंधरा भारत में गाय मांगलिक समझी जाती है. उसकी भक्तिभाव से पूजा होती थी. इस उपकारी जीव गो की बदौलत ही भारत के विशाल भू-भाग पर खेती होती है. इसके उत्पन्न अन्न, दूध, मक्खन आदि से ही भारतवासियों का गुजारा चलता है. इससे बैलगाड़ी खींचते, बोझा ढोते एवं पानी निकालते हैं. अकबर के समय गोमांस खाना निषिद्ध था और उसे छूना पाप समझा जाता था. बैल बहुत ही उपयोगी समझा जाता था. बैल २४ घंटे में १६० मील चलते थे.''

''आइने अकबरी'' में अकबर के समय की गोपाल व्यवस्था का वर्णन कुछ इस तरह मिलता है - (पुस्तक आईने अकबरी भाग-१ पृष्ठ, ११२-११४)

उस समय गाय को इतना अच्छा चारा मिलता था कि प्रत्येक

एड रमेशचंद्र शर्मा

गाय करीब-२० सेर दूध देती थी. झुंड की झुंड गाय एकत्रित कर गोपालकों को दी जाती थीं, ताकि इस तरह उनकी रक्षा हो. इसके लिए गोशालाओं का निर्माण किया गया. गौशालाओं के संचालन के लिए कानून भी थे. अकबर की अपनी एक खास गोशाला थी. बादशाह भोजन के प्रारंभ में गाय का घी और अंत में दही लेते थे.

बादशाह अकबर ने शाही फरमान जारी किया था कि ''किसी भी गांव और शहर में गोहत्या का नामोनिशान भी बाकी न रहे. यदि

कोई आदमी इस आज्ञा का उल्लंघन करता है और इस वर्जित काम को नहीं छोड़ता वह राजदंड का भागी होगा. उसके हाथ और पैर की अंगुलियां कटवा दी जाएंगी.'' इस फरमान के बाद तमाम देश भर में गोहत्या बंद हो गई.

अकबर के बाद उसके पुत्र जहांगीर ने भी गोहत्या बंदी के कानूनों को इसी तरह सख्त कर रखा था. इतना ही नहीं उसने अच्छे गोपालकों और नस्ल सुधार के लिए बहुत काम किया. वह गोपालन कैसे उत्कृष्ट किया जाए इसकी प्रदर्शनी लगाता तथा गोचर भूमि छोड़ने वालों को इनाम देता था.

जहांगीर के बाद उसके पुत्र शाहजहां ने भी गोरक्षा और गोपालन की इस परम्परा को ऐसे ही बनाए रखा.

औरंगजेब जैसे क्रूर शासक ने भी गोवध बंदी के कानून लागू कर रखे थे.

असल में गौ हत्यारे अंग्रेज थे

यह बात सही है कि भारत में गोवध की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था. भारतीय संस्कृति और हिंदू राजाओं का राज जब तक भारत में था, तब तक गोवध होना एक असंभव सी बात थी. क्योंकि भारतीय हिंदू राजा तो गौ की रक्षा के लिए अपनी जान तक कुर्बान कर देते थे.

भारत में गौ हत्या मुस्लिम आक्रमणकारियों के भारत में आने के बाद शुरू हुई, लेकिन फिर भी मुस्लिम राजाओं के शासनकाल में यदा-कदा गोहत्या होती थी. कई मुस्लिम राजा तो गौ प्रेमी रहे हैं.

अंग्रेजों का षड्यंत्र

ब्रिटिश पार्लियामेंट

अंग्रेज भारत में आए तो उन्होंने करीब १०० साल तक जासूसी की. उन्हें पता चला कि भारत की इतनी समृद्धि गायों के कारण है. यहा असंख्य गायें हैं. इस वजह से भारत में दूध, दही की नदियां बहती हैं. यहां मक्खन और घी की भरमार है. अतः गौदुग्ध पान के कारण यहां के लोग बड़े बलवान हैं, ईमानदार, धनवान हैं, और यहां का एक-एक सैनिक, अंग्रेजों के दस-दस सिपाहियों पर भारी पड़ते हैं. गाय का शुद्ध पवित्र गोबर एवं गौमूत्र लोग खेतों में डालते हैं, जिससे यहां की जमीन बहुत उपजाऊ है जिससे यहां खूब अच्छी फसलें होती हैं, जिससे अच्छे-अच्छे हस्तशिल्प, कलाकार, अच्छे मसाले, अच्छे जूट वर्क, अच्छा कपड़ा उद्योग हैं. जब तक भारत में असंख्य गाय, बैल हैं, तब तक भारत को गरीब और गुलाम नहीं बनाया जा सकता है. अगर यहां के लोगों से गाय का दूध, मक्खन, घी, छुड़ा दिया जाए तो यहां के लोग बीमार और कमजोर हो जाएंगे. यहां रासायनिक खादों एवं कीटनाशक का प्रभाव बढ़ा दें तो गोबर और गौमूत्र का महत्व खत्म हो जाएगा. खेतों में ट्रैक्टर का प्रचार कर दें, तो बैल अनुपयोगी हो जाएगा. इसके लिए अंग्रेजों ने कत्लखाने खोले. उन कत्लखानों में मुस्लिमों को नौकरियां दी गईं और मुसलमानों पर गौहत्या का दोष मढ़ दिया गया. अंग्रेजी फौजों को गाय का मांस खिलाया जाता.

गंभीर

बेचे टाटा, आटा-नून
सबसे सस्ता हो गया खून
गाय बैल न खेती-बाड़ी
गद्दारों के घर में गाड़ी

– राज सुमन

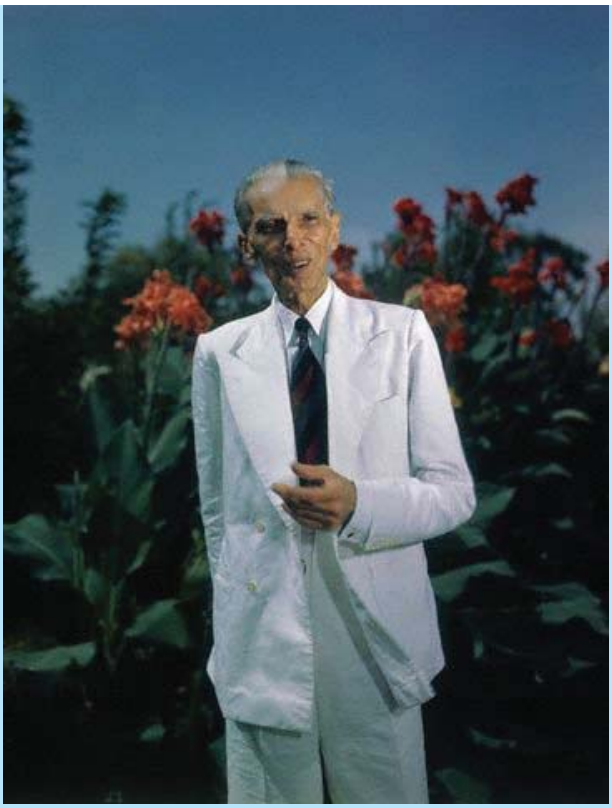

क्या इस आदमी को आप जानते हैं ?

आप इस नाम से अच्छी तरह परिचित हैं. यह वही आदमी है जिसने हमारे प्यारे देश के टुकड़े करने में अहम भूमिका निभाई है. इस प्राणी को पाकिस्तान के नासमझ अपना कायद-ए-आजम् मानते हैं. यह स्वयं नासमझ था. इसके अहंकार ने लाखों बेकसूर मनुष्यों की बलि ली. हजारों के घर उजाड़े, सब से बड़ी दु:ख की बात तो यह है कि इसने धर्म के नाम पर अमानवीय कार्य किया. आज इसी आदमी के कारण प्रेम की जगह नफरत पनप रही है. मनुष्य खून का प्यासा हो रहा है.

मैं देश के मुस्लिम भाइयों को कुछ महत्वपूर्ण जानकारी देना चाहता हूं, ताकि उन्हें भी पता चले कि यह प्राणी आखिर कौन था ? यह वही शख्स है जिसने हमारे देश को घायल किया, उसके टुकड़े किए, जिसके कारण लाखों लोग मारे गए. इसी प्राणी का नाम था मोहम्मद अली जिन्ना. यह मुसलमान नहीं था. इसका कोई कार्य मुसलमानों जैसा नहीं था. केवल नाम मुसलमानों जैसा था. यह कभी नमाज नहीं पढ़ता था. इसने अपने जीवन में निकाह नहीं किया, एक महिला के साथ उसके पत्नी जैसे संबंध थे. इस्लाम के अनुसार यह 'जानी' था.

उसकी एक बेटी है, जिसका निकाह नहीं हुआ है. वह एक गैर मुसलमान के साथ अपना अमेरिका में जीवन बिता रही है.

जिन्ना शराब बहुत पीता था. उसे सुअर का मांस खाने का शौक था. एक ऐसा प्राणी जो सुअर खाता हो, शराब पीता हो, 'जिना' करता हो, नमाज नहीं पढ़ता हो, ऐसे आदमी को इस्लाम से क्या लेना-देना ? वह गुजराती 'खोजा' बिरादरी का था.

हम भारतीय मुसलमानों को यह जानकारी नहीं है. हमें पाकिस्तान से सतर्क रहना चाहिए, उनके बहकावे में नहीं आना चाहिए. उनके बहकावे में आकर किसी भी बेकसूर इंसान को मारने का पाप नहीं करना चाहिए. इस्लाम के अनुसार 'किसी भी मासूम को मारने का पाप सारी मानवता को मारने जितना है.

१९४७ के आस-पास जो भारतीय मुसलमान जिन्ना के बहकावे में आए. उनका आज पाकिस्तान में क्या हाल हो रहा है, वह घर के रहे न घाट के. उन्हें आज भी शरणार्थी (मुहाज़िर) माना जाता है. उनके साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया जाता. आज पाकिस्तानी एजेंसियों के बहकावे में आकर हमारे नासमझ लड़के जो कुछ कर रहे हैं, वह राष्ट्रद्रोह हैं. कृपया यह जरूर समझ लें. इससे बचे और अपना जीवन देश के लिए समर्पित करे.

गोरक्षा और लादेन

आप सोच में पड़ गए होंगे कि गोरक्षा और लादेन के बीच क्या संबंध हो सकता है.

मेरे विचार में लादेन एक प्रायोगिक और समर्पित व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति का नाम है. लादेन हमारे देश के बड़े-बड़े उद्योगपतियों से ज्यादा पैसे वाला है. अगर वह बिगड़ा होता तो उसके पास भी सेक्रेटरियों की फौज होती. किसी पांच सितारा होटल में हॉलीवुड सितारे की तरह जिंदगी गुजार रहा होता. किसी समुद्र तट पर नग्न लेटा होता. Forbes की पैसे वालों की सूची में अग्रिम पंक्ति में नाम होता. सलमान रश्दी की तरह बीवियां बदलता नजर आता. फ्रान्स के राष्ट्रपति जैसे अपनी महबूबा के साथ घूमता नजर आता. किसी मंत्री की तरह उसकी भी अश्लील फिल्में किसी होटल में बनाई जाती. स्विटजरलैंड में उसके भी बैंक खाते होते. हमारे उद्योगपतियों द्वारा चलाई जा रही मांस के कारखानों का मालिक होता. रोम के बादशाह नीरू की तरह वह भी अपने महल की सीढ़ियां चढ़ने में नग्न खूबसूरत स्त्रियों की मदद लेता. परंतु भूखा प्यासा, बीमार अरबपति लादेन इस पहाड़ी से उस पहाड़ी, दर-दर की ठोकरें खाता फिर रहा है, अपने मिशन के लिए. छरहरे शरीर पर भारी मशीन-गन लिये उससे लड़ रहा है जिससे लड़ने के लिए विश्व की किसी भी शक्ति में साहस नहीं है.

चलिए आपको लादेन के मिशन से विरोध हो सकता है. हमें भी उसके मिशन से सहमति नहीं है, किंतु आप और मैं उसके समर्पण का विरोध कर सकते हैं? गाय की रक्षा के लिए हमारा भी ठीक लादेन जैसा समर्पण रहे तो एक वर्ष में देश से गोहत्या का कलंक समाप्त हो जाएगा.

अमेरिका अपनी सारी शक्ति लादेन को मारने में लगा रहा है. एक समय तो ''तोरा बोरा'' की पहाड़ियों पर इतने बम बरसाए गए कि वहां की पहाड़ियां गिट्टी में बदल गईं, परंतु अमेरिका लादेन का कुछ नहीं बिगाड़ सका. कारण लादेन वहां था ही नहीं. बम उसका क्या कर लेता. ठीक इसी तरह गोरक्षकों के हर दिन देश में हो रहे सम्मेलन उसी बम की तरह बेकार हैं, जो लादेन को मार नहीं सके. लादेन की मौत के लिए एक गोली ही काफी है.

ऐसा महसूस होता है कि अमेरिका लादेन को मारना नहीं चाहता केवल उसके नाम का उपयोग कर विश्व पर अपनी योजनाएं लादना चाहता है. ठीक इसी तरह इस देश का गोभक्त गाय को बचाना नहीं चाहता, वह केवल गोहत्या का ढिंढ़ोरा पीटकर देश का माहौल खराब करना चाहता है. अगर आप मेरे विचार से सहमत हैं तो मेरा साथ जरूर दें. मैं गोरक्षा करने निकला हूं. कृष्ण मेरे सपनों में आते हैं कि तुम ही गोरक्षा कर सकते हो और मैं इसमें अपने आपको सक्षम समझता हूं.

मैं ईश्वर पालनहार से प्रार्थना करता हूं कि लादेन जैसे ईमानदार समर्पित व्यक्तित्व गोरक्षा के लिए पैदा करें या लादेन का ही गोरक्षा के लिए मन पलट दें.

भ्रष्टाचार – देश का कैंसर

भारत को स्वतंत्र हुए केवल ६१ वर्ष हो रहे हैं. देश अंग्रेजों के शासन का गुलाम था, लेकिन कर्ज मुक्त था. आज कहने को आजादी है पर कर्ज के कारण देश आर्थिक गुलाम हो चुका है. देश का हर नागरिक कर्ज के बोझ तले दब रहा है. देश की सारी आय का ५० प्रतिशत से ज्यादा कर्ज के ब्याज में चला जाता है. यह सब हमारे दुश्मन देशों की सोची-समझी साजिश और नीति के कारण हो रहा है.

देश के लाखों सरकारी कर्मचारियों को भ्रष्टाचार की आदत सी पड़ गई है. यह अपने ही देशवासियों के अधिकारों के लिए घूस लेते हैं, जबकि सरकार उन्हें बड़ी-बड़ी पगार दे रही है. आम नागरिकों को बहुत सताया जा रहा है. कार्यालयों में काम के समय अधिकारी और कर्मचारी इधर-उधर घूमते रहते हैं. पूछने पर हमेशा जवाब मिलता है साहब मीटिंग में हैं. सबसे पहले इन्हें भी सबक सिखाने की आवश्यकता है.

यूरोप, अमेरिका व अन्य विकसित देशों में भ्रष्टाचार का नाम नहीं है. यहां ट्राम, बसों में कोई कंडैक्टर नहीं होता, वहां के लोग अपना कर्तव्य समझकर टिकिट लेते हैं. वह बिना टिकिट यात्रा करना न केवल पाप समझते हैं, बल्कि देश द्रोह समझते हैं. हमारे यहां मुसाफिर स्वयं टिकिट लेना नहीं चाहता या टिकिट चेकर को आधे पैसे देकर पूरा सफर करना चाहता है.

यहां जनता के लिए सरकार योजनाएं बनाती हैं, उसकी जानकारी लोगों को नहीं दीं जाती. राजकीय पार्टियों के दलाल या अधिकारी इसे रास्ते में ही हड़प लेते हैं.

एड. मो. सईद अहमद

प्रवक्ता – अ.भा. भ्रष्टाचार निर्मूलन समिति

राजकीय पार्टियां भी देश सेवा के लिए नहीं सत्ता का उपभोग करने के लिए काम करते हैं. जिसका वर्णन हमें सिर झुकाने के लिए काफी है.

ग्राम पंचायत से लोकसभा, राज्यसभा सभी ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है. हम देश को सुधारने के लिए अपना योगदान करें.

विकसित देश यूं ही विकसित नहीं हो गए. हमारा देश बिना कारण पिछड़ा नहीं है. हमारे यहां प्रकृति के सारे साधन हैं. पहाड़ हैं, जगंल हैं, नदियां हैं, समुद्र हैं. हर प्रकार के खनिज प्रचुर मात्रा में हैं. क्या नहीं है? बुद्धिजीवी हैं, खेत हैं, इन सब से बढ़कर गाय है.

वैज्ञानिक हैं, शिक्षण के लिए हजारों-लाखों संस्थाएं हैं, कारखानें हैं, एटेमिक विज्ञान है. सब है. फिर भी हम लाचार और आर्थिक गुलाम क्यों हैं? कारण एक ही है कि हम भ्रष्टाचारी हो गए. हर मनुष्य अपने आप को चतुर समझ कर गंदगी खा रहा है. देश का नाश कर अपना घर भरने में तुला हुआ है. गोहत्या का एक मुख्य कारण भ्रष्टाचार ही है. आईए हम नए भारत का निर्माण करें. जो विकसित हो, जो विश्व के जगद्गुरु की भूमिका निभाने में सक्षम होगा. इस आंदोलन के लिए अपना योगदान दीजिए.

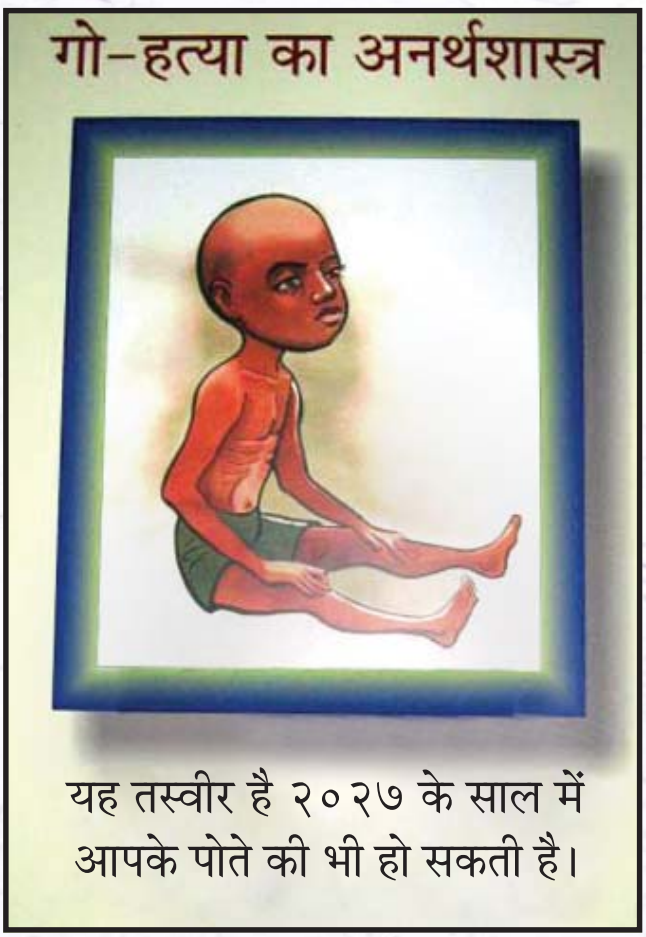

सौजन्य :

श्रीमती कृष्णाबाई कासरालीकर, नांदेड़
श्रीमती इंदुमती जवलेकर, नांदेड़
श्री गंगाधर नागनाथ चालिकवार, नांदेड़
श्रीमती शोभा हरकचंद काठेड़, औरंगाबाद
श्रीमती विमला टिवरीवाला, औरंगाबाद
श्री तुलसी भजनी मंडल, सांगली
श्रीमती वसुंधरा विजय कुलकर्णी, सांगली
श्री अनंत आगे, श्रीनिवास फायनांस, नांदेड़
सौ. शोभा बालाप्रसाद लोकमनवार

विश्व का सबसे बड़ा घोटाला

यह वह घोटाला है, जिसकी कभी जांच नहीं की गई. 'चलता है, चलता है' कहके हम अपनी आंखें मूंद लेते हैं अथवा उस रास्ते पर जाते ही नहीं. हां डाइनिंग टेबल पर बड़ी शान से नानवेज के नाम से लाशों के टुकड़े अपने धांसू पेट में ठूंस लेते हैं. आज हम जिस घोटाले की बात करने जा रहे हैं, वह हमारी दुनियां का सबसे बड़ा घोटाला है. इसमें अनंत धन राशि का अवैधानिक लेन-देन हो रहा है, अनंत जीवों की हत्या हो रही है और घोटालेबाज बड़ी शान से मूंछों पर ताव देकर सारे न्यायमूर्तियों, पुलिसकर्मियों और प्रबुद्ध नागरिकों को मूर्ख बना कर मस्ती से हवाई जहाजों और एयरकंडीशन गाड़ियों में घूम रहे हैं. आप इस महाघोटाले की तुलना किसी छोटे-मोटे घोटाले से करके, इसकी गरिमा को नष्ट मत कीजिए.

इस घोटाले में कसाई, जीव-हत्यारे, मांस-विक्रेता, पशु-विक्रेता और दुनियां की सभी सरकारें लिप्त हैं. मुसीबत यह है कि हम सब भी इस महाघोटाले में शामिल हैं. घोटाले की कमाई हम सब लोग खा रहे हैं. अधिकतर लोग इस महाघोटाले को महाघोटाला मानने से इंकार कर रहे हैं. खैर यह आपकी समझ है. शेर को आप शेर कहें या न कहें, कोई खास फर्क नहीं पड़ता. वह तो मौका पड़ते ही प्राणियों को फाड़ कर रख देता है. इसी प्रकार यह महा घोटाला हमारी दुनियां को तबाह कर रहा है. आप इस तबाही को जितनी जल्दी समझें उतना अच्छा होगा. हम इस घोटाले में शरीक न हो-ऐसी प्रार्थना प्रभु से करते रहते हैं. हम चाहते हैं कि इस महाघोटाले के प्रमुख सूत्रधारों को कठोरतम सजा दी जाए और विश्व की सभी न्यायमूर्तियां सभी जीवों को जीने का अधिकार प्रदान करें.

महाघोटाले की शुरुआत शताब्दियों पूर्व हुई थी. महात्मा बुद्ध,

प्रो. मदन मोहन बजाज
एवं डॉ. विजय राज सिंह
इन्टरनेशनल सांईटिफिक रिसर्च एंड वेलफेयर आरगेनाईजेशन

भगवान महावीर, विनोबा भावे, महात्मा गांधी, महर्षि दयानंद, महर्षि नेमीचंद जैन, JOHN ROBINS MICHAEL CLAPPER, MAXWELL LEE, TINA FOX SEGRID DE LEO, RYN BERRY, JEREMY RIFKIN आदि महान पुरुषों-महिलाओं ने इस महा घोटाले से बचने की सलाह दी और इंसान की बंद आंखों को खोला.

महा घोटाला है क्या ?

आज अकेले भारत में २ लाख ५ हजार कत्लखाने बन चुके हैं.

मछलियां पकड़ना, मारना, खाना, बेचना हमारे जीवन का समाज-स्वीकृत कार्य बन चुका है. चिकन को मारना, सुअरों की हत्या करना, गऊ-भैंसों के प्राण लेना, वन्य जीवों का शिकार करना, शोध और औषधियों के नाम पर लगभग सभी जीवों को तड़पा-तड़पा कर मारना-ये हमारे जीवन के अंग बन गए हैं. दिल्ली में सदर थाने के बिल्कुल सामने, कसाबपुरा क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है-उसे देख कर निष्ठुर से निष्ठुर व्यक्ति की आंखों से भी गंगा बह उठती है. मोटी-मोटी भैंसों को काटने जाते हमनें स्वयं देखा है. आप इस महाघोटाले को अवश्य देखें, सोचें और गहराई से सोचें कि क्या यह सब हमारे समाज को खोखला नहीं कर रहा है ?

यौन विकृतियों, हत्याओं, बलात्कारों और रोज की लूट-मार के पीछे इसी महाघोटाले का हाथ है.

भूकंपों, सुनामी, बाढ़ और सूखे के पीछे इस महाघोटाले का योगदान वैज्ञानिक सिद्ध करते रहे हैं. आईए हम सब इस महाघोटाले को बंद करने में योगदान दें.

व्यापार, चमड़ा, मांस, औषधि, शोध की आड़ में जघन्य हत्याएँ

मेरा निवेदन

- प्रत्येक घर में गाय हो।
- गाय रखने से बच्चों को निर्मल, विशुध्द दूध प्राप्त होगा। बच्चे बुध्दिमान होंगे।
- गाय के गोबर से सेंद्रिय खाद मिलेगी जिससे विष मुक्त अन्न,फल व सब्जियां प्राप्त होगी।
- गाय के बछडें खेती के काम आयेंगे जमीन उपजाऊ व प्रदूषण मुक्त होगी।
- गोमूत्र सेवन से परिवार असाध्य रोगों से बचा रहेगा।
- अगर आप किसी कारण वश गाय नहीं रख सकते तो गाय के उत्पादों का जैसे दूध, दही, घी, छाछ, गोमुत्र, गोबर व उसकी दवाइयों का उपयोग करें।
- परिवार में जन्म दिवसपर, पुण्यतिथिपर, शादी की साल गिरह पर, किसी खुशी के प्रसंगपर, त्योहार के दिन, प्रमुख धार्मिक पर्वोंपर किसी भी गो केन्द्र पर जाकर गायों को रोटी, गुड या दान - चारा देकर गो माता की सेवा करना न भुलें।

रतनलाल सी. बाफना

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी
भारतमाता

जनता दरबार
आपकी अदालत

प्रति माह किसी एक विषय पर आप की राय (ज्यादा से ज्यादा २०० शब्दों में) आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जाएगी.

आगामी अंक के लिए **'गोरक्षा में कठिनाइयां और उनके उपाय'** टाइप किया हुआ अपना नवीनतम फोटो के साथ भेजें.

पुरस्कार की राशि

(१) प्रथम : ३०००/- रु. + प्रमाण पत्र
(२) द्वितीय : २०००/- रु. + प्रमाण पत्र
(३) प्रोत्साहन पुरस्कार: १०००/- रु. + प्रमाण पत्र

पत्र व्यवहार पता : संपादक, तेजस्वी गोमाता ओजस्वी भारतमाता,
२४४/३१ लेबर कॉलोनी नांदेड़- ४३१६०२
E-mail Adress : tejaswigomata@yahoo.com
younusfarooqui@yahoo.com

नैसर्गिक साधनों तथा गाय का अनादर कहीं भारतमाता की भी यह दशा न कर दे।

केवीन कार्टर के इस फोटो को १९९४ का सर्वश्रेष्ठ फोटो का अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ है.
एक गिद्द भूखे बच्चे की मौत का इंतजार कर रहा है. इस दृश्य को चित्रित करने के पश्चात केवीन निराशा के गहरे अंधेरे में खो गए और तीन माह के बाद उन्होंने आत्महत्या कर ली.

लॉयनेस विमलारानी बाफना
अध्यक्ष

लॉयनेस सरला ए. मुनोत
सदस्य

तथा समस्त लॉयनेस परिवार औरंगाबाद – चिकलथाना 323-H2

लॉयनेस क्लब
औरंगाबाद–चिकलथाना

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी
भारतमाता

मार्गदर्शक समिति

स्वामी कैलाशानंद सरस्वती
वैदिक रिसर्च सेंटर, काठमांडू
नेपाल

संत बाबा बलविंदर सिंह
प्रमुख लंगर गुरुद्वारा साहब
सच्चे मानवता के पुजारी

त्यागमूर्ति श्री स्वामी जनार्दन देव
संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष
राष्ट्रीय गोरक्षा संघ

सच्चिदानंद जी शास्त्री
महंत संस्थान श्री जीयर स्वामी
मठ बालाजी मंदिर, नांदेड़

डॉ. बी.एन. पांडेय
महान स्वाधीनता सेनानी
सचिव:अनुवर्त समिति, दिल्ली
सचिव:अ.भा. स्वतंत्रता सेनानी संघ

गंगाप्रसाद अग्रवाल, बसमत
म.गांधीजी, आ. विनोबा भावे,
लोकनायक जयप्रकाश के
साथीदार

अक्षय जैन, मुंबई
लेखक, संपादक, गीतकार तथा
नेता स्वदेशी आंदोलन

पदमश्री मुजफ्फर हुसैन, मुंबई
प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार,
समाजसुधारक

पुरुषोत्तमलाल तोष्णीवाल
महामंत्री, कानपुर गोशाला
सोसाइटी, कानपुर

आर.सी. बाफना, जलगांव
संचालक, अहिंसा तीर्थ तथा
गोसेवा अनुसंधान केंद्र,
जलगांव

चौ. महेंद्रसिंह टोकस, दिल्ली
चौ. देशराम मेमोरियल गऊ
सेवा ट्रस्ट, नई दिल्ली

वीर डी.सी. गलाडा, हैदराबाद
उपाध्यक्ष, महावीर इंटनेशनल
(ॲपेक्स), एम.डी. गलाडा
पावर एंड टेलीकम्यूनिकेशन

ओमप्रकाश मसकरा, कोलकाता
लेखक, योग, आहार, वेद और
आयुर्वेदिक प्रचारक

सी.ए. जसराज श्री श्रीमल
अलकबीर विरोधी आंदोलन के
फाउंडर संयोजक

जैन रतन सुरेंद्र लुनिया
लॅन्डलॉर्ड, बिल्डर्स एंड
डेव्हलपर्स, हैदराबाद

लॉ. विमला राणी बाफना
अध्यक्षा, लॉयनेस क्लब
औरंगाबाद, चिखलठाणा

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी
भारतमाता

मार्गदर्शक समिति

केसरी चंदमेहता, मालेगांव
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय कृषि गो सेवा संघ

राजीव दीक्षित, वर्धा
राष्ट्रीय प्रवक्ता स्वदेशी आंदोलन

अण्णासाहब जाधव, सातारा
म. गांधी, आ. विनोबा भावे के साथीदार, सारे देश में गोरक्षा सत्याग्रह आयोजक

बहन मधु जोशी, मुंबई
समर्पित जीवन गौ सेविका
देवनार कत्लखाना बंद करने सत्याग्रह संयोजक

अबरार कुरैशी, मुंबई
चेयरमैन, पीपल हू केयर फॉर एनीमल, एनीमल वेल्फेयर ऑफिसर

जीनत कुरैशी, मुंबई
सचिव, एनीमल प्रोटेक्शन फोर्स

सुदर्शन ढंढारिया, कोलकाता
अध्यक्ष, सर्वोदय विचार परिषद, कोलकाता

जयराम भाई मेघजीभाई भोजानी, सूरत
हीरा व्यापारी, गो रक्षा के लिए जीवन समर्पित,

संजय बोहरा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
कार्यक्रम संयोजक, श्री कृष्णा गो शाला जीवरक्षा केंद्र

डॉ. मदन मोहन बजाज (वैज्ञानिक)
कुलाधिपति, कामधेनु विश्वविद्यापीठ, दिल्ली

डॉ. सैयद हामेद हाश्मी
प्राचार्य, कॉलेज ऑफ फुड टेक्नॉलॉजी एंड रिसर्च फॉउंडेशन, औरंगाबाद

प्रो. अब्दुल हई
फूड टेक्नॉलॉजिस्ट, डाइरेक्टर, महा रिसर्च लैबॉरेट्रिज, मुंबई

नवीनभाई ठक्कर
अध्यक्ष, विश्व हिंदू परिषद, नांदेड़

डॉ. सुभाष विश्वनाथराव हुरणे
अलकबीर कत्लखाना हटाओ आंदोलन नेता, नांदेड़

सी.ए.आनंद श्यामलाल काबरा
सचिव चार्टर्ड अकाउंटेंट एसोसिएशन,नांदेड़

दिलीप मोदी
संस्थापक श्री कृष्णमंदिर, नांदेड़
सामाजिक, धार्मिक कार्यकर्ता

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी
भारतमाता

मार्गदर्शक समिति

एड मो. सईद अहेमद
राष्ट्रीय प्रवक्ता
अखिल भारतीय भ्रष्टाचार
निर्मूलन समिति,थाना.

चरणसिंह ज्ञानी
नेशनल ऑब्जर्वर
अखिल भारतीय भ्रष्टाचार
निर्मूलन समिति, थाना.

प्रीति पौडवाल, भोपाल
राष्ट्रीय प्रवक्ता
स्वदेशी एवं स्वराज्य
आंदोलन

डॉ.विजय राज सिंह, दिल्ली
वैज्ञानिक, गोरक्षक तथा
अहिंसावादी

प्रा. राधेश्याम नथमलजी मुंदड़ा
शिक्षकरत्न, शिक्षारत्न,
संस्थापक सदस्य, शांतिधाम
सेवा प्रतिष्ठान, नांदेड़

डॉ.बी.सी.साजणे
नांदेड़ भूषण, समर्पित
अहिंसावादी जीवरक्षक
मानवता के सच्चे पुजारी

जयभगवान गोयल
संस्थापक राष्ट्रवादी शिवसेना
दिल्ली

मधुकांता दोशी (एम.ए.बी.एड)
जीवनभर अविवाहित
अहिंसावादी जीवरक्षक

दिलीपसिंह हजारी नांदेड़
अध्यक्ष : महाराष्ट्र राजपूत
महासंघ

ओमप्रकाश पोकर्णा
पूर्व महापौर, नांदेड़
वरिष्ठ काँग्रेस नेता

झुंमरलाल टावरी, भिलाई
गोरक्षा के लिए ४३बार जेल
गए, १३० आंदोलन का
नेतृत्व किया कई गोशालाओं
के संस्थापक

इजी. अविनाश नारायण पांढरीपांडे
नैडप विधि विशेषज्ञ, नैडप परिवार
गोबरधन सेवा, पुसद

इंजी. सहदेव भाटिया, रायपुर
गोरक्षा के लिए जीवन समर्पित
घर, व्यवसाय सब त्यागा

सी.ए.हर्षद लक्ष्मीचंद शहा
मेंबर जिला शांति कमेटी
विविध सम्मान प्राप्त

कु. कुसुम रुपारेल (मुंबई)
एनीमल वेल्फेयर
एक्टीविस्ट
मेंबर मेनका गांधी ट्रस्ट

राजेंद्र शर्मा
संपादक, नांदेड़ पोलखोल
अध्यक्ष, बहुभाषिक पत्रकार
संघ, नांदेड़

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी
भारतमाता

सलाहकार समिति

विजयालक्ष्मी काबरा
एक्स कार्पोरेटर, हैदराबाद
उपाध्यक्ष: करुणा इंटरनेशनल

वीरा सुरेखा प्रकाशचंद्र पाटणी
मारवाडी रत्न, झांसी की राणी,
इ. पुरस्कार प्राप्त

अरुणा आर. गुप्ता
अध्यक्ष : माथुर वैश्य, महिला
सेवा दल, हैदराबाद

छाया नेगांधी
एक्स प्रेसीडेंट, लॉयन क्लब,
सिंकदराबाद

डॉ. संजय पतंगे (एम.एस.)
पूर्व अध्यक्ष
इडिंयन मेडिकल एसोसियशन
नांदेड़

डॉ. राजेंद्र नथमलजी मुदंड़ा (एम.डी.)
हिंदी साहित्य सेवी, सामाजिक,
धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता
नांदेड़

दानशूर संजय मदनलाल भंडारी
गोरक्षक, अहिंसावादी सामाजिक
धार्मिक कार्यकर्ता, नांदेड़

वीरा संगीता भंडारी
डायरेक्टर, राहुल इंटरप्राइजेस
आहिंसावादी समाजसेविका

वीरा स्नेहालता गलाडा
चेयरपर्सन, महावीर
इंटरनेशनल, हैदराबाद

एकनाथ मामडे
वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता
नांदेड़

डॉ. हंसराज वैद्य (एम.डी.)
अध्यक्ष, इंडियन हेल्थ
आर्गनाइजेशन, नांदेड़

नरेश लालवाणी
अध्यक्ष, पूज्य सिंधी पंचायत
अध्यक्ष,संत कंवरराम ट्रस्ट,
नांदेड़

बालाजीसिंह हरिसिंह पटेल
सदस्य:गांधी राष्ट्रीय हिंदी
विद्यालय, शिक्षण संस्था नांदेड़

गुरुमीत सींग नवाब
वरिष्ठ शिवसेना कार्यकर्ता
नांदेड़

मुन्ना डहाळे
उप जिलाप्रमुख
शिवसेना, नांदेड़

डॉ. शोभा वाघमारे
राष्ट्रीय खिलाडी एवं वरिष्ठ
सामाजिक कार्यकर्ता, नांदेड़

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी भारतमाता

सलाहकार समिति

प्रकाश निहालानी
सचिव, पूज्य सिंधी पंचायत
सिनेट सदस्य, स्वरातीम, नांदेड.

राजेश रामेश्वरजी खांडील
डाइरेक्टर, राहुल इंटरप्राइजेस
गोरक्षक तथा गोपालक, नांदेड़

संतोष शर्मा (बी.ए.)
संचालक, कामधेनु
विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर.

भाऊ खैरनार, नासिक
विशेषज्ञ, जैविक खाद्य पदार्थ
गोपालक एवं गोरक्षक

रवींद्र विष्णुदास जाजू
वास्तु विशारद
अग्निहोत्र तथा गोसेवक,
अहमदनगर

प्रमोद चतुर्वेदी
समर्पित जीवन गोरक्षाक्षेत्र,
राजस्थान

सतीश यादव, हरियाणा
पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा तथा
गोशाला प्रबंधक

वसंतराव बाबाराव बारडकर
सेवानिवृत्त बिक्रीकर अधिकारी
प्रचारक गायत्री परिवार, नांदेड़

डॉ. पी.डी.जोशी पाटोदेकर
फॉउन्डर इंडियन रेडक्रास, नांदेड़
अध्यक्ष, परिवार प्रतिष्ठान, नांदेड़

सौ. अंजू जैन (एम.ए.)
अध्यक्षा: तेरा पंथी महिला
मंडल, हैदराबाद

महेश अग्रवाल
ए.पी. एनीमल वेल्फेयर बोर्ड,
हैदराबाद

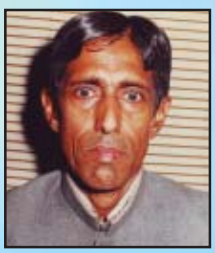

भागचंदजी सोमाणी
फिलाटेली मेंबर (अंतर्राष्ट्रीय)
गोरक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता
किशनगड़ राजस्थान

सुरजसिंह माला
(एम.ए.बी.एड.)
वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता
नांदेड़

श्रीपाल देशलहरा
ऑनररी एनीमल ऑफिसर
एनीमल बोर्ड ऑफ इंडिया
हैदराबाद

नम्रता बालाजी लाठकर
पार्षद म.न.पा., नांदेड़
गुटनेता पद, म.न.से., नांदेड़

अभय कुमार प्रेमसुख संचेती
किसान और गोपालक
वैद्यकीय कार्यकर्ता, औरंगाबाद

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी
भारतमाता

संरक्षक सदस्य

दुर्गा प्रसाद कन्हैयालाल जाजू
बिल्डर, सामाजिक, धार्मिक
कार्यकर्ता तथा गोरक्षक, नांदेड़

अतुल कांतिलाल लोटिया
सचिव श्री गुजराती समाज, सं.
महामंत्री व्यापारी महासंघ, नांदेड़

राजेंद्र मुक्कनवार
मार्केटिंग विशेषज्ञ
समाजसेवक तथा गोरक्षक,
नांदेड़

बालाजी पांचाल
मार्केटिंग विशेषज्ञ
समाजसेवक तथा गोरक्षक
नांदेड़

काजी मो.आसिफोद्दीन
संस्थापक अध्यक्ष, भारतमाता
गोरक्षण संस्था, परभणी

डॉ. मो. फेरोजोद्दीन सिद्दीकी
एम.वी.एस्सी., एम.बी.ए.
प्राणी मित्र तथा समाज सेवक
नागपुर

रफीक अहमद खान
संपादक दै. सुपर समाचार,
हिंगोली

जरीना तबस्सुम (बी.ए.)
शिक्षिका व समाजसेविका
पर्यावरण के लिए संकल्प
नांदेड़

संजय जैन, औरंगाबाद
म्यूचुअल फंड एवं
एल.आई.सी.एडवाइजर

शेखर गादेवार
एम.सी.ए.
परिवर्तन का संकल्प
नांदेड़

म. अमजदोद्दीन फारोखी
प्राध्यापक
(एफ.यू.जूनियर कॉलेज, नांदेड़)

डॉ. गिरीशसिंह पटेल
प्रधानाध्यापक
गांधी राष्ट्रीय हिंदी विद्यालय,
नांदेड़

घनश्यामजी मालीवाल
दांतीवाला एंड कंपनी
धार्मिक तथा गोरक्षक
नांदेड़

मो. अब्दुल अजीज
बी.ए.
सामाजिक कार्यकर्ता, परभणी

मोईनोद्दीन शेख
व्यापारी तथा सामाजिक
कार्यकर्ता, मुंबई

मो. झकी अहमद
व्यापारी, निसर्ग प्रेमी
नांदड़

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी भारतमाता

संरक्षक सदस्य

बालासाहेब जाधव
संस्थापक : हरि ओम मदद केंद्र
वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता,
परभणी

अनंत बाबाराव पाटील
उप. शहर संयोजक बजरंग दल,
नांदेड़ तथा गोरक्षक

रमेश राजा पारे
एन.आई.एस.
अंतर्राष्ट्रीय खिलाडी
शिवछत्रपति पुरस्कार प्राप्त

डॉ. म.अ.बसीर
पी.एच.डी.(केमिस्ट्री)
प्राध्यापक
यशवंत कॉलेज, नांदेड़

सईदा मुनव्वर खान, मुंबई
बी.एस.सी.बी.एड.
शिक्षणाधिकारी व सामाजिक
कार्यकर्ता

शाहिना तसनीम (बी.ए.)
परिवर्तन की इच्छुक
हैदराबाद

गजाला तरन्नुम बी.ए.
परिवर्तन की इच्छुक
हैदराबाद

महमुदा सुल्ताना खान
बी.एस.सी.,बी.एड.,
एल.एल.बी., एम.पी.एड.,
एन.आई.एस., राष्ट्रीय खिलाड़ी

मुखीत अहमद सिद्दीकी
बी.कॉम. एम.बी.ए.
सामाजिक कार्यकर्ता
नांदेड़

वाजेदुल हक
विद्यार्थी तथा सामाजिक
कार्यकर्ता, परभणी

विश्वंभर हरि शिंदे
अहिंसावादी, सामाजिक कार्यकर्ता
परिवर्तन का संकल्प, नांदेड़

एराज अर्शद बी.ए.
मार्केटिंग विशेषज्ञ, सामाजिक
कार्यकर्ता, नांदेड़

करणसिंह कल्याणसिंह परमार
प्लाटून कमांडर होम गार्ड
अध्यक्ष : क्षत्रीय समाज, नांदेड़

नीलेश प्रकाशचंदजी कुचेरिया
सचिव : भारतीय युवा जैन
संगठन, परभणी

दीपक माधवराव रोकड़े
गोपालक तथा समाजसेवक
जिंतूर, जिला परभणी

विशाल बडेरा
अहिंसावादी, सामाजिक
कार्यकर्ता, औरंगाबाद

मासिक
तेजस्वी गोमाता
ओजस्वी
भारतमाता

संरक्षक सदस्य

प्रशांत पोपशेटवार बी.ए.
अविवाहित रहकर जीवन
समर्पित गोरक्षा का संकल्प

लईक अहमद फारूखी
एम.कॉम.
अध्यक्ष, अल मुस्तफा वेल्फेयर
एन्ड मेडिकल फाउंडेशन
औरंगाबाद

वेंकटेश राजू सुलगेकर
गोप्रेमी राष्ट्रीय खिलाड़ी
नांदेड़

दिगंबर कसबे
समर्पित सामाजिक कार्यकर्ता
पर्यावरण प्रेमी, नांदेड़

खान शाहेदुल मेराज
बी.कॉम. डी.बी.एम.
सामाजिक कार्यकर्ता
नांदेड़

इ. वजाहत अली खान
बी.ई.
बिल्डर व सामाजिक कार्यकर्ता
हैदराबाद

नसीबुल हक नय्यर
मार्केटिंग मैनेजर
प्राणी मित्र, हैदराबाद

डॉ. पुरुषोत्तम आर.दाड़ (एम.डी.)
अध्यक्ष, गरुडा मित्र मंडल,
वैद्यकीय अधिकारी, संत बाबा
निधान सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल

प्रदीप मोदी
व्यवसायी तथा गोरक्षक
सामाजिक, धार्मिक कार्यकर्ता
नांदेड़

उमेश तातेड, औरंगाबाद
उद्योगपति तथा गोरक्षक

सौ. रमानी मूर्ति
यूनिसेफ अधिकारी
गोपालक गोप्रेमी, भुवनेश्वर

शरद बीडकर, नांदेड़
सेल्स डेवलपमेंट मैनेजर
किसान और गोपालक

एड. एच.आर. जाधव
योग प्राध्यापक, नंदीग्राम
बहुउद्देश्यीय विधिप्राधिकरण

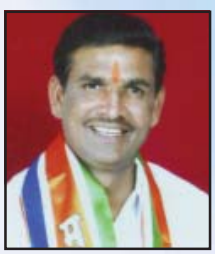

बालाजी गणेशराव लाठकर
जिला उपाध्यक्ष म.न.से.
नांदेड़

अंकिता अरुणराव अदवंत
गो प्रेमी तथा गोपालक
नांदेड़

बेलापुरे बी.एस., नांदेड़
पत्रकार एवं विशेष संवाददाता
तथा गोरक्षक

CMYK

CMYK

CMYK

CMYK

विश्व में तीन ही समाज हो सकते हैं,

एक – गाय का
आदर करनेवाला

दूसरा – गाय का
अनादर करनेवाला

तीसरा – नपुंसक

आप किस समाज से संबंध रखते हैं ?